# SWAMI VIVEKANAND UNIVERSITY,SIRONJA, SAGAR (M.P.)

# SYLLABUS

**For**

**Bachelor of Education (D.EL.Ed.)**

**Course Code : D.EL.ED.**


Department of Education

Faculty of Education & Physical Education


| | | |
|---|---|---|
| Duration of Course | : | 2 Year |
| Examination Mode | : | Yearly |
| Examination System | : | Non Grading |


Swami Vivekanand University, Sironja Sagar (M.P.)2015-2016

# Swami Vivekanand University, Sagar(M.P.)

**Subject Name:**

Ckpiu ,oa cky fodkl

**(D.EL.ED.-101)**

| Course code | Title of the Paper | Distribution of Marks | | | | | | | | Grand Total (i= d+h) | Duration of Exam |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Theory | | MST (c) | Total (d = a+c) | Practical | | TW (g) | Total (h= e+g ) | | |
| | | Max (a) | Min (b) | | | Max (e) | Min (f) | | | | |
| D.EL.ED-101 | बचपन एवं बाल विकास | 70 | 24 | 30 | 100 | - | - | - | - | 100 | 3 Hours |

**UNIT- I** **Marks:14**

बचपन **Childhood)**

बचपन एक आनंददायी अवस्था के रूप में, विभिन्न आर्थिक परिस्थितियों में बचपन एवं वयस्क,संस्कृति, भारतीय संदर्भ में बहु–बचपन। रवीन्द्रनाथ टैगोर, महात्मा गाँधी, रूसो तथा फ्रोबेल के बचपन पर विचार। वैश्वीकरण एवं उदारीकरण का बचपन पर प्रभाव। भारतीय संदर्भ में भिन्न–भिन्न परिस्थितियों में बचपन का स्वरूप (समझ)। एकल एवं संयुक्त परिवार में बचपन।

**UNIT- II** **Marks:14**

बालविकास के विभिन्न पक्ष ( **Different domain of child development** )

वृद्धि एवं विकास की अवधारणा, विकास की विभिन्न अवस्थाएँ एवं विभिन्न अवस्थाओं में संज्ञानात्मक विकास। मानवतावादी मनोवैज्ञानिकों के मत (मैसलो के विशेष संदर्भ में) एवं विकासात्मक सिद्धांत। सतत् एवं जीवन पर्यंत समग्र विकास। विकास के अध्ययन में Enduring Themes एवं बहुआयामी विकास। बाल विकास में वंशानुक्रम और वातावरण का प्रभाव एवं अन्तःक्रिया। बच्चों से संबंधित आंकड़ों के संकलन की विभिन्न विधियाँ – स्वाभाविक अवलोकन, वृत्तिक अध्ययन, साक्षात्कार, विश्लेषणात्मक/चिन्तनात्मक प्रतिक्रिया लेखन, एनेक्डोटल। समावेशन : अवधारणा एवं संक्षिप्त ऐतिहासिक पृष्ठभूमि।

**UNIT- III** **Marks:14**

शारीरिक एवं गामक विकास **(Physical and Motar Development)**

वृद्धि एवं परिपक्वता। शैशवावस्था, बाल्यावस्था एवं किशोरावस्था में गामक कौशलों का विकास। शारीरिक गामक विकास के स्तर एवं विकास के लिये अवसर प्रदान करने में शिक्षकों एवं अभिभावकों की भूमिका। शारीरिक वृद्धि को प्रभावित करने वाले पर्यावरणीय कारक। पोषण एवं कुपोषण :– शारीरिक विकास में विभिन्न पोषक तत्वों की उपयोगिता एवं कार्य।

**UNIT- IV** **Marks:14**

सामाजिक एवं संवेगात्मक विकास **(Social and Emotional Development)**

विकास को प्रभावित करने वाले सामाजिक–सांस्कृतिक कारक। शैशवावस्था, बाल्यावस्था एवं किशोरावस्था में संवेगात्मक विकास। समाजीकरण में लिंगभेद का प्रभाव एवं सामाजिक सिद्धांत। जेण्डर (लिंग) अर्थ, विकास, प्रभावी कारक। संवेगों की बुनियादी समझ, संवेगों के प्रकार्य।

**UNIT- V** **Marks:14**

## बच्चों का समाजीकरण (Socialization of Child)

समाजीकरण की अवधारणा। परिवार में बच्चों का लालन–पालन तथा बड़ों एवं बच्चों के आपसी संबंध। झूलाघर, अनाथालय, बालवाड़ी, आंगनवाड़ी, आवासीय विद्यालय का बच्चों के समग्र विकास मेंयोगदान। मित्र मण्डली, विद्यालय संस्कृति, शिक्षकों के साथ संबंध, शिक्षक की अपेक्षाओं का बालक की उपलब्धि पर प्रभाव। विपरीत लिंग से मित्रता का बच्चों पर प्रभाव, प्रतियोगिता एवं सहयोग, स्वस्थ स्पर्धा एवं द्वंद्व, आक्रामकता, बाल प्रताड़ना, पारिवारिक मनमुटाव आदि का प्रभाव। समाजीकरण में सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक विभिन्नता, समावेशन में अनुप्रयोग (विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के विशेष संदर्भ में)। समाजीकरण में शिक्षक की भूमिका।

## सत्रगत् कार्य (Assignments)

किसी एक समस्यात्मक बालक की केस स्टडी कर रिपोर्ट तैयार करना (जिद्दी, स्कूल से भागने वाले, झगड़ालू बच्चे, अनियमित उपस्थिति वाले, गृह कार्य न करने वाले बच्चे ) । बाल विकास की विभिन्न अवस्थाओं पर आधारित चार्ट बनाना । किसी एक विशेष आवश्यकता वाले बालक की केस स्टडी कर रिपोर्ट बनाना (दृष्टिबाधित, श्रवण बाधित,अस्थिबाधित, मनोरोगी बालक)। जिले की किसी एक झुग्गी बस्ती/वंचित समूह की साक्षरता रिपोर्ट बनाना । स्थानीय स्तर पर अनाथालय, झूलाघर, बालवाड़ी, आंगनवाड़ी झुग्गी झोपड़ी में से किसी एक का सर्वेक्षण कर प्रतिवेदन प्रस्तुत करना । शारीरिक विकास में विभिन्न पोषक तत्वों की कमी से होने वाले रोग एवं उनका निवारण लिखो। समाजमिति विधि द्वारा किन्हीं दस बच्चों पर मित्रता के प्रभाव की रिपोर्ट तैयार करना । किन्हीं दो एकांगी एवं किन्हीं दो संयुक्त परिवारों की पृष्ठभूमि में बालक के समाजीकरण पर प्रभाव का आलेख तैयार करना ।

## ikB;Øe vUrj.k dh fof/k;k (Mode of Transaction)

अवधारणा की समझ के लिए कक्षागत चर्चाएं करवाई जाएँगी। शोधपत्र/पाठ्यवस्तु का समीक्षात्मक रुप से अध्ययन करवाया जाएगा। मुद्दों एवं संदर्भों को सत्रगत कार्य के समय व्यक्तिगत या समूहों में करवाया जाएगा। सैद्धांतिक और प्रायोगिक गतिविधियाँ/अभ्यास/खोज/विश्लेषण/अवलोकन करना तत्पश्चात संयुक्त रुप से अर्थ निकालना और आंकड़ों को व्यवस्थित करना।

## संदर्भ ग्रंथ (Bibliography)

बिस्ट, आभारानी (प्रथम संस्करण), बाल मनोविज्ञान, आगरा, विनोद पुस्तक मंडल। जीत, योगेन्द्र (प्रथम संस्करण), बाल मनोविज्ञान, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर। माथुर, एस. एस. (द्वितीय संस्करण), शिक्षा मनोविज्ञान, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर। पाठक, पी. डी. (चालीसवाँ संस्करण), शिक्षा मनोविज्ञान, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर। पाण्डेय, रामशकल ( तृतीय संस्करण), शिक्षा मनोविज्ञान, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर। वर्मा, प्रीति (प्रथम संस्करण), बाल मनोविज्ञान, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर। जॉन होल्ट– बच्चे असफल क्यों होते हैं ? एकलव्य प्रकाशन, भोपाल। राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल द्वारा कक्षागत प्रक्रियाओं पर विकसित सामग्री। राज्य शिक्षा केन्द्र की बेवसाइट ssa.mp gov.in. एज्यूकेशन पोर्टल www.mp.gov.in/education portal. बाल विकास– डॉ. ओ.पी.सिंह। छात्र का विकास एवं शिक्षण– डॉ. आर.ए.शर्मा। बाल विकास एवं बाल मनोविज्ञान– प्रो. सुरेश भटनागर। Developmental Psychology- H.E. Sasaswati T.S.(Ed) (1999) Culture Socialigation & Human Development, Theory Research & Applications in india, Sage Publications. Chapter 9:Physical Development in Middle Childhood. Mukunda, K.V.(2009) Chapter is Child Development,79-96.s . Post-Colonial Indian Childhood, Sharda Balgopal

# Swami Vivekanand University, Sagar(M.P.)

**Subject Name:**

समसामयिक भारतीय समाज में शिक्षा

**(D.EL.ED.-102)**

| Course code | Title of the Paper | Distribution of Marks | | | | | | | | Grand Total (i= d+h) | Duration of Exam |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Theory | | MST (c) | Total (d = a+c) | Practical | | TW (g) | Total (h= e+g ) | | |
| | | Max (a) | Min (b) | | | Max (e) | Min (f) | | | | |
| D.EL.ED-102 | समसामयिक भारतीय समाज में शिक्षा | 70 | 24 | 30 | 100 | - | - | - | - | 100 | 3 Hours |

**UNIT- I** **Marks:14**

प्रारंभिक शिक्षा और भारतीय संविधान **(Elementary Education andConstitution of India)**

भारत में स्वतंत्रता पूर्व एवं पश्चात प्रारंभिक शिक्षा । भारतीय संविधान की प्रस्तावना, नीति निर्देशक तत्व एवं प्रारंभिक शिक्षा के संवैधानिक प्रावधान। भारतीय समाज में विविधता– रंग रुप, संस्कृति, भाषा, जाति, जेण्डर एवं विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए शिक्षा की नीतियाँ एवं संवैधानिक प्रावधान।

भारतीय संविधान में समता एवं न्याय– विभिन्न शालेय, तंत्र निःशुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009, मध्यप्रदेश नियम 2011।

**UNIT- II** **Marks:14**

भारतीय लोकतंत्र में शिक्षा **(Education in Indian Democracy)**

लोकतंत्र के लिए शिक्षा,नागरिकों के मौलिक अधिकार एवं कर्त्तव्य। राष्ट्रीय शिक्षा नीतियों में प्रारंभिक शिक्षा हेतु अनुशंसाएँ उनका क्रियान्वयन एवं प्रभाव–राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968 (National Policy Statement of Education 1968), राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986, प्रोग्राम ऑफ एक्शन 1992 (Programme of Action, POA 1992), राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रुपरेखा–2005,शिक्षा में विकेंद्रीकरण–73 वां एवं 74 वां सवंधिान संशोधन, म.प्र. पंचायत राज अधिनियम 1993, जनशिक्षा अधिनियम 2002, म.प्र. पंचायत एवं ग्राम–स्वराज अधिनियम 2001 के प्रमुख प्रावधान। केन्द्रीय एवं राज्य स्तरीय शैक्षिक संरचना – उद्देश्य, कार्य प्रणाली एवं उपयोगिता।

**UNIT- III** **Marks:14**

भारतीय अर्थ व्यवस्था और शिक्षा **(Indian Economy and Education)**

सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक वातावरण एवं शैक्षिक विकास की धारणाएँ और प्रभाव । भूमंडलीकरण, उदारीकरण एवं निजीकरण का शिक्षा पर प्रभाव– व्यवस्थाएँ, मुद्दे एवं चुनौतियाँ। कृषि आधारित अर्थ व्यवस्था एवं शिक्षा –(निरक्षरता, बाल मजदूरी, कृषि मजदूर, भूमिहीन कृषक, भू–स्वामी कृषक, कृषि आधारित उत्पाद, बाजार एवं ऋण व्यवस्था।) आर्थिक विकास में शिक्षा की भूमिका।

**UNIT- IV** **Marks:14**

शैक्षिक विकास एवं चुनौतियाँ **(Educational Development and Challenges)**

प्रारंभिक शिक्षा में गुणवत्ता की चुनौतियाँ : नामांकन, ठहराव और शैक्षिक उपलब्धि । शालाओं में शिक्षण की चुनौतियाँ : बहुकक्षा एवं बहुस्तरीय (MGML) शिक्षण। म.प्र. में विभिन्न शैक्षिक कार्यक्रम ऑपरेशन ब्लैक बोर्ड (OBB) जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम (DPEP) सर्व शिक्षा अभियान (SSA), प्रारंभिक स्तर की बालिकाओं के लिए शिक्षा का राष्ट्रीय कार्यक्रम (NPEGEl) कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय (KGBV), गतिविधि आधारित शिक्षण (ABL) सक्रिय अधिगम प्रविधि ;।स्डद्ध,– अवधारणा, उद्देश्य, विशेषताएँ एवं कार्यक्रम। सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन;ब्ब्म्द्ध की आवश्यकता, अवधारणा, विशेषताएँ एवं क्रियान्वयन। राष्ट्रीय एकता का अर्थ, प्रभावित करने वाले

कारक, शिक्षक एवं शिक्षण संस्थाओं की भूमिका। अंतर्राष्ट्रीय सद्‌भाव हेतु यूनिसेफ ;न्छप्ब्म्थ्द्धए यूनेस्को ;न्छम्ैब्व्द्धएविश्व स्वास्थ्य संगठन ॅ;भ्व्द्ध की भूमिका ।

**UNIT- V** **Marks:14**

सामाजिक परिवर्तन एवं स्तरीकरण **(Social Change and Social Stratification)**

सामाजिक परिवर्तन- अर्थ प्रकार एवं विशेषताएँ। सामाजिक स्तरीकरण- अर्थ और आधार । सामाजिक स्तरीकरण संबंधी अवधारणाएँ- बहिष्कार, विषमताएँ, भेदभाव ,शोषण और आरक्षण आदि ।

**सत्रगत कार्य**

समसामयिक भारतीय समाज में शैक्षिक चुनौतियों के संदर्भ में नियत कार्य एवं प्रायोजना कार्य- कुल तीन कार्य किए जाने हैं। प्रत्येक खंड में से एक कार्य अनिवार्य है।

खंड ‘अ’ नियत कार्य-( Assignments )

राष्ट्रीय शिक्षा नीति १९८६ में प्रारंभिक शिक्षा हेतु की अनुशंसाओं की सूची बनाइए। प्रारंभिक शिक्षा के क्षेत्र राष्ट्रीय शिक्षा नीति १९८६ के पूर्व और पश्चात हुए शालेय तंत्र में बदलाव का तुलनात्मक स्थिति का अध्ययन कीजिए। सर्व शिक्षा अभियान अंतर्गत संचालित विभिन्न योजनाओं की सूची बनाइए। किसी एक योजना के मूलभूत लक्ष्य, उद्देश्य एवं क्रियान्वयन की प्रक्रिया लिखिए। बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम २००९ में कमजोर वर्ग एवं वंचित समूह हेतु शिक्षा के प्रावधानों एवं शैक्षिक विकास पर इनके प्रभाव लिखिए। शिक्षा का अधिकार लागू होने के पश्चात आपके क्षेत्र में हुए सामाजिक बदलाव पर आलेख तैयार कीजिए। अपने जिले की विभागीय संरचना को स्पष्ट करते हुए फ्लोचार्ट बनाइए। आर्थिक विकास में प्रारंभिक शिक्षा की भूमिका की तर्क युक्त विवेचना कीजिए। अपनी शाला में संवैधानिक प्रावधान (त्ज्म् २००९) की धारा १९ के तहत मानक एवं मापदंडों के अनुरूप शालेय संसाधनों की समीक्षा कीजिए। अपने क्षेत्र में अल्पसंखकों/सुविधावंचित बच्चों हेतु संचालित विभिन्न शैक्षणिक संस्थाओं की सूची बनाते हुए किसी एक संस्था के कार्य, प्रक्रिया एवं उपलब्धि पर आलेख तैयार कीजिए। अपने ग्राम के टम्त् में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की पहचान, प्रवेश एवं उन्हें प्राप्त सुविधाओं की स्थिति पर आलेख तैयार कीजिए। किन्ही ५ प्राथमिक शालाओं में राष्ट्रीय एकता विकास के लिए बच्चों हेतु विभिन्न गतिविधियों की सूची बनाइए एवं किसी एक गतिविधि के आयोजन की सम्पूर्ण प्रक्रिया लिखिए। ।ठस् अथवा ।स्ड शिक्षण पद्धतियों के क्रियान्वयन में आने वाली व्यावहारिक कठिनाइयों की सूची बनाइए एवं इनके निराकरण के सुझाव लिखिए। शाला में उपलब्ध बाल पुस्तकालय/विज्ञान/गणित किट आदि के माध्यम से बच्चों के बेहतर सीखने- सिखाने की योजना तैयार कीजिए। अपनी शाला हेतु किसी एक विषय में बहुकक्षा शिक्षण/बहुस्तरीय शिक्षण हेतु कार्य योजना बनाइए।

खंड ‘ब‘ प्रोजेक्ट कार्य-( Project Work )

अपने ग्राम/वार्ड के २० परिवारों का सर्वेक्षण कर ग्राम शिक्षा पंजी तैयार कीजिए। अपने ग्राम/वार्ड के ६ से १४ आयु वर्ग के अनुसूचित जाति, जनजाति एवं अल्पसंख्यक छात्रों की जनसंख्या, वर्ग व शिक्षा की जानकारी एकत्र कीजिए। अपने ग्राम/वार्ड के सामाजिक, आर्थिक रुप से पिछडे १० परिवारों के ६ से १४ आयु वर्ग के बच्चों की शैक्षिक कठिनाइयों की सूची बनाइए एवं इनकी शैक्षिक उपलब्धि बढ़ाने के लिए कार्य योजना तैयार कीजिए। आपके क्षेत्र/जिले में विशेष समूह के बच्चों के लिए संचालित विभिन्न योजनाओं में से किसी एक योजना के प्रभाव का अध्ययन कीजिए (किन्हीं ५ बच्चों/पालकों के साक्षात्कार के माध्यम से)। ABL पर आधारित दो शिक्षण सहायक सामग्री (TLM) का निर्माण कीजिए। ALM पर आधारित दो शिक्षण सहायक सामग्री (TLM) का निर्माण कीजिए। विद्यालय के बच्चों में राष्ट्रीय एकता विकसित करने के लिए विभिन्न गतिविधियों की सूची बनाइए एवं इसका त्रैमासिक केलेण्डर तैयार कीजिए। शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के संदर्भ में कमजोर एवं वंचित समूह बच्चों के प्रवेश प्रक्रिया का किन्हींदो विद्यालयों में जाकर अध्ययन कीजिए। (किन्हीं 5-5 बच्चे एवं उनके पालक के साक्षात्कार के माध्यम से)। आपके क्षेत्र के प्रथम पीढ़ी के शिक्षा प्राप्त करने वाले परिवार एवं शिक्षित परिवारों में सामाजिक अंधविश्वास/कुरीतियों की स्थितियों की तुलना कीजिए। (किन्हीं 5 परिवारों के संदर्भ में) अपने क्षेत्र के पलायन करने वाले परिवारों के शाला जाने योग्य बच्चों की जानकारी एकत्रित कीजिए एवं उनके शैक्षिक विकास हेतु किए गए प्रयासों की जानकारी एकत्र कीजिए।

## पाठ्यक्रम की अंतरण की विधियाँ (Mode of Transaction½

छात्राध्यापकों को चर्चाओं, डाक्यूमेंटरी फिल्म तथा क्षेत्र आधारित प्रायोजनाओं से जोड़ा जाएगा। विभिन्न प्रकार के लेख, नीतिगत अभिलेख पाठ्यवस्तु डाक्यूमेंटरी, फिल्म का गहनता एवं समीक्षात्मक रुप से अध्ययन करवाया जाएगा। छात्राध्यापकों के समूह में क्षेत्र आधारित प्रायोजनाओं को करना, विश्लेषण करना और निष्कर्ष तक पहुंचना। अपने क्षेत्र की पलायन करने वाली;डपहतंजमकद्ध जातियों की जानकारी (क्षेत्र, वर्ग एवं शैक्षिक स्थिति के आधार पर) एकत्रित कर उनके बच्चों की शैक्षिक स्थितियों को जानना।

## संदर्भ ग्रंथों की सूची (Bibliography)

राज्य शिक्षा केन्द्र द्वारा सर्व शिक्षा अभियान अतंर्गत प्रकाशित निर्देश एवं पाठ्य सामग्री। मानव संसाधन विकास मंत्रालय (प्रारंभिक शिक्षा एवं साक्षरता विभाग) भारत सरकार द्वारा प्रकाशित सामग्री। जनशिक्षा अधिनियम २००२ और जनशिक्षा नियम २००३। बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम २००९ एवं मध्य प्रदेश नियम २०११। राष्ट्रीय शिक्षा नीति १९६८ एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति १९८६ का दस्तावेज। प्राथमिक शिक्षक एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित। एन.सी.टी.ई./एन.सी.ई.आर.टी. एवं एन.यू.ई.पी.ए. नई दिल्ली द्वारा प्रारंभिक शिक्षा संबंधी प्रकाशन। शैक्षिक पलाश - मध्य प्रदेश शिक्षक प्रशिक्षण मण्डल द्वारा प्रकाशित। शिक्षा के सिद्धांत - पाठक एवं त्यागी। शिक्षा के दार्शनिक एवं समाशास्त्रीय आधार - डॉ सरोज सक्सेना। शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धांत - एन.आर.स्वरूप सक्सेना। शिक्षा की दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय पृष्ठभूमि - रामशकल पाण्डेय। शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धांत - रमन बिहारी लाल। सामाजिक परिवर्तन एवं शिक्षा - उमराव सिंह चौधरी। शिक्षा के दार्शनिक, ऐतिहासिक और समाजशास्त्रीय आधार - एस.पी.चौबे। शिक्षा का समाज शास्त्र - चन्द्रा एवं वर्मा। शिक्षा दर्शन - आर.एन. शर्मा। फाउण्डेशन ऑफ एज्यूकेशन - एस. भट्टाचार्य। विकासोन्मुख भारतीय समाज में शिक्षा तथा शिक्षक की भूमिका - मंजरी सिन्हा व डॉ आई०एम०सिन्धु आगरा पब्लिकेशन आगरा -२। विकासोन्मुख भारतीय समाज में शिक्षा तथा शिक्षक की भूमिका - श्रीमती निर्मला गुप्ता व श्रीमती अमृता गुप्ता साहित्य प्रकाश आगरा। विकासोन्मुख भारतीय समाज में शिक्षा - राजस्थान हिन्दी अकादमी द्वारा प्रकाशित। इन्टरनेट से शैक्षणिक क्षेत्र की विभिन्न संस्थाओं की वेबसाइट।

# Swami Vivekanand University, Sagar(M.P.)

## शिक्षा, समाज, पाठ्यचर्या और शिक्षार्थी
## (D.EL.ED.-103)

| Course code | Title of the Paper | Distribution of Marks | | | | | | | | Grand Total (i= d+h) | Duration of Exam |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Theory | | MST (c) | Total (d = a+c) | Practical | | TW (g) | Total (h= e+g ) | | |
| | | Max (a) | Min (b) | | | Max (e) | Min (f) | | | | |
| D.EL.ED-103 | शिक्षा, समाज, पाठ्यचर्या और शिक्षार्थी | 70 | 24 | 30 | 100 | - | - | - | - | 100 | 3 Hours |

**UNIT- I** **Marks:14**

शिक्षा की दार्शनिक समझ **(Philosophical Understanding of Education)**

मानव समाज में शिक्षा की प्रकृति एवं आवश्यकताओं का अध्ययन। विद्यालयीन शिक्षा एवं शिक्षा में संबंध तथा मानव समाज की विभिन्न शैक्षिक प्रक्रियाओं की खोज करना। शिक्षा एवं विद्यालयीन शिक्षा विषयक विभिन्न पाश्चात्य, भारतीय विचारकों एवं शिक्षा शास्त्रियों के दृष्टि कोण का अध्ययन-रूसो, मांटेसरी, जॉन ड्यूई, गाँधी, टेगौर, गिजुभाई एवं विवेकानन्द। मानव प्रकृति, समाज, अधिगम एवं शिक्षा के उद्देश्य विषयक बुनियादी मान्यताओं को समझना।

**UNIT- II** **Marks:14**

शिक्षा, समाज और नीतियाँ **(Education, Society and Policies)** :-

स्वतंत्रता पूर्व भारत में प्रारंभिक शिक्षा की प्रमुख विशेषताएं। भारत की समसामयिक शिक्षा की स्थिति- स्वतंत्रता के बाद शिक्षा में आए बदलाव। धर्म, जाति, वर्ग और लिंग आधारित चुनौतियों के समाधान में शिक्षा की भूमिका। शिक्षा का राज नैतिक स्वरूप-प्रजातांत्रिक, समाजवादी एवं धर्म निरपेक्ष। शिक्षक और समाज-शिक्षक की समाज में स्थिति एवं शिक्षक की भूमिका का समालोचनात्मक मूल्यांकन।

**UNIT- III** **Marks:14**

शिक्षा का लोकव्यापीकरण **(Universlisation of Education)** :-

प्रारंभिक शिक्षा के लोकव्यापी करण की अवधारणा। सबके लिये शिक्षा-उद्देश्य, नीतियाँ, क्रियान्वयन एवं समस्याएँ। जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम (DPEP), सर्व शिक्षा अभियान (SSAद्ध-नीतियाँ, क्रियान्वयन एवं प्रभाव। समान स्कूल प्रणाली (Common schooling system), पड़ोसी स्कूल।

**UNIT- IV** **Marks:14**

अधिगम, अधिगमकर्ता एवं शिक्षण **(Learning, Learner and Teaching)**

अधिगम-अवधारणा एवं प्रकृति। अधिगम, ज्ञान एवं कौशल-सीखने एवं सिखाने के विभिन्न तरीके। शिक्षण का अर्थ,सीखने की प्रक्रिया एवं शिक्षार्थी से इस का संबंध। समाजीकरण और अधिगम-शिक्षार्थी की पहचान का निर्धारित करने वाले प्रभावों एवं कारणों की समझ। शिक्षार्थी का संदर्भ-विभिन्न सामाजिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक परिवेश में स्थित शिक्षार्थी। बचपन की अवधारणा-बचपन की सार्वभौमिक अवधारणा का समालोचनात्मक परीक्षण।

**UNIT- V** **Marks:14**

## ज्ञान और पाठ्यचर्या ( **Knowledge and Curriculum** )

बालक के ज्ञान का सृजन-गतिविधि एवं अनुभव के माध्यम से ज्ञानार्जन। ज्ञान का स्वरूप और बालक द्वारा ज्ञान का सृजन। ज्ञान के स्त्रोत, ज्ञान के प्रकार, और उनकी वैधता। ज्ञान और शक्ति संबंध -पाठ्यचर्या एवं पाठयपुस्तकों में विभिन्न सामाजिक समूहों के ज्ञान को समावेशित कर प्रतिनिधित्व प्रदान करना। पाठ्यचर्या चयन एवं निर्माण हेतु मापदंड एवं प्रक्रियाएँ।

## सत्रगत कार्य (**Assignement**)

छात्राध्यापकों को शिक्षा सत्र में, सत्रगत कार्य के अंतर्गत एक प्रोजेक्ट कार्य अनिवार्यतः करना होगा।
यह प्रोजेक्ट छात्राध्यापकों के अवलोकन, कक्षागत विचार-विमर्श, सहभागिता एवं क्षेत्र परीक्षण को प्रदर्शित करने वाला होगा। सुझावात्मक क्षेत्र :- किसी एक भारतीय शिक्षा शास्त्री एवं एक पाश्चात्य शिक्षा शास्त्री के शिक्षा संबंधी विचारों का समीक्षात्मक अध्ययन कीजिए। स्वतंत्रता पूर्व भारत में शालेय शिक्षा की स्थिति की विवेचना कीजिए। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत वर्ष में शिक्षा क्षेत्र में आए बदलावों का विवरण दीजिए। अपने जिले मे ंसर्व शिक्षा अभियान के तहत संचालित किन्हीं दो कार्य क्रमों के प्रभावों पर एक प्रति वेदन तैयार कीजिए। किसी एक बसाहट का सर्वेक्षण कर विभिन्न सामाजिक समूहों की साक्षरता एवं शिक्षा की स्थिति एवं वर्तमान चुनौतियों पर आलेख तैयार कीजिए।

## पाठ्यक्रम अंतरण की विधियाँ **(Mode of Transaction)**

छात्राध्यापकों को बातचीत और चर्चाओं में ज्यादा से ज्यादा शामिल किया जाएगा, जिससे कि परंपरागत व्याख्यान विधि को कम से कम किया जा सकें। अध्यापन के दौरान छात्राध्यापको ंको से मिनार, चर्चा, फिल्म एप्रेजल, समूह कार्य, क्षेत्र कार्य, प्रायोजना ;च्तवरमबजद्ध, विभिन्न प्रकार के लेखो ंका अध्ययन और नीतिगत दस्तावेजों का अध्ययन कराया जाएगा। सामाजिक, राजनीतिक, ऐतिहासिक संदर्भो को ध्यान में रखते हुए इन इकाईयों का अध्ययन किया जाना हैं। अध्यापन के दौरान सभी इकाईयों का अंर्तसबंध उभारा जाएगा।

## संदर्भ ग्रंथों की सूची **(Bibliography)**

गिजु भाई बधे का (२००१) -बाल शिक्षण और शिक्षक। एस. शुक्ला एवं कृष्ण कुमार-शिक्षा का समाज शास्त्रीय संदर्भ-ग्रंथ शिल्पी। जॉन ड्यूई (२००६) -स्कूल और समाज-आकार प्रकाशन चंडीगढ। जे. कृष्ण मूर्ति (२००६) -शिक्षा पर कृष्ण मूर्ति के विचार- कृष्ण मूर्ति फाउंडेशन, वाराणसी। रवींद्रनाथ ठाकुर (२००४) -रवीन्द्रनाथ का शिक्षा दर्शन-चेप्टर.-१ एवं ७ -ग्रंथ शिल्पी। कृष्ण कुमार (२००७) -शिक्षा और संस्कृति। पाउलेफ्रेरे-उत्पीडितों का शिक्षा शास्त्र ग्रंथ शिल्पी। रोहित धनकर-शिक्षा और समाज, आधार प्रकाशन,चंडीगढ.। एन. सी. ई. आर. टी-राष्ट्रीय पाठ्यचर्या के आधार पत्र : १. शिक्षा के लक्ष्य, २. पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें। छत्तीसगढ़ डी. एड. पाठ्यक्रम प्रथम वर्ष-ज्ञान, शिक्षा क्रम एवं शिक्षा शास्त्र चेप्टर-२,५ एवं ६,

# Swami Vivekanand University, Sagar(M.P.)

## स्वयं की पहचान
## (D.EL.ED.-104)

| Course code | Title of the Paper | Distribution of Marks | | | | | | | | Grand Total (i= d+h) | Duration of Exam |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Theory | | MST (c) | Total (d = a+c) | Practical | | TW (g) | Total (h= e+g ) | | |
| | | Max (a) | Min (b) | | | Max (e) | Min (f) | | | | |
| D.EL.ED-104 | Lo;a dh igpku | 35 | 12 | 15 | 50 | - | - | - | - | 50 | 3 Hours |

**UNIT- I** **Marks:12**

स्वयं की क्षमता की खोज- आत्मावलोकन अभ्यास द्वारा स्वयं की क्षमताओं एवं कमजोरियों/सीमाओं को समझना। स्वयं के द्वारा किए गए कार्यों की जिम्मेदारी लेना। आत्म-सम्मान बोध तथा भावनात्मक एवं संवेगात्मक एकीकरण द्वारा सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास करना। स्वयं के विकास हेतु स्वतंत्रता और अनुशासन प्रतियोगिता-सहयोग, भय को जानना और समझना। समालोचनात्मक चिंतन हेतु कौशलों का विकास। आत्मिक शांति, एकाग्रता और ध्यान का अभ्यास। अन्र्तद्वंदों का समाधान। आत्म समीक्षात्मक दैनंदिनी लेखन।

**UNIT- II** **Marks:12**

जीवन के उद्देश्यों की खोज- व्यक्ति की शिक्षक के रूप में दूरदृष्टि। जीवन की आकांक्षाएँ एवं उद्देश्य।

जीवन को विवेकपूर्ण दिशा प्रदान करना, जीवन की दिशा को प्रभावित करने वाले कारकों को समझना। समाज व विश्व को समझने में स्वयं के विचार, संवेगों पर मनन/अंतर्चिंतन करना। पूर्वाग्रह व रूढ़िबद्ध धारणा-(लिंग, जाति, वर्ग, नस्ल, क्षेत्र, शारीरिक अशक्तता आदि) की समालोचना करना और स्वयं पर पड़ने वाले प्रभावों के प्रति जागरूकता। शारीरिक, मानसिक व संवेगात्मक शोषण के विरूद्ध विभिन्न पहलुओं पर विचार कर उनको रोकने हेतु अपनी क्षमताओं को विकसित करना। व्यक्तित्व के विभिन्न आयाम तथा उन तरीकों को जानना जो स्वयं की पहचान, मूल्य एवं जीवन की दिशा को प्रभावित करते हैं।

**UNIT- III** **Marks:11**

सुविधादाता **(Facilitator)**के रूप में स्वयं का विकास :आत्म समीक्षात्मक चिंतन का विकास- शिक्षण करते समय स्वयं की अभिवृत्तियों और संप्रेषण के तरीके के प्रति सचेत रहना। विद्यार्थियों की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और व्यक्तिगत भिन्नताओं को स्वीकार कर उनसे संबंध स्थापित करना। अध्यापन के दौरान विद्यार्थियों में सामाजिक कौशल और व्यक्तिगत विकास के व्यावहारिक तरीकों को जानना एवं समझना (Explore करना)।

### पाठ्यक्रम अंतरण की विधियाँ (Mode of Transaction)

इस विषय की कार्यशाला के लिए कोई निर्धारित मानक सामग्री नहीं है। ऐसी अपेक्षा है कि इस क्षेत्र के व्यावसायिक विशेषज्ञों की सहायता से छात्राध्यापकों के लिए विशेष प्रकार की गतिविधियों की रूपरेखा तैयार करवाई जाए। इसमें छात्र समसामयिक विषयों को लेकर समूह में या व्यक्तिगत रूप से सुविधादाता के साथ चर्चा करके अपनी समझ बनाएगें। इस विषय के माध्यम से छात्रध्यापकों को यह सुअवसर दिया जाएगा कि वे बाह्य

जगत को समझ सकें और अपनी संवेदनाओं के आधार पर उससे जुड़ सकें।यह अपेक्षा की जाती है कि शिक्षार्थियों को स्वयं के जीवन और उनसे जुड़े मुद्दों के भीतर झांकने और व्यक्त करने का मौका दिया जाएगा। छात्राध्यापकों को प्रोत्साहित किया जाए कि वे नवीन एवं समसामयिक मुद्दों पर नवीनता एवं गंभीरता से विचार कर सकें और अपनी कल्पनाओं, सृजनात्मकता के जरिए स्वयं के लिए उसका उपयोग कर सकें। स्रोत सामग्री के रूप में दैनिक समाचार पत्र, वेबसाइट पर प्रस्तुत आलेख, समसामयिक संदर्भों पर आधारित फिल्में, डाक्यूमेंट्री और अन्य कई दृश्य-श्रव्य सामग्री हो सकती है।टी.वी.चैनलों पर आने वाली चर्चाएं,वार्ताएं भी उपयोग में लाई जा सकती हैं।

## सत्रगत कार्य (Assignements)

इकाईयों में दिए गए सभी बिंदुओं पर कार्यशाला, समूह चर्चा, रोल प्ले, केस स्टडी, वाद-विवाद,
प्रस्तुतीकरण आदि गतिविधियाँ करवायी जा सकती हैं। बच्चों की आवश्यकताओं के प्रति संवेदनशीलता को स्वयं के बचपन के अनुभव के आधार पर स्पष्ट करना-अनुभव लेखन। स्वयं की मजबूतियों (Strengths), कमजोरियों (Weaknesses), उपलब्ध अवसरों (Opportunities), वं मुश्किलों/जोखिमों (Threats) का विश्लेषण करना तथा कमजोरियों को दूर करने की योजना बनाना। (SWOT- Analysis). समूह चर्चा द्वारा-दृष्टिकोणों की विविधता(सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, भौगोलिक परिपेक्ष्य में) को समझना और उनका सम्मान करना-चर्चा और परिणामों पर प्रतिवेदन करना। असेसमेंट ऑफ सेल्फ कानसेप्ट

## संदर्भ संदर्भ ग्रंथों की सूची (Bibliography)

इस पाठ्यक्रम का अध्ययन अध्यापन कार्यशाला मोड, समूह चर्चा एवं विशेषज्ञों (मनोवैज्ञानिक, व्यक्तित्व
विकास) द्वारा होगा। यह पाठ्यक्रम स्वयं करके सीखने के उद्देश्य से निर्मित है। इस पाठ्यक्रम के लिए निम्नलिखित किताबों का अध्ययन किया जा सकता है- एनसीएफ २००५ राष्ट्रीय फोकस समूह का आधार पत्र, शांति के लिए शिक्षा, एनसीईआरटी, नई दिल्ली, २०१०। एंटोनी द सेंट एक्सूपेरी, नन्हा राजकुमार, एनसीईआरटी, नई दिल्ली, २००७। हेमराज भट्ट, एक अध्यापक की डायरी के कुछ पन्ने, अजीम प्रेमजी यूनिवर्सिटी, बंगलोर, २०११। जूलिया वेबर गर्हर्डन, मेरी ग्रामीण शाला की डायरी, एकलव्य, भोपाल, २०१०। गिजुभाई बधेका, दिवास्वप्न, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली, २०११। गिजुभाई बधेका, शिक्षक हो तों, सर्जना, बीकानेर, २०१२। जे. कृष्णमूर्ति, स्कूलों के नाम पत्र, भाग-१, कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया,वाराणसी, १९९८। जे. कृष्णमूर्ति, शिक्षा क्या है?, राजपाल एंड संज, दिल्ली, २०११
(कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया में भी उपलब्ध)। महात्मा गांधी, सत्य के प्रयोग, नवजीवन प्रकाशन, अहमदाबाद (सस्ता साहित्य मंडल व राजपाल एंड संज के संस्करण भी उपलब्ध)। प्रिया नई दिल्ली एवं सहभागी शिक्षण केंद्र लखनऊ, प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण-विकास में सहभागी प्रशिक्षण पद्धति का मैनुअल, सोसाईटी फॅार पार्टिसिपेटरी रिसर्च इन एशिया, नई दिल्ली का प्रकाशन १९९४।

# Swami Vivekanand University, Sagar(M.P.)

## भाषाई समझ, प्रारंभिक साक्षरता एवं हिंदी शिक्षण
## (D.EL.ED.-105)

| Course code | Title of the Paper | Distribution of Marks | | | | | | | | Grand Total (i= d+h) | Duration of Exam |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Theory | | MST (c) | Total (d = a+c) | Practical | | TW (g) | Total (h= e+g ) | | |
| | | Max (a) | Min (b) | | | Max (e) | Min (f) | | | | |
| D.EL.ED-105 | भाषाइ समझ, प्रारंभिक शिक्षा एवं हिंदी शिक्षण | 70 | 24 | 30 | 100 | - | - | - | - | 100 | 3 Hours |

**UNIT- I** **Marks:14**

भाषा की परिभाषा एवं प्रकृति- भाषा की परिभाषा एवं महत्त्व। भाषा एवं समाज का संबंध। राज्य की भाषानीति और शिक्षा। भाषा-बोली (स्थानीय भाषा)। बहुभाषिकता की समझ-बहुभाषिकता को प्रदेश की भाषा संपन्न कक्षाओं में एक उपकरण के रुप में प्रयोग करना।

**UNIT- II** **Marks:14**

भाषा का अर्जन एवं भाषायी कौशलों का विकास- बच्चों का परिवेश एवं शालेय अनुभवों से भाषा सीखना व भाषायी कौशल प्राप्त करना। प्रारंभिक साक्षरता द्वारा सरल, सशक्त एवं प्रभावी अभिव्यक्ति में समर्थ बनना। भाषा की प्रारंभिक शिक्षा- कक्षा १ व २ के विशेष संदर्भ में। मौखिक भाषा- सुनना एवं बोलना (सुनकर समझना,समझकर बोलना) श्रवण कौशल विकास की विधियाँ, समझना, समझकर बोलना-प्रवाह स्पष्टता, गतिशीलता के साथ बोलना, अर्थपूर्ण वाक्यों के साथ भाषा का व्यावहारिक प्रयोग कर पाना । वाचनकौशल- पढ़ना क्या है, सस्वर एवं मौन वाचन, छपी एवं हस्त लिखित सामग्री पढ़ना, समझना। लेखन कौशल- उचित विराम चिह्नों का प्रयोग, सुलेख, स्वतंत्र अभिव्यक्ति के रुप में विभिन्न विधाओं में सुसंबद्ध लेखन करना।

**UNIT- III** **Marks:14**

पाठ्यचर्या में भाषा, कक्षा शिक्षण और संभावनाएँ- शिक्षा और पाठ्यचर्या में भाषा (भाषा सीखना और भाषा से सीखना)। भाषा शिक्षण- सामाजिक न्याय, समता-समानता, लिंग भेद, व्यक्तिगत अंतर व समावेशित शिक्षा के संदर्भ में। भाषा सीखने के प्रति रुझान-वर्तमान परिदृश्य। भाषा संवर्धन में साहित्य की भूमिका,पाठ्यचर्या में बाल साहित्य का महत्त्व, पुस्तक समीक्षा। साहित्य की विभिन्न विधाओं को समझना। गद्य एवं पद्य शिक्षण प्रविधियाँ (कविता, कहानी, संस्मरण, एकांकी, निबंध आदि एवं नवीन प्रविधियाँ यथा-गतिविधि आधारित शिक्षण,सक्रिय अधिगम प्रविधि आदि।

**UNIT- IV** **Marks:14**

व्याकरण अध्ययन-

मौखिक एवं लिखित अभिव्यक्ति अंतर्गत भाषा विकास में व्याकरण की भूमिका। ध्वनि एवं भाषायी ध्वनियाँ । हिन्दी के स्वर-व्यंजन (वर्णमाला) एवं उनका वर्गीकरण। शब्द एवं पद । अर्थ बोध, अर्थ विस्तार (विस्तार, संकोच, अर्थादेश, उत्कर्ष, अपकर्ष),अर्थ परिवर्तन। वाक्य के गुण, वाक्य के प्रकार (भेद) (रचना एवं अर्थ के आधार पर)। रस, छंद, अलंकार प्रयोग। व्यावहारिक व्याकरण शिक्षण (कक्षा १ से ८ की पाठ्यपुस्तकों में निहित)।

**UNIT- V** **Marks:14**

भाषा में मूल्यांकन एवं नवाचार- मूल्यांकन की परिभाषा एवं प्रकार। सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन। प्रदेश की नीति अनुसार मूल्यांकन एवं अभिलेखों का संधारण। ब्लूप्रिंट एवं प्रश्न पत्र निर्माण। कठिनाइयों की पहचान एवं विशेष शिक्षण । भाषा प्रयोगशाला का स्वरुप महत्त्व एवं उपयोगिता। दृश्य-श्रव्य माध्यमों का प्रयोग । भाषा शिक्षण में क्रियात्मक अनुसंधान।

## सत्रगत कार्य (Assignement)

निम्नलिखित खंड अ एवं ब में से एक-एक प्रायोजना कार्य कीजिए। **खंड अ**

गतिविधि आधारित अधिगम(एबीएल)/सक्रिय अधिगम प्रविधि(एएलएम) की एक-एक पाठ योजना गद्य एवं पद्य की पृथक-पृथक तैयार कीजिए। भाषायी कौशलों के विकास हेतु एक प्रभावी पाठ योजना सहायक सामग्री सहित तैयार कीजिए। भाषा प्रयोगशाला के प्रत्यक्ष अवलोकन के आधार पर एक भाषायी खेल गतिविधि तैयार करें। भाषागत किसी एक समस्या का चयन कर क्रियात्मक अनुसंधान की प्रायोजना निर्माण कर संपादन कीजिए। भाषा की प्रकृति को ध्यान में रखते हुए लिखित एवं मौखिक मूल्यांकन के लिए ब्लूप्रिंट के अनुसार किसी एक कक्षा का आदर्श प्रश्नपत्र तैयार कीजिए। खंड ब

विद्यालयीन पुस्तकालय में उपलब्ध बाल साहित्य की विधाओं एवं लेखकों के नाम की सूची तैयार कीजिए।अपनी पसंद की किसी पुस्तक की समीक्षा लिखिए। आपके विद्यालय में पुस्तकालय के प्रभावी उपयोग की कार्ययोजना तैयार कीजिए। किसी स्थानीय लोककथा को स्थानीय बोली और हिंदी भाषा में लिखकर प्रस्तुत कीजिए। अपने आसपास के किसी प्राकृतिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक महत्व के स्थल, मेले, त्योहार अथवा स्थानीय स्वतंत्रता-सेनानी के जीवनवृत्त में से किसी एक पर आलेख लिखिए। स्थानीय स्तर पर प्रचलित लोकोक्तियों एवं मुहावरों का संकलन कीजिए।

## पाठ्यूयक्रम की अंतरण की विधियाँ (Mode of Transaction)

छात्राध्यापकों को पठन हेतु चयनित सामग्री प्रदान करना एवं उस पर चर्चा करना। छात्राध्यापकों को छोटे समूह में पठन हेतु अवसर देना एवं उसका प्रस्तुतीकरण करवाना, छूटी हुई बातों को समूह चर्चा द्वारा जोड़ना। प्रश्नोत्तर माध्यम से चर्चा एवं सहभागिता द्वारा छात्राध्यापकों को अवसर प्रदान करना एवं विषयवस्तु का सुदृढ़ीकरण करना। छात्राध्यापकों को विषयवस्तु से संबंधित प्रायोजना कार्य देना एवं उसके प्रस्तुतीकरण से विषयवस्तु का विकास करना।

**संदर्भ ग्रंथों की सूची (Bibliography)**

१. हिन्दी भाषा शिक्षण- ओमप्रकाश शर्मा, कल्पना प्रकाशन, जयपुर २. हिन्दी व्याकरण एवं रचना विकास- डॉ. महेन्द्रकुमार मिश्रा, कल्पना प्रकाशन, जयपुर ३. हिन्दी भाषा और भाषा विज्ञान-डॉ. अशोक के शाह 'प्रतीक', अमर प्रकाशन, मथुरा ४. हिन्दी वर्ण और वर्तनी-डॉ प्रेम भारती, मीरा प्रकाशन, इलाहाबाद ५. हिन्दी व्याकरण-पंडित कामता प्रसादगुरु,लोक भारतीय प्रकाशन,इलाहाबाद ६. भाषा विज्ञान-भोलानाथ तिवारी, किताब महल, इलाहबाद ७. हिन्दी व्याकरण शिक्षण-डॉ. हरदेव बाहरी

८. आधुनिक हिन्दी व्याकरण रचना-डॉ. वासुदेव नंदन प्रसाद, भारती भवन १६६२ ६. बच्चे की भाषा और अध्यापक - प्रो० कृष्ण कुमार एन बी टी १६६८ १०. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या २००५ (एन.सी.एफ-२००५) ११. शिक्षा का अधिकार अधिनियम २००६ (आर.टी.ई.-०६) १२. प्राथमिक विद्यालय में भाषा शिक्षण और चिट्ठी वाचन-सर्जना प्रकाशन, बीकानेर १३. पढ़ने की समझ- एन सी ई आर टी १४. राष्ट्रीय पाठ्यचर्या-शिक्षक शिक्षा २००६ (एन.सी.एफ.टी.ई.-०६) १५. हिन्दी एक मौलिक व्याकरण- रमाकांत अग्निहोत्री १६. भाषा शिक्षण - रोहित धनकर, आधार प्रकाशन, पंचकूला, चंडी गढ़, हरियाणा

# गणित शिक्षण प्रारंभिक स्तर-1
# (D.EL.ED.-106)

| Course code | Title of the Paper | Distribution of Marks | | | | | | | | Grand Total (i= d+h) | Duration of Exam |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Theory | | MST (c) | Total (d = a+c) | Practical | | TW (g) | Total (h= e+g ) | | |
| | | Max (a) | Min (b) | | | Max (e) | Min (f) | | | | |
| D.EL.ED-106 | गणित शिक्षण प्रारंभिक स्तर-1 | 70 | 24 | 30 | 100 | - | - | - | - | 100 | 3 Hours |

**UNIT- I** **Marks:14**

विषय-वस्तु का शिक्षा शास्त्रीय ज्ञान - **I**(Pedagogical content knowledge-I) संख्याएँ,संख्या पद्धति, शून्य का इतिहास एवं समझ, पेटर्न। मूलभूत संक्रियाएँ : जोड़ना, घटाना, गुणा, भाग, संख्या रेखा के उपयोग से संक्रियाएँ। गुणन, गुणज, गुणनखण्ड, अपवर्त्य, अपवर्तक, लघुत्तम समापवर्त्य, महत्तम समापवर्तक। भिन्नः अवधारणा, इकाई के भाग/हिस्से के रुप में भिन्न की समझ, भिन्न के प्रकार, भिन्नों की तुलना, भिन्नों पर संक्रियाएँ। दशमलव : अवधारणा, भिन्न को दशमलव संख्या एवं दशमलव संख्या को भिन्न में बदलना, दशमलव संख्याओं पर संक्रियाएँ। ऐकिक नियम, लाभ-हानि।

**UNIT- II** **Marks:14**

विषय-वस्तु का शिक्षा शास्त्रीय ज्ञान-**II**(Pedagogical Content Knowledge – II) मापन - इकाई की समझ, लंबाई, वज़न, धारिता, समय, मुद्रा, क्षेत्र। आकार एवं आकृतियों की समझ, खुली एवं बंद आकृति, त्रिभुज, चतुर्भुज एवं वृत्त, कागज मोड़कर ज्यामिति आकृतियाँ बनाना। तल की समझ, समतल, वक्रतल। भारतीय गणितज्ञ एवं उनका योगदान आर्यभट्ट, ब्रह्मगुप्त, भास्कराचार्य, श्रीनिवास रामानुजन, स्वामी भारती कृष्णतीर्थ, वराहमिहीर, बोधायन। गणितीय संगणनाओं की वैकल्पिक विधियाँ, परममित्र, बीजांक, एकाधिकेन पूर्वेण, एकन्यूनेन पूर्वेण, ऊर्ध्वतिर्यक विधि।

**UNIT- III** **Marks:14**

बच्चे का गणितीय अवधारणात्मक विकास-III ( Mathematical Concept Develop Ment of Child ) गणित अधिगम के सिद्धांत - पियाजे, वायगोत्स्की। बच्चे के गणितीय ज्ञान पर उसकी सामाजिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का प्रभाव। गणित का दैनिक जीवन के अनुभवों से संबंध। गणित की कक्षा में बोलचाल की भाषा की भूमिका।

**UNIT- IV** **Marks:14**

गणित शिक्षण के लक्ष्य, उद्देश्य एवं मूल्यांकन -IV ( Aims Objective and Evaluation of Mathematics Teaching ) गणित की प्रकृति, गणित शिक्षण के लक्ष्य एवं उद्देश्य। NCF 2005 के परिप्रेक्ष्य में गणित शिक्षण एवं मूल्यांकन। प्रारंभिक कक्षाओं में गणित शिक्षण के दौरान विभिन्न प्रकरणों में आने वाली प्रमुख समस्याएं तथा उनका निवारण। बच्चों को गणित सीखने में आने वाली सामान्य कठिनाइयाँ, कारण व निराकरण। गणित के संदर्भ में सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन एवं उपकरण व तकनीक।

**UNIT- V** **Marks:14**

गणित शिक्षण के आयाम-V ( Dimension of Mathematics ) शिक्षण अधिगम प्रक्रिया के प्रति धारणाएं। शिक्षण सिद्धांत एवं शिक्षण विधियाँ। सबके लिए गणित - सामाजिक न्याय, लिंग भेद, वैयक्तिक भिन्नता, समावेशी वातावरण। गणित अधिगम हेतु उपयोगी सामग्री-गणित किट, गणित प्रयोगशाला, गणित संदर्भ कक्ष एवं स्थानीय शिक्षण अधिगम सामग्री। गणित शिक्षण के संदर्भ में - गतिविधि आधारित शिक्षण, सक्रिय अधिगम प्रविधि। गणित शिक्षण हेतु पाठ योजना।

## सत्रगत कार्य (**Assignments)**

(कोई दो) सत्रगत कार्य अतंर्गत छात्राध्यापक पूरी प्रक्रिया का अभिलेखीकरण कर सामग्री सहित प्रस्तुत करेंगे। १. एबाकस का निर्माण तथा इसका कक्षा शिक्षण में उपयोग करना। २. ज्यो;ळमवद्धबोर्ड का निर्माण एवं कक्षा-शिक्षण में इसका उपयोग करना। ३. संख्या रेखा के मॉडल का निर्माण व इसके द्वारा शिक्षण। ४. कागज मोड़कर गतिविधियों से गणित शिक्षण करना। ५. भिन्न जाली का निर्माण एवं दशमलव की समझ हेतु इसका कक्षा शिक्षण में उपयोग करना। ६. पथ के क्षेत्रफल हेतु मॉडल तैयार कर कक्षा शिक्षण में इसका उपयोग करना। ७. पाइथागोरस प्रमेय का मॉडल तैयार कर उसका सत्यापन करना। ८. गणित की किसी एक अवधारणा के मूल्यांकन हेतु उपकरण का निर्माण कक्षा में उपयोग करना। ९. बच्चों को आने वाली कठिनाई की पहचान कर कारणों का विश्लेषण व निराकरण करना। १०. इंटर्नशिप की शाला में गणितीय कोने (उंजी बवतदमत) की स्थापना करना। ११. अपने परिवेश से विभिन्न गणितीय पहेलियाँ/खेलका संग्रह करना एवं स्वयं पहेलियाँ/खेल बनाना। १२. अपने साथी छात्राध्यापक केगणित कक्षा शिक्षण (कम से कम ५) का विश्लेषणात्मक अवलोकन करना।
१३. विभिन्न प्रकार के क्षमता वाले बच्चों के अधिगम के लिए पाठ-योजना तैयार करना। १४. दैनिक जीवन में प्रयुक्त होने वाली विभिन्न प्रकार की मापन इकाइयों का अध्ययन तथा उनमें परस्पर संबंध स्थापित करना।

## पाठ्यक्रम की अंतरण की विधियाँ (**Mode of Transaction)** :-

१. गणित को बच्चे कैसे सीखते हैं, कैसे प्रत्युत्तर देते हैं, का छात्राध्यापकों द्वारा अवलोकन कर समूह में चर्चा की जाएगी। २. विभिन्न प्रकार गणितीय अवधारणा की समझ बनाने के लिए समूह कार्य अधिक करवाए जाएंगे। ३. पाठ्यवस्तु के अध्ययन के साथ विमर्श करते हुए छात्राध्यापक चर्चा के लिए आवश्यक मुद्देनिकालेंगे। ४. गणितीय ज्ञान को सीखने के लिए ऐतिहासिक और परंपरागत विभिन्न पद्धतियों का संग्रह करना। ५. गणित के मॉडल तैयार करना विशेषकर ज्यामितीय संबंधी। ६. गणित की सहायक सामग्री को तैयार करना,उसका परीक्षण करना और उसे प्रस्तुत करना।

## संदर्भ ग्रंथों की सूची (Bibliography)

१. म.प्र. पाठ्यपुस्तक निगम द्वारा प्रकाशित कक्षा १ से ८ तक की गणित की प्रचलित पाठ्यपुस्तकें। २. गणित शिक्षण-एम.एस.रावत व एस.बी. लाल ३. NCF 2005 NCERT द्वारा प्रकाशित साहित्य ४. राज्य शिक्षा केंद्र द्वारा प्रकाशित विद्यार्थी मूल्यांकन निर्देश पुस्तिका ५. NCERT द्वारा तैयार गणित किट।

# Swami Vivekanand University, Sagar(M.P.)

## Proficiency in English
## (D.EL.ED.-107)

| Course code | Title of the Paper | Distribution of Marks | | | | | | | | Grand Total (i= d+h) | Duration of Exam |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Theory | | MST (c) | Total (d = a+c) | Practical | | TW (g) | Total (h= e+g ) | | |
| | | Max (a) | Min (b) | | | Max (e) | Min (f) | | | | |
| D.EL.ED-107 | **Proficiency in English** | 35 | 12 | 15 | 50 | - | - | - | - | 50 | 3 Hours |

**UNIT- I** **Marks:7**

**Nature of language**

What is Language: characteristics of language, functions of language, language as a means of communication and thinking. First, second and foreign language. The place of English in multilingual Indian society.

**UNIT- II** **Marks:7**

**Listening and Speaking**

Listening with comprehension: simple instructions, public announcements, telephonic conversation, radio/TV, discussions. Sound system of language with special focus on English sound system, word and sentence stress). Enhancing listening and speaking abilities through discussions, role play, interactive radio instruction programme(IRI).

**UNIT- III** **Marks:7**

**Reading**

Acquisition of reading skills: reading with comprehension different types of texts, reading for global and local comprehension, importance of reading with speed. Reading strategies: word attack, inference, extrapolation, analysis. Skills of reading, skimming, scanning, extensive and intensive reading, reading aloud, silent reading. Development of vocabulary – meaning in context, formation of words- affixes, adjective to nouns, noun to verb, etc., homonyms and homophones. Using reading as a tool of developing reference skills: use of dictionary, reference books, encyclopedia, library, journals, internet.

**UNIT- IV** **Marks:7**

**Writing**

Improving writing skills: paragraph writing, identifying a topic sentence, arranging sentences in logical order, joining sentences with linking words/phrases( cohesion and coherence). Different forms of writing: formal and informal letters, messages, notices, posters, advertisements, note making, report writing, diary entry, resume (biodata, curriculum vitae). Doing the following to experience the process of writing: brainstorming, drafting, editing, conferencing, modifying, revising, publishing. Mechanics of writing (strokes and curves, capital and small, cursive and print script, punctuation. Controlled and guided writing (visual and verbal inputs). Free and creative writing.

**UNIT- V** **Marks:7**

**Grammar**

Parts of speech:. Verbs- auxiliary, main verb, finites, non-finites tenses, voices, narration. Adjectives, determiners, preposition, adverbs.Kinds of sentences; subject-verb agreement, clauses and connectors.

**Assignment (Practical)**

The students will actively perform the following activities in classroom situations, real and simulated, and will discuss freely on the strategies and importance of each one of them and submit three assignments compulsorily. Listening with comprehension to follow simple oral instructions, public announcements, telephonic conversations, classroom discussions, radio, TV news, sports commentary. Reading aloud text with proper pronunciation, intonation and stress, reciting poems, story-telling, role-play, situational talk. Silent reading. Reading different text type: Comics, stories, riddles, jokes, instructions for games. Phonemic drills. Organizing listening and speaking activities: rhymes, songs, use of stories, poems, role play and dramatization. Use of dictionary. Writing dialogues, speeches, poems, skits, describing events. Using ideas of critical literacy: looking at the socio-cultural dimensions of literacy, encouraging questioning on the dominant ethos in a society.

**Essential Reading /Reference Material**

1. Practical English Grammar: Thompson and Martinet 2. Intermediate English Grammar :Raymond Murphy 3. How Languages are learned, Oxford, OUP : Lightbown,P M & Spade , N (1999) 4. English as a Foreign Language : R. A. Close 5. Lessons for guided writing scholastic : Sullivan, Mary (2008) 6. Pictures for language learning- CUP Wright A (1989) 7. Drama techniques in language learning: A Resource book of communication activities for language teachers (2nd edition) –CUP- Maley, A and A Duff (1991) 8. English for Primary Teachers : A handbook of activities and class room language - OUP – Slatternly, M & J. Wallis (2001)9. handouts : http://www using English. com

# Swami Vivekanand University, Sagar(M.P.)

## कम्प्यूटर शिक्षा
## (D.EL.ED.-108)

| Course code | Title of the Paper | Distribution of Marks | | | | | | | | | Grand Total (i= d+h) | Duration of Exam |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Theory | | MST (c) | Total (d = a+c) | Practical | | TW (g) | Total (h= e+g ) | | | |
| | | Max (a) | Min (b) | | | Max (e) | Min (f) | | | | | |
| D.EL.ED-108 | कम्प्यूटर शिक्षा | - | - | - | - | 25 | - | 25 | 50 | | 50 | 3 Hours |

**UNIT- I** **Marks:9**

कम्प्यूटर का परिचय (Introductin of Computer)

परिचय। कम्प्यूटर के भाग, साफ्टवेयर एवं हार्डवेयर। कम्प्यूटर के भागों को जोड़ना। कम्प्यूटर के विभिन्न भागों की उपयोगिता। स्टोरेज डिवाइस। कम्प्यूटर के कार्य।

**UNIT- II** **Marks:8**

ऑपरेटिंग सिस्टम (Operating System)

ऑपरेटिंग सिस्टम का परिचय। ऑपरेटिंग सिस्टम के प्रकार (लॉइनेक्स एवं विंडोज )। डेस्कटॉप के भाग-वॉल पेपर,शार्टकट ऑइकॉन्स, टॉस्कबार/पैनल,स्टार्टमेनू। फोल्डर बनाना। मीडिया प्लेयर का उपयोग।

**UNIT- III** **Marks:8**

वर्ड प्रोसेसिंग (Word Processing)

वर्ड प्रोसेसिंग का परिचय। राईटर/एम.एस. वर्ड में कार्य करना-टूल बार तथा मेनूबार की जानकारी, फाइल बनाना, सेव करना तथा खोलना, टेक्स टाइप करना (हिन्दी एवं अंग्रेजी)। फारमेटिंग- बोल्ड, इटालिक, अन्डरलॉइन, फॉन्ट, फॉन्टसाइज, कलर, अलाईन में इत्यादि, बुलेट्स एवं नम्बरिंग, कट, कापी एवं पेस्ट। पिक्चर एवं टेबल इन्सर्ट करना।

## सत्रगत कार्य (Assignments)

सभी सत्रगत कार्य आवश्यक हैं। दिए गए कार्यो में से कोई भी पांच कार्य सत्रगत कार्य के रुप में जमा कराये जाएँगें। १. प्रार्थना पत्र लिखना (हिन्दी एवं अंग्रेजी)। २. विद्यालय समय-सारणी का निर्माण। ३. स्वयं की प्रोफाइल (बायोडाटा) का निर्माण। ४. कम्प्यूटर में फाइलों का रख रखाव। ५. रिमूवेबलडि वाइसेस (पेन ड्राइव, मेमोरी कार्ड) की कार्य प्रणाली एवं उपयोगिता। ६. मॉइन्ड मेप बनाना। ७. पहचान पत्र का निर्माण करना। ८. अनुक्रमणिका का निर्माण करना। ९. कलात्मक मुखपृष्ठ का निर्माण। १०. कक्षा के अन्तर्गत छात्र-छात्राओं की प्रोफाइल तैयार करना।

# संदर्भ ग्रंथों की सूची (Bibliography)

1-HeadstartTraining Manual 2011(Hindi) 2-Microsoft Teacher Training Module (Hindi)
3-Intel Teacher Module (Hindi) 4-Linux Pustak 2011 (Hindi)
Website:-
1-www.computerseekho.com 2-www.dsaksharta.in 3-www.educationportal.mp.gov.in
4-www.teindia.nic.in 5-www.ncte-in.org 6-www.teachersofindia.org

## Swami Vivekanand University, Sagar(M.P.)

# स्वास्थ्य,स्वच्छता,भावनात्मक विकास एवं शारीरिक शिक्षा (D.EL.ED.-109)

| Course code | Title of the Paper | Distribution of Marks | | | | | | | | Grand Total (i= d+h) | Duration of Exam |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Theory | | MST (c) | Total (d = a+c) | Practical | | TW (g) | Total (h= e+g ) | | |
| | | Max (a) | Min (b) | | | Max (e) | Min (f) | | | | |
| D.EL.ED-109 | स्वास्थ्य, स्वच्छता, भावनात्मक विकास एवं | - | - | - | - | 15 | - | 15 | 30 | 30 | 3 Hours |

**UNIT- I** **Marks:5**

शारीरिक शिक्षा, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता

उत्तम स्वास्थ्य से अर्थ, महत्व, बच्चों में शारीरिक एवं मानसिक अक्षमताएँ चिन्हित कर उनके आधार पर शिक्षण। शरीर के विभिन्न अंगों जैसे आँख, नाक, कान, मुँह, हाथ, नाखून एवं बालों की सफाई आदि।

कपड़ों की सफाई एवं नित्य स्नान का महत्व। अच्छी आदतों का विकास जैसे जल्दी जागना, जल्दी सोना, समय पर भोजन करना तथा समय पर अध्ययन करना इत्यादि। भोजन के पोषक तत्वों तथा संतुलित आहार की विशेषताएँ, स्वास्थ्यवर्धक भोजन। प्रचलित स्थानीय खेल, सही तरीके से बैठने, खड़े होने, पढ़ने एवं लेटने की स्थितियाँ। योगासन, प्राणायाम एवं व्यायाम की क्रियाएँ।

**UNIT-II** **Marks:5**

परिवेशीय स्वास्थ्य एवं स्वच्छता

परिवेशीय स्वास्थ्य का अर्थ एवं स्वस्थ परिवेश की विशेषताएँ। विभिन्न ऋतुओं में स्वास्थ्य की देखभाल एवं घरेलू उपचार। जल संरक्षण एवं रखरखाव, जल प्रदूषण एवं उससे होने वाली बीमारियाँ। सार्वजनिक स्वच्छता खुले में शौच के दुष्प्रभाव, उचित शौच प्रबंधन। घर या वाटिका में उगाए जाने वाले औषधीय पेड़-पौधों का रखरखाव एवं उनके प्रयोग से किए जाने वाले उपचार। भोजन का संदूषण, उससे होने वाली बीमारियाँ और उनका निवारण।

**UNIT-III** **Marks:5**

उपभोक्ता एवं सामुदायिक स्वास्थ्य

उपभोक्ता स्वास्थ्य का अर्थ एवं शिकायत निवारण के लिए जिम्मेदार संस्थाएँ। सामुदायिक सेवा संस्थाओं में महिला बाल-विकास, प्राथमिक चिकित्सा केंद्र, नगर पालिका आदि का परिचय। वृद्धों, बीमारों तथा निःशक्तजनों की देखभाल एवं उनकी सुरक्षा के उपाय। बाजार में बिकने वाली खुली एवं डिब्बा बंद खाद्य सामग्री के दुष्प्रभावों की जानकारी। प्राथमिक चिकित्सा जैसे जलने, चोट लगने, डूबने इत्यादि पर उपचार। रेडक्रास, स्काउट-गाइड जैसी संस्थाओं की कार्य शैली का परिचय।

### सत्रगत कार्य ( **Assignments)**

छात्राध्यापकों द्वारा सत्रगत कार्य का संपादन स्कूल इंटरर्नशिप के दौरान बच्चों की समस्याओं एवं परिवेशीय समाधान पर अध्ययन करके पूर्ण किया जाएगा- **सुझावात्मक सत्रगत कार्य** - १. कक्षा में लगातार अनुपस्थित बच्चे के सामाजिक आर्थिक एवं पारिवारिक कारणों का पता लगाना एवं कक्षा में नियमित उपस्थित सुनिश्चित करने के प्रेरक प्रयास करना। (केस स्टडी के रूप में) २. उत्तम स्वास्थ्य के लिए स्थानीय पेरिवेशीय

आहार। (स्थानीय भोज्य सामग्री और उसका निर्माण) ३. घरेलू एवं प्राकृतिक चिकित्सा उपाया। (स्थानीय उपलब्धता के आधार पर) ४. शारीरिक खेल क्रीड़ाओं में पीछे रह रहे बच्चों पर अध्ययन। (रिपोर्ट प्रस्तुतीकरण) ५. अस्वच्छता के कारण बच्चों में जन्म लेती समस्याओं पर अध्ययन। (रिपोर्ट प्रस्तुतीकरण) ६. स्थानीय तौर पर कार्यकारी सामुदायिक सेवा संस्थाएँ और उनके द्वारा किए गए कार्य। ७. स्थानीय स्तर पर जल स्त्रोंतो का प्रदूषण एवं उनसे स्वास्थ्य पर होने वाले दुष्प्रभाव।

## पाठ्यक्रम की अंतरण की विधियाँ (**Mode of transaction**)

आवश्यकतानुसार छात्राध्यापक खेल, योग,पीटी जैसी गतिविधियाँ मैदान में संचालित करेंगे।
चार्ट, कैलेण्डर, मॉडल आदि के माध्यम से विषयांशों का शिक्षण आवश्यकतानुसार दिया जाएगा। हाथों की धुलाई का प्रदर्शन छात्राध्यापक द्वारा किया जाएगा। प्राथमिक चिकित्सा पेटिका का ज्ञान छात्राध्यापक को दिया जाना तथा उनसे तैयार कराए जाने का अभ्यास कराया जाना है । स्वास्थ्य सेवाओं, सफाई सेवाओं, वृद्धाश्रम, निःशक्तजन को संरक्षित करने वाली संस्थाओं का अवलोकन करना एवं संबंधित स्थानों पर जाकर उनकी कार्यपद्धति को जानना और छात्राध्यापकों को इन सबके द्वारा संवेदनशील बनाने के प्रयास करना। पाठ्यक्रम के उपरोक्त विषयों पर छात्राध्यापकों के साथ शिक्षकों के निरंतर संवाद के लिए विषय की मांग के अनुसार वाद-विवाद, परिचर्चा, ड्रॅाइंग, पेटिंग, फिल्म, डाक्यूमेंट्री, आसपास का भ्रमण, गतिविधियाँ, प्रोजेक्ट कार्य, सर्वेक्षण, प्रयोग, प्रदर्शन करना, चर्चा, प्रश्नोत्तरी सामूहिक एवं व्यैक्तिक रूप से आयोजित कराया जाना। योग, खेल, पी.टी.(व्यायाम) का निरंतर अभ्यास डाइट प्रशिक्षण में सुबह के सत्र में कराया जाए, जिससे छात्राध्यापक इनके लिए अभ्यस्त हो सकें।

## **संदर्भ ग्रंथों की सूची (Bibliography)**

१. योग , वी.के एश अयंगार , पुस्तक 'योग दीपिका' २. खेल - योगराज थाली, खेलों के सामान्य नियम ३. रेडक्रास संस्था प्रकाशन ४. स्वास्थ्य शिक्षा - के. के. वर्मा ५. आहार एवं पोषण - गूपिन्दर कौर बख्शी ६. योग-पातन्जलि योग,प्रदीप - स्वामी सियारामजी ७. योग शिक्षा- अरूण नंद ८. योगासन एवं ध्यान क्रियाएँ- डॉ० सीमा शर्मा ९. शिक्षा के नये आयाम - डॉ० एस.टी. ओवेराय १०. शारीरिक शिक्षा एवं खेल - अजय मल्ला ११. शारीरिक एवं स्वच्छ शिक्षा- व्यास देव शर्मा १२. योग शिक्षा - डॉ० एस.के. मंगल

# Swami Vivekanand University, Sagar(M.P.)

## कला और शिक्षा भाग-1
## (D.EL.ED.-110)

| Course code | Title of the Paper | Distribution of Marks | | | | | | | | Grand Total (i= d+h) | Duration of Exam |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Theory | | MST (c) | Total (d = a+c) | Practical | | TW (g) | Total (h= e+g ) | | |
| | | Max (a) | Min (b) | | | Max (e) | Min (f) | | | | |
| D.EL.ED-110 | कला और शिक्षा भाग - 1 | - | - | - | - | 20 | - | 20 | 40 | 40 | 3 Hours |

**UNIT- I** **Marks:7**

कला से आशय-

कला क्या है ? कला एवं संस्कृति का संबंध। कला शिक्षा का तात्पर्य। अन्य विषयों से कला का सहसंबंध।

**UNIT- II** **Marks:7**

कला शिक्षण-

उद्देश्य और विधियाँ- कला शिक्षण क्यों और कैसे, चित्रकला-कक्षा शिक्षण के संदर्भ में, रंगमंच - कक्षा शिक्षण के संदर्भ में, संगीत एवं नृत्य-कक्षा शिक्षण के संदर्भ में।

**UNIT- III** **Marks:6**

भारतीय कला के इतिहास का परिचय-

चित्रकला का इतिहास। रंगमंच का इतिहास। संगीत व नृत्य का इतिहास।

## कक्षागत कार्य (Tranasaction)

रंगोली, मांडना,अल्पना, मेहंदी बनाना। म.प्र. के लोकगीत एवं लोक नृत्यों का अभ्यास। क्ले माडलिंग, चित्र बनाने का प्रारंभिक अभ्यास। नाट्य खेल गतिविधियाँ, छोटी-छोटी कहानियों का नाट्य रूपांतरण करना।

गतिविधियाँ :-

१. संग्रहालय, आर्ट गैलरी, प्रदर्शनी आदि का भ्रमण करवाना २. स्थानीय प्रादेशिक लोक कलाकारों द्वारा लोकगीत, लोकनृत्य, सुगम संगीत आदि का प्रदर्शन ३. कला की दृष्टि से उत्कृष्ट फिल्मों का प्रदर्शन व उनपर चर्चा ४. बाल फिल्मों तथा कार्टून फिल्मों का प्रदर्शन और उनपर चर्चा ५. किसी चित्रकार अथवा मूर्तिकार के साथ एक या दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन ६. किसी बाहरी समूह द्वारा नाटक का मंचन व उसके निर्देशक तथा कलाकारों से बातचीत सत्रगत कार्य (कोई २):-

चित्रों के कोलाज द्वारा किसी घटना या कहानी का प्रदर्शन कीजिए। स्थानीय कलाकारों का साक्षात्कार लीजिए व आधुनिकता के इस युग में कला को बनाए रखने में उनके सामने आ रही चुनौतियों के बारे में बातचीत करके उसका अभिलेखीकरण कीजिए। किसी कहानी या कविता पर आधारित कठपुतली या मुखौटों का निर्माण करके उनका प्रदर्शन कीजिए। पावर पाईंट पर किसी पाठ के लिए संगीत के साथ ग्राफिक्स एनीमेशन व चित्र बनाइए। किसी फिल्म के अभिनय, संगीत व नृत्य पक्ष को ध्यान में रखते हुए समीक्षा लिखिए। अनुपयोगी सामग्री से किसी तरह की उपयोगी वस्तुएँ बनाइए। मेहंदी, अल्पना या मांडने की कोई कलाकृति तैयार कीजिए।

**संदर्भ ग्रंथों की सूची**

एन.सी.एफ़ का फोकस पेपर कला शिक्षा। मध्यप्रदेश का लोक संगीत- प्रो.शरीफ़ मोहम्मद, डॉ. खरे- म.प्र.हिंदी ग्रंथ अकादमी। कबाड़ से जुगाड़-अरविंद गुप्ता एकलव्य प्रकाशन। जॉय ऑफ मेकिंग इन्डियन टॉयज़-खन्ना एन.बी.टी प्रकाशन। क्रिएटिव ड्रामा इन प्रायमरी ग्रेड- नील मेक केसलिन-लंदन लाँगमेन। कबीर, टैगोर, निराला, गालिब, नजीर, तुलसीदास, सूरदास, रहीम, रसखान आदि की रचनाओं के कैसेट/सीडी,स्थानीय लोकगीतों के कैसेट/सीडी। थियेटर इन एजुकेशन- बेरी प्रसाद। लोक संस्कृति - बसंत निरगुणे, म.प्र.हिंदी ग्रंथ अकादमी। भारतीय सांस्कृतिक धरोहर- डॉ. उमराव सिंह चौधरी म.प्र.हिंदी ग्रंथ अकादमी। भारत के लोकनृत्य- प्रो.शरीफ़ मोहम्मद -म.प्र.हिंदी ग्रंथ अकादमी। मुखौटों का सांस्कृतिक अध्ययन- डॉ. तुराज वशिष्ठ, म.प्र.हिंदी ग्रंथ अकादमी।

# Swami Vivekanand University, Sagar(M.P.)

## कार्य और शिक्षा भाग–1
## (D.EL.ED.-111)

| Course code | Title of the Paper | Distribution of Marks | | | | | | | | | Grand Total (i= d+h) | Duration of Exam |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Theory | | MST (c) | Total (d = a+c) | Practical | | TW (g) | Total (h= e+g ) | | | |
| | | Max (a) | Min (b) | | | Max (e) | Min (f) | | | | | |
| D.EL.ED-111 | कार्य और शिक्षा भाग–1 | - | - | - | - | 15 | - | 15 | 30 | | 30 | 3 Hours |

1- अध्ययन का क्षेत्र (**Area of Study**):–व्यावहारिक

2- भूमिका (**Rationale and Aim**) :–

वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में शिक्षण की प्रक्रियाओं में छात्राध्यापकों एवं बच्चों का सर्वांगीण विकास किया जाना है। इस हेतु सैद्धांतिक ज्ञान के साथ व्यावहारिक कार्यानुभवों को स्थान देना महत्वपूर्ण लक्ष्य है। छात्राध्यापक सैद्धांतिक ज्ञान के साथ–साथ व्यावहारिक कार्यानुभवों के आधार पर बच्चों के सर्वांगीण विकास करने में सक्षम हो सकते हैं। अतः शिक्षण के क्षेत्र में 'कार्य और शिक्षा' के अंतर्गत व्यावहारिक कार्यों की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। कार्य के माध्यम से बच्चों में शारीरिक, मानसिक तथा नैतिक विकास की प्राप्ति सहज संभव हैं। कार्य जीवन के प्रत्येक क्षेत्र से प्रत्यक्ष संबंध रखने वाले होते हैं। कार्य के द्वारा जो ज्ञानार्जन होता है, वह न केवल स्थायी होता है बल्कि उसका प्रभाव जीवन पर्यंन्त रहता है। इससे मनुष्य की क्षमता और मूल्यों का विकास भी होता है। काम से जुड़ा शैक्षिक अनुभव बच्चों के विकास में ज्यादा प्रभावशाली होता है। 'कार्य और शिक्षा' की अवधारणा है कि रचनात्मक/उत्पादक कार्य द्वारा दी जाने वाली शिक्षा में मस्तिष्क का विशेष रुप से प्रयोग होता है। इसमें बच्चे,जिन वस्तुओं या कामों की रचना करते हैं, वे उसके विषय में लगातार सोचते हैं, उसके संबंध में भाँति–भाँति की कल्पनाएँ करते हैं। बनाई जाने वाली वस्तुओं या कार्यों में सौंदर्य के समावेश के भाव से उनमें सौंदर्य बोध का विकास होता है। रचना–कर्म करते समय वे अपने हाथों का प्रयोग करते है। हाथ के प्रयोग में अनुभव और कुशलता की आवश्यकता होती है। शरीर,बुद्धि एवं हृदय तीनों के समन्वित विकास से बच्चे में श्रम के प्रति सम्मान की भावना, आत्म निर्भरता, उत्तरदायित्व और सकारात्मक सोच को विकसित करने में सहायता मिलती है।

3- विशिष्ट उद्देश्य (**Specific Objectives**) :–

'कार्य और शिक्षा' के तहत ऐसे मूलभूत क्षेत्रों को शामिल किया गया है, जो शिक्षा एवं शिक्षण के क्षेत्र में प्रभावशाली उद्देश्यों की पूर्ति कर सकते है। शैक्षिक के साथ सहशैक्षिक गतिविधियों के विकास की समझ विकसित करना। प्रारंभिक शिक्षा के साथ प्रकृति, पेड़–पौधों, बागवानी, पर्यावरण की समझ प्रायोगिक एवं व्यावहारिक रूप से प्रदान करना। हस्तकौशलों के विकास संबंधी कौशलों से परिचित कराना। रोजगारमूलक शिक्षा से संबंधित विभिन्न कौशलों का विकास करना। परिवेश व समूह में कार्य करने की आदतों का विकास करना। निरीक्षण क्षमता का विकास

करना। कल्पना शक्ति एवं एकाग्रता का विकास करना। सामान्य तौर पर 'कार्य और शिक्षा' को दो भागों में विभाजित किया गया हैं।।

**I** अनिवार्यक्रियाएँ **II** वैकल्पिक क्रियाएँ उपरोक्त दोनों क्रियाओं को निम्नानुसार सारिणीबद्ध किया गया है। प्रत्येक संस्था अपने यहाँ उपलब्ध साधन-संसाधनों तथा अपनी सुविधानुसार छात्राध्यापकों से प्रथम वर्ष में 'कार्य और शिक्षा' से संबंधित अनिवार्य एवं वैकल्पिक क्रियाएँ कराएगी।

अनिवार्य क्रियाओं की सूची-बागवानी, सिलाई, कढ़ाई एवं सजावटी वस्तुओं का निर्माण

## 4- विषय का महत्व (**Running Thread of the Course**) :-

'कार्य और शिक्षा' प्राथमिक स्तर से लेकर उच्चतर माध्यमिक स्तर पर दी जाने वाली शिक्षण प्रक्रिया का एक आवश्यक अंग है। 'कार्य और शिक्षा' उद्देश्यपूर्ण और सार्थक शारीरिक, बौद्धिक एवं हाथों से किया जाने वाला काम है। यह सीखने की प्रक्रिया का अनिवार्य हिस्सा है इससे उत्पादक वस्तुएँ या सेवाएँ प्राप्त होती है इसके तहत की जाने वाली गतिविधियाँ सीखने वाले की रुचियों, योग्यताओं तथा आवश्यकताओं पर आधारित हो सकती हैं। इससे शिक्षा के स्तर के साथ-साथ कुशलताओं और ज्ञान के स्तर में वृद्धि होती जाएगी। इसके द्वारा प्राप्त किया गया अनुभव आगे चलकर रोजगार पाने में सहायक हो सकता है।

## 5- इकाईवार अंकों का विभाजन (**Unit-wise Division of Marks** ) :-

| क्र. | इकाई | विषय | कालखंड | अंक |
|---|---|---|---|---|
| 1 | 1 | अनिवार्य क्रियाएँ<br>● बागवानी<br>● सिलाई, कढ़ाई एवं सजावटी वस्तुओं का निर्माण | **20** | **10** |
| 2 | 2 | वैकल्पिक क्रियाएँ | **10** | **05** |
| 3 | 3 | बाह्य मूल्यांकन | **-** | **15** |
| | | कुल | **30** | **30** |

इकाई- 1 अनिवार्य क्रियाएँ

1- बागवानी- भूमि एवं गमलों की तैयारी, साफ-सफाई, समतलीकरण, गड्ढे तैयार करना एवं भरना। पौधों एवं बीजों का रोपण। खाद एवं उर्वरक तथा उनके अनुप्रयोग। वृक्षारोपण की योजना बनाना। कटिंग, दाब कलम एवं गूटी द्वारा पौधे तैयार करना। पौधों की सुरक्षा। पौधों की देखभाल सिंचाई, कटाई, छँटाई आदि। किचन गार्डन।

गतिविधियाँ-

सामान्य तौर पर बागवानी हेतु निम्न बिन्दुओं के अंतर्गत गतिविधियाँ संचालित की जाना चाहिए।

छात्राध्यापकों से अपेक्षा की जाती है कि उपरोक्त क्रमानुसार गतिविधियों को स्वयं करने का प्रयास करें। समतलीकरण, कंकड़-पत्थर बीनना, क्यारी का निर्माण एवं गड्ढों को तैयार करना, गमले तैयार करना, उन्हें भरना। (क्यारियों का निर्माण फूलों, सब्जियों के आधार पर किया जा सकता है)। बीजों की पहचान करना, बीजों के नमूने एकत्र करना एवं उपलब्ध क्षेत्रफल के आधार पर आवश्यक

बीज की मात्रा का निर्धारण करना। पौधे तैयार करना- नर्सरी लगाकर, कटिंग, दाब, कलम एवं गूटी द्वारा। बीजों एवं पौधों का रोपण करना (विशेषकर कतार से कतार की दूरी एवं पौधों से पौधों की दूरी एवं सुन्दरता के आधार पर)। उर्वरकों, खादों एवं जैविक खादों की जानकारी प्राप्त करना, पहचान करना एवं नमूने एकत्र करना। कम्पोस्ट खाद या हरी पत्ती की खाद तैयार करने हेतु गड्ढेंतैयार करना एवं खाद का निर्माण करना। प्रति हैक्टर या क्षेत्रफल के आधार पर आवश्यक खाद एवं उर्वरकों की मात्रा की गणना करना। उर्वरकों को देने के तरीको के साथ

उपकरणों एवं रखरखाव की जानकारी प्राप्त करना। आसपास के वातावरण एवं प्रचलित कीटों तथा रोगों के आधार पर कीटनाशकों एवं रोगनाशकों की जानकारी तैयार करना। कीटनाशकों एवं रोगनाशकों के छिड़काव की विधियों एवं यंत्रों की जानकारी प्राप्त करना। बगीचे के पौधों एवं वृक्षों की कटाई, छँटाई, सहारा देना, सिंचाई हेतु थाला या लाइन बनाना। शाला के अनुपयोगी जल का प्रयोग बागवानी हेतु करना।

6- संप्रेषण का माध्यम**(Tranasaction)** :-छात्राध्यापकों से निम्नानुसार नमूना फाइल बनवाई जाए।

ं ण विभिन्न प्रकार के बीजों की (फूलों की, सब्जियों की) इण उर्वरकों एवं खादों की (उपलब्ध पोषक तत्वों के अनुसार) बण बागवानी या कृषि कार्यों में उपयोग लाये जाने वाले यंत्रों के चित्रों की, उपयोगिता के आधार पर।

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान पर उपलब्ध स्थल पर मौसमी पुष्पों का बगीचा तैयार करवाना। इस हेतु पाँच गुणा पाँच फीट की क्यारियाँ तैयार की जा सकती हैं। छात्राध्यापकों की संख्या अधिक होने पर विभिन्न पुष्पों के गमले भी तैयार किये जा सकते हैं। भ्रमण (एक्सपोजर विजिट)-अपने क्षेत्र में स्थापित कृषि विज्ञान केंद्र, शासकीय नर्सरी अथवा प्रसिद्ध राष्ट्रीय या राज्यस्तरीय गार्डन का भ्रमण कराया जा सकता है तथा इस भ्रमण कार्य से क्या सीखा-समझा संबंधी रिपोर्ट भी तैयार की जानी चाहिए, जिसे सभी से साझा किया जा सकता है। प्रोजेक्ट-इसके तहत छात्राध्यापकों को एक प्रोजेक्ट रिपोर्ट तैयार करनी है, इसके लिए निम्नांकित सूची से प्रोजेक्ट कार्यों को चुना जा सकता है। ं ण अपने प्रशिक्षण संस्थान की स्थिति अनुसार एक वार्षिक पौधा रोपण योजना तैयार करना ताकि प्रांगण की सुन्दरता दिखाई दे सके। इण अपने आसपास के क्षेत्र में स्थित पौधों, वृक्षों, पक्षियों आदि की जानकारी एकत्र करना। बण अपने प्रशिक्षण संस्थान में वर्षभर के लिये माहवार बागवानी क्रियाओं का केलैण्डर तैयार करना। कण जिले/विकासखंड/संकुल स्तर पर आने वाले प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों में बागवानी संबंधी कार्यों की एक सामान्य सूची तैयार करना।

## 7- संदर्भ ग्रंथ (Bibliography) :-


1. प्रोडक्शन टैक्नोलाजी ऑफ वेजीटेबल क्राप्स - डॉ. एस.पी.सिंह
2. वेजीटेबल प्रोडक्शन - डॉ. डी.व्ही.एस.चौहान
3. फ्लोरीकल्चर प्रोडक्शन - टी.के. बोस
4. हैण्ड बुक ऑफ हार्टीकल्चर - डॉ. के.एन. चढ्ढा


2- सिलाई, कढ़ाई एवं सजावटी वस्तु निर्माण -: सिलाई-काज, बटन टांकना, तुरपाई, बखिये, हुक लगाना, आई बनाना, काज करना, कच्चा करना। कढ़ाई- उल्टी बखिया, चेनस्टिच, साटन स्टिच, कांथावर्क, एप्लीक वर्क। धागे एवं सुतली का उपयोग करते हुए सामग्री निर्माण। जूट से सजावटी वस्तुओं का निर्माण।

गतिविधियाँ :-

प्रशिक्षण के दौरान छात्राध्यापकों से अपेक्षा की जाती है कि वे कौशलों के विकास के लिये विद्यालय में सकारात्मक वातावरण तैयार करें तथा नैसर्गिक सौंदर्य एवं रचनात्मक गतिविधियों के महत्व को जाने। कल्पना शक्ति एवं एकाग्रता का विकास करें। बटन टाँकना, कॉज करना, हुक लगाना, आई लगाना, तुरपाई करना। कढ़ाई करना, विभिन्न प्रकार के टाँके बनाना। सुतली से विभिन्न प्रकार की चोटियाँ गूंथना। गुथी गयी चोटियों द्वारा विभिन्न प्रकार के पेन स्टेण्ड, वॉलपीस, मेट्स आदि का निर्माण करना। जूट के रेशे से चोटी गूंथना एवं सजावटी वस्तुओं का निर्माण करना।

प्रोजेक्ट कार्यः- (कोई एक )
सिलाई- बटन टाँकना, कांज बनाना, हुक लगाना, आई बनाना, तुरपाई करना, कच्चा करना, विभिन्न कपड़े या रूमालों पर बनाकर प्रदर्शित करना। कढ़ाई के विभिन्न टाँकों से आकर्षक रूमाल बनाना । सुतली का उपयोग करके कोई दो कलात्मक वस्तुएँ बनाना। जूट की गुड़िया निर्माण कर उनका उपयोग विभिन्न प्रकार से करना।
नोट : उपरोक्त प्रोजेक्ट कार्य सुझावात्मक है। इसमें शिक्षक शिक्षा संस्थान द्वारा स्थानीय संसाधनों एवं इससे संबंधित विशेषज्ञों की उपलब्धता के आधार पर अन्य प्रोजेक्ट कार्यों को भी जोड़ा जा सकता है।

इकाई-२
वैकल्पिक क्रियाएँ- वैकल्पिक क्रियाओं की सूची में से किन्ही पाँच क्रियाओं का चयन छात्राध्यापक द्वारा किया जाएगा । संस्था, भवन, घर, शाला परिसर की स्वच्छता व सजावट, फर्नीचर का रखरखाव एवं स्वच्छता व्यक्तिगत तथा घरेलू हिसाब-किताब एवं बजट बनाना बांधनी एवं बटिक काष्ठ कला, पशुपालन, बायोगैस प्लांट की जानकारी एवं रखरखाव, घरेलू उपकरणों की जानकारी, रखरखाव व मरम्मत। खिलौना निर्माण। बैंक में खाता खोलना एवं ए.टी. एम. के बारे में जानना। डिजाइनर मोमबत्तियों का निर्माण। खाद्य संरक्षण। मध्यान्ह भोजन एवं उसका प्रबंधन। प्रदर्शनी, पिकनिक यात्रा, भ्रमण आदि का आयोजन। विद्यालय में पुस्तकालय का संचालन एवं प्रबंधन। अनुपयोगी सामग्री से उपयोगी वस्तु निर्माण। संस्था का वार्षिक दिवस, राष्ट्रीय त्यौहार आदि का आयोजन।

**वैकल्पिक क्रियाओं का पाठ्य्यक्रम**

१. संस्था, भवन, घर, शाला परिसर की स्वच्छता व सजावट, फर्नीचर का रखरखाव एवं स्वच्छता
स्वच्छता के लिए कार्य योजना बनाना,
स्वच्छता के लिए आवश्यक सामग्री जुटाना, जीवन में स्वच्छता एवं सफाई का महत्व समझना, घर की स्वच्छता, घर के आस-पास की नालियों की स्वच्छता, सतत् स्वच्छता के लिए कार्यक्रम बनाना व उसका पालन करना,

सजावट- सौंदर्यानुभूति की समझ विकसित करना। नैसर्गिंक सौंदर्य के महत्व को समझना। सजावट की योजना बनाना। संस्था व घर की सजावट के उपयोग में आने वाली वस्तुओं का संग्रह, निर्माण, आकृतियों एवं चित्रों आदि से सजावट करना।

फर्नीचर का रखरखाव :- फर्नीचर का रखरखाव तथा सही ढंग से उपयोग करना। फर्नीचर को समय-समय पर पॉलिश करवाना। फर्नीचर को दीमक, सीलन आदि से बचा कर रखना।

२. व्यक्तिगत तथा घरेलू हिसाब-किताब एवं बजट बनाना- व्यक्तिगत तथा घरेलू बजट बनाने की उपयोगिता। उपयोग में आने वाली सामग्री की सूची तैयार करना। प्रत्येक सामग्री के मूल्य की जानकारी प्राप्त करना। आय व आवश्यकता के अनुसार परिवार का बजट बनाना। आय-व्यय का लेखा-जोखा रखना व महत्व समझाना। वर्तमान आय-व्यय के लेखों की पिछले से तुलना करना।

३. बांधनी एवं बटिकः- बांधनी एवं बटिक का अर्थ, इतिहास। रंग, डिजाइन का ज्ञान कराना। बांधनी एवं बटिक बनाने में उपयोग करने वाली सामग्री का ज्ञान।

४. काष्ठ कला :- लकड़ी की किस्म एवं उसकी उपयोगिता जानना। लकड़ी को सुरक्षित रखने की विधियाँ तथा विभिन्न प्रकार की लकड़ी के गुण जानना। कार्य करते समय सावधानियाँ एवं उपचार । औजारों का वर्गीकरण

करना। औजारों का रखरखाव तथा सही ढंग से उपयोग करना। वार्निश बनाने की विधि तथा पॉलिश करना, स्प्रे पॉलिश बनाना तथा वार्निश पॉलिश व स्प्रे पॉलिश के गुण, अवगुण एवं अंतरों को समझना।

५. पशुपुपालन- पशुपालन के महत्व को समझाना।पशुपालन के लाभ बताना। पशु के बीमार होने पर तुरंत उपचार करवाना। पशुओं के रखरखाव पर ध्यान देना।

६. बायोगैस प्लांट की जानकारी एवं रखरखाव- बायोगैस का महत्व व उपयोग बताना। बायोगैस प्लांट के निर्माण की जानकारी देना। बायोगैस प्लांट के बारे में सावधानी रखना । बायोगैस प्लांट का रख-रखाव बताना।

७. घरेलू उपकरणों की जानकारी, रखरखाव व मरम्मत- घर में उपयोग होने वाले विद्युत उपकरणों की जानकारी। उपकरणों का उपयोग व महत्व। उपकरणों की साफ सफाई व रखरखाव की जानकारी। उपकरणों को उपयोग करने का तरीका।

८. मिट्टी या लकड़ी या फर के खिलौने बनाना- खिलौने बनाने के साधनों की जानकारी। खिलौनों की उपयोगिता व महत्व। खिलौनों का रख-रखाव। खिलौने आकर्षक बनाना। खिलौने बनाने वाली सामग्री की जानकारी।

६. बैंक में खाता खोलना एवं ए.टी.एम. की जानकारी- बैंक में खाता खोलने का महत्व। बैंक में खाता खोलने की जानकारी देना। बैंक में खातों के प्रकार बताना। ए.टी.एम. मशीन की जानकारी देना।

१०. डिजाइनर मोमबत्तियों का निर्माण- मोमबत्तियों के निर्माण कार्य में उपयोग आने वाले उपकरणों के बारे में जानना। मोमबत्तियों के निर्माण में उपयोग आने वाली सामग्री की जानकारी। मोमबत्तियों में डालने वाले रंगों के बारे में जानना। मोमबत्तियों की डिजाइनों के बारे में जानना।

११. खाद्य संरक्षण- मानव स्वास्थ्य एवं पर्यावरण की दृष्टि से खाद्य पदार्थों के संरक्षण का ज्ञान ।
खाद्य संरक्षण के लिये उपयोगी उपकरण एवं सामग्री। खाद्य संरक्षण के लिये उपयुक्त स्थान। स्थानीय व घरेलू आवश्यकता के आधार पर खाद्य संरक्षण करना। खाद्य पदार्थों को खराब होने से बचाने के लिए संरक्षण के दौरान रासायनिक व प्राकृतिक उपाय अपनाना।

१२. मध्यान्ह भोजन एवं उसका प्रबंधन- मध्यान्ह भोजन योजना की जानकारी। विद्यालय के समय सारणी में मध्यान्ह भोजन, जलपान का उचित प्रावधान करना। कार्यक्रम के लिए वित्तीय प्रबंध एवं व्यवस्था हेतु कार्य समिति एवं कार्यदल का निर्माण करना। विद्यार्थियों द्वारा भोजन के दौरानहाथ धोने, ठीक ढंग से बैठने, जूठन न छोड़ने, बर्तनों को निश्चित स्थान पर रखने आदि के बारे में जानना।

१३. प्रदर्शनी, पिकनिक, यात्रा भ्रमण आदि का आयोजन- समूह में कार्य विभाजन कर विभिन्न क्रियाकलापों कोसुचारू रूप से करने एवं संपूर्ण आयोजन की योजना का निर्माण करना। प्रदर्शनी के लिए वस्तुओं का संग्रह करना, उनको सुरक्षित रखना। प्रदर्शनी भवन की सफाई एवं साज-सज्जा का प्रबंध करना। शैक्षिक भ्रमण हेतु शैक्षणिक, ऐतिहासिक, प्राकृतिक, व्यापारिक स्थलोंको देखने के उद्देश्यों को निश्चित करना एवं स्थान का चयन करना। भ्रमण हेतु बजट निर्माण एवं धनराशि का प्रबंधन, भ्रमण हेतु समय सारणी व आवश्यक सामग्री की चेकलिस्ट बनाना।

१४. विद्यालय में पुरुस्तकालय का संचालन एवं प्रबंधन- विद्यालय में पुस्तकालय का महत्व एवं उद्देश्यों को जानना। पुस्तकालय के लिए आवश्यक पुस्तकों का निर्धारण। पुस्तकों को क्रय करने की व्यवस्था। विद्यार्थी, अध्यापक ग्रामीणों की आवश्यकता आधारित पुस्तकें क्रय करना। पुस्तकों के संग्रह हेतु पंजी का निर्धारण करना। पुस्तकालय हेतु समिति का निर्माण करना।

१५. अनुपयोगी सामग्री से उपयोगी वस्तु निर्माण- अनुपयोगी सामग्री का उपयोग करने के तरीकों की जानकारी। अनुपयोगी सामग्री को एकत्र कर उसका उपयोग करना। इन वस्तुओं के रखरखाव की व्यवस्था करना। अनुपयोगी सामग्री निर्माण के दौरान उपयोग आने वाले उपकरणों की जानकारी प्राप्त करना। अनुपयोगी सामग्री से उपयोगी सामग्री बनाने में सावधानियों की जानकारी।

१६. संस्था का वार्षिक दिवस, राष्ट्रीय त्यौहार आदि का आयोजन- वार्षिक दिवस व राष्ट्रीय त्यौहारों का महत्व बताना। वार्षिक दिवस व राष्ट्रीय त्यौहारों की कार्ययोजना बनाना। वार्षिक दिवस व राष्ट्रीय त्यौहारों के आयोजन में विद्यार्थियों का सहयोग प्राप्त करना। वार्षिक दिवस व राष्ट्रीय त्यौहारों के संचालन हेतु समिति का गठन करना। विद्यार्थियों को अपने दायित्वों को निभाने हेतु प्रेरित करना।

नोट : उपरोक्त वैकल्पिक क्रियाएँ सुझावात्मक है। इसमें शिक्षक शिक्षा संस्थान द्वारा स्थानीय संसाधनों और कौशल से संबंधित विशेषज्ञों की उपलब्धता के आधार पर अन्य वैकल्पिक क्रियाओं को भी जोड़ा जा सकता है।

**संदर्भ ग्रंथ (Bibliography) :-**

कार्यानुभव शिक्षा- राधा प्रकाशन मंदिर प्रा.लि., आगरा प्रो श्रीकृष्ण दुबे, प्रो.एच.एस. शर्मा । प्रोडक्शन टैक्नोलाजी ऑफ वेजीटेबल क्राप्स - डॉ. एस.पी.सिंह। वेजीटेबल प्रोडक्शन- डॉ. डी.व्ही.एस.चौहान। फ्लोरीकल्चर प्रोडक्शन- टी.के. बोस। हैण्ड बुक ऑफ हार्टीकल्चर- डॉ. के.एन. चढ्ढा।

# शाला इंटर्नशिप
# (D.EL.ED.-112)

| Course code | Title of the Paper | Distribution of Marks | | | | | | | | Grand Total (i= d+h) | Duration of Exam |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Theory | | MST (c) | Total (d = a+c) | Practical | | TW (g) | Total (h= e+g ) | | |
| | | Max (a) | Min (b) | | | Max (e) | Min (f) | | | | |
| D.EL.ED-112 | शाला इंटर्नशिप | - | - | - | - | 15 | - | 15 | 30 | 30 | 3 Hours |

प्रस्तावनाः-

शाला इंटर्नशिप कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य छात्राध्यापकों को अभ्यास के लिए अर्थपूर्ण शिक्षण अनुभव के अवसर उपलब्ध कराना है।यह कार्यक्रम विद्यालय की समस्त शैक्षिक गतिविधियों को सीखने के अवसरछात्राध्यापकों को प्रदान करता है। छात्राध्यापक शालेय गतिविधियों में एक नियमित शिक्षक की तरह सक्रिय भागीदारी करते हुए अपनी सृजनशीलता को बढ़ा ता है,। इस उद्देश्य की प्रतिपूर्ति के लिए आवश्यक है किकार्यक्रम में छात्राध्यापकों को शाला में भागीदारी के अवसर और सृजनात्मक नवाचारो की स्वतंत्रता मिले, साथ ही बच्चों को भी नवाचारी शिक्षण पद्धतियों का लाभ प्राप्त हो सकें। भावी शिक्षक तैयार करने में शाला इंटर्नशिप कार्यक्रम की महत्वपूर्ण भूमिका तो है ही, लेकिन यह कार्य चुनौतीपूर्ण भी हैं। एन.सी.एफ. २००५ में शिक्षक को एक सशक्त और पेशेवर शिक्षक के रुप में परिकल्पित किया गया है। शिक्षक की व्यावसायिक तैयारी के लिए एन.सी.एफ.टी.ई. २००६ ने भी कई सुझाव दिए है, जिसे शाला इंटर्नशिप कार्यक्रम की सहायता से छात्राध्यापकको शिक्षा के सिद्धांतों के साथ-साथ शाला में सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को समझने के अवसर दिए जाए।

यह कार्यक्रम पूर्णतः क्षेत्र आधारित है, इसलिए छात्राध्यापकों को सीधे समस्याओं से जूझते हुए सीखने का अनुभव मिलेगा।छात्राध्यापक को कक्षा में पढ़े गए सैद्धांतिक पक्षों को विद्यालय में परखने के अवसर मिलेगें साथ ही साथ बच्चों व कक्षागत प्रक्रियाओं को समझने में वे सैद्धांतिक शिक्षण पद्धतियों का उपयोग करने में समर्थ हो सकेंगें। शाला इंटर्नशिप कार्यक्रम अन्तर्गत छात्राध्यापक से अनेक अपेक्षाएँ है, जिन्हें उसे दोनों वर्षों में प्राप्त करना होगा। प्रथम वर्ष में विशेष ध्यान इस बात पर दिया जाएगा कि छात्राध्यापक का परिचय विद्यालय से, विद्यालय के वातावरण से, बच्चों को समझने तथा सीखने-सिखाने की प्रक्रिया से हो।द्वितीय वर्ष में यह अपेक्षित है कि छात्राध्यापक विद्यालय में एक नियमित शिक्षक की भांति कार्य करें किंतु इसमें उनकी सहायता शिक्षक प्रशिक्षक संस्थाएँ अपने अकादमिक पर्यवेक्षकों के मार्गदर्शन और फीड बैक के साथ करेंगी।

## शाला में इंटर्नशिप कार्यक्रम -प्रथम वर्ष

विशिष्ट उद्देश्य :-

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया तथा छात्रों की गतिविधियों का शाला में अवलोकन करना। बच्चों से जुड़कर उनकी सामाजिक,आर्थिक व सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को जानकर बच्चों से प्रभावी तरीके से बातचीत कर पाना। पाठ्य पुस्तकों एवं स्रोत संदर्भ सामग्रियों का बाल-विकास एवं शिक्षण पद्धतियों के संदर्भ में विश्लेषण कर मूल्यांकन एवं समीक्षाकरना। बाल साहित्य, पाठ्यपुस्तकें, गतिविधियाँ, भ्रमण तथा खेल जैसे उपलब्ध स्रोत सामग्री के साथ अधिगम दृष्टि विकसित करना। नवाचारी केंद्रों में सीखे गए सैद्धांतिक ज्ञान का नियमित अभ्यास में परिलक्षित होना। विद्यालय के प्रभावी प्रबंधन व संचालन के संदर्भ में समुदाय की भूमिका को समझना। विभिन्न विषयों को पढ़ाने की योजना बनाकर उसका कक्षा में क्रियान्वयन करना। शिक्षण-प्रक्रिया में सतत् एवं व्यापक मूल्याकंन के विभिन्न तरीकों को समझना एवं नए तरीके खोजना। विद्यालय के वातावरण को समझना व विद्यालय की परिस्थितियों के अनुसार नवाचार हेतु अभिप्रेरित होना, चुनौतियों को स्वीकारना।

उक्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए 70 दिवस के शिक्षण में इंटर्नशिप कार्यक्रम को 3 चरणों में विभक्त किया गया है

### शाला में इंटर्नशिप कार्यक्रम-70 दिवस

| चरण | कार्यक्रम एवं गतिविधियाँ | दिवस |
|---|---|---|
| प्रथम | इंटर्नशिप की पूर्व गतिविधियाँ (तैयारी) | 30 |
| द्वितीय | इंटर्नशिप दौरान गतिविधियाँ (शाला का वास्तविक अनुभव ) | 40 |
| तृतीय | इंटर्नशिप के पश्चात की गतिविधियॉ (समालोचनात्मक चिंतन) | - |

### प्रथम चरण (संस्थान स्तर पर)

| क्रमांक | गतिविधि का नाम | दिवस |
|---|---|---|
| | इंटर्नशिप की पूर्व (तैयारी) | |
| **1-** | संपूर्ण इंटर्नशिप कार्यक्रम पर उन्मुखीकरण एवं अभ्यास हेतु विद्यालयों का चयन-संस्थान द्वारा | **01** |
| **2-** | सस्थान के द्वारा माइक्रो टीचिंग के कौशलों पर उन्मुखीकरण | **10** |
| **3-** | पाठ्य पुस्तकों (अंग्रेजी/तृतीय भाषा, विज्ञान/सा.विज्ञान/पर्यावरण विज्ञान) तथा स्रोत सामग्री के समालोचनात्मक विश्लेषण पर कार्यशाला | **02** |
| **4-** | स्रोत सामग्री की उपलब्धता तथा विकास एवं शिक्षण अधिगम सामग्री निर्माण पर कार्यशाला | **02** |
| **5-** | कक्षागत प्रक्रियाओं पर आधारित क्रियात्मक शोध पर कार्यशाला | **02** |
| **6-** | सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन पर उन्मुखीकरण | **02** |
| **7-** | इकाई योजना एवं पाठ योजना निर्माण (हिन्दी/एवं गणित) कार्यशाला(निर्माणवाद पर आधारित पाठप्रदर्शन सहित) | **05** |
| **8-** | चयनित विद्यालय के संस्था प्रमुखों का उन्मुखीकरण (इंटर्नशिप गतिविधियों से परिचय, मूल्यांकन प्रपत्र, संस्था प्रमुख की भूमिका पर चर्चा) | **01** |
| **9-** | छात्राअध्यापक,मेंटर (आवंटित कक्षा का शिक्षक/विषय शिक्षक एवं संस्थान सुपरवाइजर (विषय विशेषज्ञ) का उन्मुखीकरण (प्रत्येक की भूमिका पर चर्चा)। को टीचिंग अवधारणा (नवाचारी पद्धति),मूल्यांकन अवधारणा (रूब्रिक पर आधारित) पर प्रस्तुतिकरण । | **04** |
| **10-** | 'दैनंदिनी एवं रिफ्लेक्टिव जर्नल पर चर्चा | **01** |
| | योग | **30** |

‘‘इंटर्नशिप की पूर्व गतिविधियाँ’’ कार्यक्रम पर छात्राध्यापकों के द्वारा दैनंदिनी एवं रिफ्लेक्टिव जर्नल पर लेखन कार्य करवाया जा सकता है, जिस पर चर्चा कर छात्राध्यापकों को फीड बैक दिया जा सकता है इसकी उपयोगिता इंटर्नशिप के दौरान परिलक्षित होना चाहिए ।

## द्वितीय चरण (शाला स्तर पर)

| इंटर्नशिप दौरान गतिविधियाँ (शाला का वास्तविक अनुभव ) | | |
|---|---|---|
| क्रमांक | गतिविधि का नाम | कुल कार्य दिवस 40 |
| **1-** | चयनित शाला का संपूर्ण अवलोकन, कक्षा अवलोकन एवं सीखने-सिखाने के अनुभव पर प्रतिवेदन | |
| **2-** | विद्यालय अभिलेखों का अवलोकन करना एवं संधारण की प्रक्रिया को सीखना | |
| **3-** | कक्षागत प्रक्रियाओं पर आधारित क्रियात्मक शोध कार्य | |
| **4-** | पाठ्य पुस्तकों (प्राथमिक स्तर-हिन्दी/गणित/पर्यावरण अध्ययन) एवं एवं उपलब्ध स्रोत सामग्री का विश्लेषण करना तथा स्रोत सामग्री का विकासकरना | |
| **5-** | विद्यालयों की गतिविधियों में भाग लेना (प्रार्थनासभा, खेलकूद, स्काउटिंग, विज्ञान क्लब, एवं मेले पर्यावरण क्लब, पुस्तकालय सांस्कृतिक, सामाजिक गतिविधियां, ” पी.टी.एम. एवं. ”’ एस .एम. सी. में सहभागिता ) | |
| **6-** | नवाचारी अधिगम केंद्रों का भ्रमण कर रिपोर्ट लिखना। | |
| **7-** | इकाई योजना निर्माण करना। | |
| **8-** | ””पाठ योजनाओं का निर्माण एवं प्रस्तुतीकरण। (हिन्दी की २०-पाठ योजनाएँ शिक्षण अधिगम सामग्री सहित तथा १०-कक्षा अवलोकन एवं गणित की २०-पाठ योजनाएं शिक्षण अधिगम सामग्री सहित तथा १०-कक्षा अवलोकन) | |
| **9-** | सी.सी.ई. आधारित छात्रों का मूल्यांकन तथा पोर्टफोलियो का निर्माण करना | |
| **10-** | संस्थान पर्यवेक्षक (सुपरवाईजर) द्वारा इंटर्नशिप कार्यक्रम का पर्यवेक्षण करना (कम से कम हिन्दी की ५- पाठ योजना एवं गणित की ५-पाठ योजना का पर्यवेक्षण) | |
| **11-** | *****दैनंदिनी एवं रिफ्लेक्टिव जर्नल लिखना। | |

❖ छात्राध्यापक प्रत्येक सप्ताह ४ दिवस शाला में इंटर्नशिप के पश्चात डाइट में अपने शिक्षक प्रशिक्षक से चर्चा कर प्राप्त अनुभव पर फीड बैक प्राप्त करेगा,जिसे अगले सप्ताह अपनी पाठ योजना के प्रदर्शन के दौरान रिफ्लेक्ट कर सकेगा। शाला में अनुभव के कुल ४० कार्यदिवस होना अनिवार्य है।

" पेरेंट टीचर मीटिंग
''' स्कूलूल मेनेजमेंट कमेटी
'''' छात्राध्यापक एक कार्यदिवस में अधिकतम दो पाठों का अध्यापन अभ्यास एवं एक पाठ का कक्षा अवलोकन कर सकते हैं।।
''''' दैनंदिनी प्रतिदिन जबकि रिफ्लेक्टिव जर्नल के अंतर्गत साप्ताहिक अधिगम समीक्षा लिखना है।

## तृतीय चरण(संस्थान स्तर पर)

| क्रमांक | गतिविधि का नाम |
|---|---|
| 1- | संस्थान में इंटर्नशिप के अनुभवों पर परिचर्चा (समझ का विकास व चुनौतियां) |
| 2- | सहायक सामग्री की प्रदर्शनी एवं मूल्यांकन |
| 3- | रिफलेक्टिव जर्नल व पाठ्य पुस्तक/स्रोत सामग्री के विश्लेषण से प्राप्त परिणामों को छात्र अध्यापकों के पीयर ग्रुप में साझा (शेयरिंग) करना |

## शाला इंटर्नशिप कार्यक्रम-प्रथम वर्ष
## मूल्यांकन योजना

| क्र. | गतिविधि का नाम | आंतरिक मूल्यांकन | | बाह्य मूल्यांकन | | योग |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | शाला प्रमुख द्वारा | संस्थान के विषय विशेषज्ञ के द्वारा | मौखिक (वायबा) | प्रत्यक्ष अवलोकन एवं अभिलेख आधारित | |
| **1-** | शाला अवलोकन अनुभव पर प्रतिवेदन | **05** | – | – | – | **05** |
| **2-** | विद्यालय की गतिविधियों में सहभागिता पर आधारित मूल्यांकन | **05** | – | – | – | **05** |
| **3-** | क्रियात्मक अनुसंधान प्रतिवेदन | – | **05** | – | – | **05** |
| **4-** | पाठ्यपुस्तकविश्लेषण(हिन्दी/गणित/पर्यावरण) | – | **05** | – | – | **05** |
| **5-** | इकाई योजना निर्माण | – | **05** | – | – | **05** |
| **6-** | पोर्टफोलियो का मूल्यांकन | **05** | – | – | – | **05** |
| **7-** | नवाचारी केंद्र के भ्रमण पर रिपोर्ट | – | **05** | – | – | **05** |
| **8-** | दैनंदिनी एवं रिफ्लेक्टिव जर्नल | – | **05** | – | – | **05** |
| **9-** | समालोचना पाठ<br>1- हिन्दी-1 पाठ | – | **05** | – | – | **10** |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | **2-** गणित-1 पाठ | | **05** | | | |
| **10-** | अध्यापनअभ्यास अवलोकन(संस्थान सुपरवाइजर द्वारा)<br>1. हिन्दी- 05 पाठ<br>2. गणित- 05 पाठ | – | **05**<br>**05** | – | – | **10** |
| **11-** | पाठयोजना का निर्माण<br>3. हिन्दी- 20 पाठ योजना<br>10 शिक्षण अधिगम सामग्री<br>10 कक्षा अवलोकन सहित<br>4. गणित-20 पाठ योजना<br>10 शिक्षण अधिगम सामग्री<br>10 कक्षा अवलोकन सहित | – | **20**<br>**20** | – | – | **40** |
| **12-** | फाइनल पाठ-योजना<br>1. हिन्दी-1 पाठ<br>2. गणित-1 पाठ | – | – | **10**<br>**10** | **40**<br>**40** | **50**<br>**50** |
| | योग | **15** | **85** | **20** | **80** | **200** |

# SWAMI VIVEKANAND UNIVERSITY,SIRONJA, SAGAR (M.P.)

# SYLLABUS

**For**

**Bachelor of Education (D.EL.Ed.)**

**Course Code : D.EL.ED.**

Department of Education

Faculty of Education & Physical Education

| | | |
|---|---|---|
| Duration of Course | : | 2 Year |
| Examination Mode | : | Yearly |
| Examination System | : | Non Grading |

Swami Vivekanand University, Sironja Sagar (M.P.)2015-2016

# Swami Vivekanand University, Sagar(M.P.)

## सामाजिक, सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में संज्ञान एवं अधिगम
## (D.EL.ED.-201)

| Course code | Title of the Paper | Distribution of Marks | | | | | | | | Grand Total (i= d+h) | Duration of Exam |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Theory | | MST (c) | Total (d = a+c) | Practical | | TW (g) | Total (h= e+g ) | | |
| | | Max (a) | Min (b) | | | Max (e) | Min (f) | | | | |
| D.EL.ED-201 | समाजिक, सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में संज्ञान एवं अधिगम | 70 | 24 | 30 | 100 | - | - | - | - | 100 | 3 Hours |

**UNIT- I** **Marks:14**

शिक्षा मनोविज्ञान– अर्थ, परिभाषा, आवश्यकता एवं महत्त्व। शिक्षा एवं मनोविज्ञान का संबंध एवं शिक्षा मनोविज्ञान की विधियाँ। बुद्धि, अधिगम : अवधारणा एवं परस्पर संबंध। सीखने को प्रभावित करने वाले सकारात्मक और नकारात्मक कारक (अवधान, प्रोत्साहन, रूचि, पुरस्कार एवं दंड)। सृजनात्मकता : अर्थ एवं परिभाषा, सृजनात्मक बालक की पहचान, शिक्षा में सृजनात्मकता की उपयोगिता।

**UNIT- II** **Marks:14**

संज्ञान एवं अधिगम– व्यवहारवाद के नियम, सिद्धांत एवं उनकी समालोचना (पावलोव, स्किनर, थॉर्नडाइक, कोहलर के संदर्भ में )। अधिगम की प्रक्रिया, प्रकार एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में सीखने का महत्त्व। निर्माणवाद : परिचय, जीन पियाजे के संदर्भ में संज्ञानात्मक विकास का ढाँचा व प्रक्रिया। विभिन्न अवस्थाओं में विचारों की विशेषताएँ एवं संज्ञानात्मक द्वंद्व। वायगॉट्स्की का सिद्धांत : परिचय, झेड.पी.डी (Zone of Proximal Develpoment) विकास के संदर्भ में उपकरण **(Tools)** एवं प्रतीकों का महत्त्व। सूचना प्रक्रिया उपागमः मस्तिष्क की आधारभूत संरचना, कार्यरत स्मृति, दीर्घकालीन स्मृति, अवधान, एनकोडिंग, पुनः प्राप्ति (Retrieval), ज्ञान की संरचना (Organization) (Declarative Memory), स्कीमा (Schema change) या अवधारणात्मक परिवर्तन : कैसे ये सतत विकसित होते हैं? संज्ञानात्मक विकास में व्यक्तिगत एवं सामाजिक.सांस्कृतिक अंतर : अधिगम की कठिनाइयों को समझना, पृथक्करण (Exclusion), समावेशन (Inclusion) एवं प्रभाव (lmpact)।

**UNIT- III** **Marks:14**

व्यक्तित्व विकास में खेल की भूमिका– खेल का अर्थ, विशेषताएँ, महत्त्व एवं प्रकार। व्यक्तित्त्व विकास में खेल की भूमिका : बच्चों के शारीरिक, सामाजिक, संवेगात्मक, ज्ञानात्मक, भाषायी एवं गामक विकास में बच्चों के खेल में सांस्कृतिक, सामाजिक एवं आर्थिक आधार पर अंतर। खेल एवं समूह गतिविधि, खेलों के नियम, खेलों के दौरान बच्चे आपसी मनमुटाव एवं मतभेद समाप्त करना कैसे सीखते है?

**UNIT- IV** **Marks:14**

भाषा एवं संचार– बच्चे संप्रेषण (Communicate) कैसे करते हैं ? भाषा विकास के विविध दृष्टिकोण (बच्चे प्रारंभिक अवस्था में भाषा कैसे सीखते हैं, के संदर्भ में) स्किनर, बांडुरा एवं वाल्टर्स के सामाजिक अधिगम सिद्धांत,नैटिविस्ट– चौम्साकिअन पर्सपैक्टिव। व्यवहारवाद की समालोचना के संदर्भ में उक्त सिद्धांतों की तुलना।

भाषा के प्रयोग : Turn Taking, अन्तः क्रिया, वार्तालाप, श्रवण।

भाषा में सामाजिक, सांस्कृतिक भिन्नता :Accents (लहजे) संप्रेषण में अन्तर, भाषिक ध्वनि संबंधी भिन्नता, बहु संस्कृतीय कक्षा के लिए निहितार्थ । द्विभाषी या त्रिभाषी बच्चे : शिक्षकों के लिए निहितार्थ– बहुभाषी कक्षाकक्ष, कहानी कथन (सीखने–सिखाने के उपकरण के रूप में) ।

**UNIT- V** **Marks:14**

आत्मज्ञान एवं नैतिक विकास –

स्वानुभूति : आत्मवर्णन, आत्म–पहचान, स्व–अवधारणा, आत्म–सम्मान, सामाजिक तुलना आन्तरिकीकरणद ;पदजमतदंसप्रंजपवद द्ध एवं आत्म–नियंत्रण। नैतिक विकास : कोहलबर्ग एवं कैरोल गिलिगैन की समालोचना के विशेष संदर्भ में, नैतिक तर्क में सांस्कृतिक विभिन्नता। व्यक्तित्व, अभिरूचि एवं रुचि का विकास

## सत्रगत कार्य (**Assignments)**

1 सृजनात्मक परीक्षण द्वारा किन्ही पाँच बच्चों की सृजनात्मकता की पहचान करना।
2 किसी शैक्षिक खेल का निर्माण कर कक्षा में उसका उपयोग करते हुए छात्रों का मूल्यांकन करना।
3 नैतिक विकास हेतु मूल्यपरक लघु कथाओं का संग्रह करना।
4 सीखने से संबंधित विभिन्न विषयों पर सामूहिक चर्चा कराना और प्रतिवेदन तैयार करना।
5 प्रारंभिक स्तर के पाँच बच्चों के अशाब्दिक बुध्दि परीक्षण द्वरा बुध्दिलब्धि ज्ञात करना।
6 विभिन्न संज्ञानात्मक चरणों को समझने के लिए व्यक्तिगत और सामूहिक प्रस्तुतीकरण का आयोजन करके आलेख तैयार करना।
7 विभिन्न गतिविधियों के द्वारा बालकों के सीखने की अलग–अलग क्षमता का उल्लेख करते हुए सुझाव सहित आलेख तैयार करना।
8 त्यौहार और उत्सवों का आयोजन कर बालकों की समायोजन क्षमता का प्रेक्षण कर निष्कर्ष निकालना।
9 किसी अंतर्मुखी बालक की केस स्टडी कर रिपोर्ट तैयार करना।
10 आत्म–नियंत्रण के अभ्यास के लिए योगासन कराना और मुख्य आसनों के चित्र बनाना।

## पाठ्यक्रम की अंतरण की विधियाँ (**Mode of Transaction)**

अवधारणात्मक स्पष्टता के लिये कक्षागत चर्चाएँ की जाएँगी। पाठ्य वस्तु/पेपर का गहन वाचन। सूचना व सप्रेषण तकनीकी का उपयोग। सत्रगत कार्य में संबधित मुद्दों और संदर्भों पर व्यक्तिगत अथवा समूह में प्रस्तुतीकरण देना। सैद्धांतिक और व्यावहारिक गतिविधियाँ/अभ्यास/खोज यात्रा और विश्लेषण, अवलोकन से प्राप्त बातों से अर्थ निकालना व्यवस्थित आँकड़े तैयार करना। सेमीनार, प्रोजेक्ट कार्य, कार्यशाला शिक्षण, ब्रेन स्टोर्मिंग, रोल प्ले आदि ।

## संदर्भ ग्रंथों की सूची (**Bibliography**)

बिस्ट, अभारानी (प्रथम संस्करण) ,बाल मनोविज्ञान, आगरा, विनोद पुस्तक मंडल।
भटनागर, सुरेश ( तृतीय संस्करण) शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का विकास, दिल्ली रू आर. एल. बुक डिपो।
भटनागर, वी (द्वितीय संस्करण) शिक्षा मनोविज्ञान, दिल्ली, आर. एल. बुक डिपो।
जीत, योगेन्द्र (प्रथम संस्करण) बाल मनोविज्ञान, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर।
मंगल, एस. के. (द्वितीय संस्करण )शिक्षा मनोविज्ञान, आगरापी.एच.आई.लर्निंग पी .एल.।
माथुर, एस. एस. (द्वितीय संस्करण) शिक्षा मनोविज्ञान, आगरा , विनोद पुस्तक मंदिर।
पाठक ,पी. डी. (चालीसवां संस्करण) शिक्षा मनोविज्ञान, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर।
पाण्डेय, रामशकल ( तृतीय संस्करण) शिक्षा मनोविज्ञान, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर।
शर्मा, आर. (प्रथम संस्करण ) शिक्षा अधिगम मनोविज्ञान, आर. लाल.बुक डिपो।
शर्मा, वी. (पंचम संस्करण) अधिगम तथा विकास का मनोविज्ञान, आर. लाल.बुक डिपो।
वर्मा, प्रीति (प्रथम संस्करण) बाल मनोविज्ञान, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर।
उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान डॉ .एस .पी .गुप्ता ,डॉ.,अलका गुप्ता।
Mind in Society –Lev Vygotsky (Published by Harvard university press).
Educational Psychology o"Kelly.
Educational Psychology , S.K. Mangal.

# शिक्षक और शालेय संस्कृति
# (D.EL.ED.-202)

| Course code | Title of the Paper | Distribution of Marks | | | | | | | | Grand Total (i= d+h) | Duration of Exam |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Theory | | MST (c) | Total (d = a+c) | Practical | | TW (g) | Total (h= e+g ) | | |
| | | Max (a) | Min (b) | | | Max (e) | Min (f) | | | | |
| D.EL.ED-202 | शिक्षक और शालेय संस्कृति | 35 | 12 | 15 | 50 | - | - | - | - | 50 | 3 Hours |

**UNIT- I** **Marks:12**

शिक्षा एवं शिक्षक के प्रति दृष्टिकोण– अग्रणी शिक्षा शास्त्रियों के शैक्षिक दृष्टिकोण । बदलते संदर्भ में शिक्षक की भूमिका एवं उत्तरदायित्व। एक अच्छे सुविधादाता (facilatator) के रूप में शिक्षक में आवश्यक गुणों और कौशलों का विकास। व्यक्तिगत दृष्टिकोण और उसमें शिक्षण अधिगम प्रक्रिया को जानना और समझना। रोल मॉडल के बारे में शिक्षकों के अभिलाक्षणिक गुणों के प्रभाव को समझना और उनको साझा करना।

**UNIT- II** **Marks:12**

शालेय एवं कक्षा संस्कृति– कक्षा संस्कृति निर्मित करने में शिक्षक की भूमिका। कक्षा संस्कृति में नवाचार–वैकल्पिक शिक्षा एवं कक्षा संस्कृति। शालेय एवं कक्षा संस्कृति–अवधारणा एवं समकालीन संदर्भ पर एक दृष्टि। कक्षा संस्कृति के कुछ महत्त्वपूर्ण अवयव– भय और विश्वास, प्रतिस्पर्धा और सहयोग, स्वतंत्रता और अनुशासन, समूह निर्माण एवं समूह कार्य, द्विपक्षीय संप्रेषण, शिक्षकों और विद्यार्थियों के मध्य शक्ति समीकरण/सामंजस्य के मुद्दे इत्यादि। विद्यालय संस्कृति को प्रभावित करने वाले कारक–सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक कारक, व्यक्तिगत भिन्नताएँ, अंधविश्वास, पारंपरिक धार्मिकता, तार्किकता, नैतिकता, आध्यात्मिक विज्ञान के मुद्दे इत्यादि।

**UNIT- III** **Marks:11**

क्रियात्मक अनुसुंधान– क्रियात्मक अनुसंधान– क्यों, क्या और कैसे ? शालेय व कक्षा संस्कृति के अवयव के रूप में क्रियात्मक अनुसंधान।

## सत्रगत कार्य(Assignments)

किन्हीं दो विद्यालयों की शालेय संस्कृति का तुलनात्मक अध्ययन कीजिए। विद्यालय संस्कृति को प्रभावित करने वाले विविध कारकों (सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक कारक, आदि) से पड़ने वाले प्रभावों का अवलोकन व तथ्य आधारित वर्णन कीजिए। शालेय संस्कृति के निर्माण में कक्षा शिक्षक की भूमिका एवं व्यवहार पर आलेख लिखिए। शिक्षक व छात्रों के बीच अंतर्संबंध व कक्षागत प्रक्रिया में अन्तरण (ट्रांसेक्शन) के विविध चरणों पर अनुसंधान कर प्रतिवेदन तैयार कीजिए। शाला विकास योजना के निर्माण और क्रियान्वयन के दौरान संभावित टकराव व समस्या निदान पर योजना बनाइए।

## पाठ्यक्रम की अंतरण की विधियाँ (Mode of Transaction)

कक्षा शिक्षण के लिये सक्रिय अधिगम प्रविधि का उपयोग प्रभावी होगा। क्रियात्मक शोध का प्रदर्शन।

इस विषय की कार्यशाला के लिए कोई निर्धारित मानक सामग्री नहीं है। ऐसी अपेक्षा है कि इस क्षेत्र के व्यवसायिक विशेषज्ञों की सहायता से छात्राध्यापकों के लिए विशेष प्रकार की गतिविधियों की रूपरेखा तैयार करवाई जाए। इसमें छात्राध्यापक समसामयिक विषयों को लेकर समूह में या व्यक्तिगत रूप से सुविधादाता के साथ चर्चा करके अपनी समझ बनाएंगे।

# संदर्भ ग्रंथों की सूची (**Bibliography**)

Krishna Murti. J.  On Education, Krishnamurti Foundation Trust.
Shri Aurobindo and Mother, on Education, Pondichery. India, Shri Aurobindo Ashram.
कृष्णकुमार–राज समाज और शिक्षा।
तोतोचान –नेशनल बुक ट्रस्ट।
गिजु भाई बधेका, शिक्षक हों तो।
गिजु भाई बधेका, प्राथमिक शाला में शिक्षक

# Swami Vivekanand University, Sagar(M.P.)

## शालेय संस्कृति, नेतृत्व एवं परिवर्तन
## (D.EL.ED.-203)

| Course code | Title of the Paper | Distribution of Marks | | | | | | | | Grand Total (i= d+h) | Duration of Exam |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Theory | | MST (c) | Total (d = a+c) | Practical | | TW (g) | Total (h= e+g ) | | |
| | | Max (a) | Min (b) | | | Max (e) | Min (f) | | | | |
| D.EL.ED-203 | शालेय संस्कृति, नेतृत्व एवं परिवर्तन | 35 | 12 | 15 | 50 | - | - | - | - | 50 | 3 Hours |

**UNIT- I** **Marks:7**

भारतीय शिक्षातंत्र की संरचना एवं प्रक्रिया (**Structure and Processes of the Indian Education System** )– शिक्षा तंत्र की संरचना– राष्ट्रीय,राज्य एवं जिला स्तर। विभिन्न प्रशासनिक संगठनों के अंतर्गत शालाओं के प्रकार। शिक्षक एवं प्रधानाध्यापक की भूमिका एवं दायित्व। शाला और सहयोगी संगठन के संबंध– शासकीय एवं अशासकीय संगठन। शाला की कार्यप्रणाली को प्रभावित करने वाली शैक्षिक नीतियों की समझ एवं व्याख्या। शाला संस्कृति, संगठन, नेतृत्व और प्रबंधन से आशय।

**UNIT- II** **Marks:7**

शालेय प्रभावशीलता के मापदण्ड (**Standards of School Effectiveness)-** शाला की प्रभावशीलता से आशय एवं उसका आकलन। शालेय संस्कृति एवं शालेय प्रभावशीलता के अंतर्संबंध। शालेय मापदंडों का विकास एवं समझ। शाला एवं कक्षागत प्रबंधन में शिक्षक की भूमिका। कक्षागत संप्रेषण एवं कक्षागत बहुस्तरीय अधिगम। शाला कैलेंडर एवं गतिविधियाँ।

**UNIT- III** **Marks:7**

शाला नेतृत्व एवं प्रबंधन**(School Leadership and Management )-** प्रशासनिक नेतृत्व। टीम नेतृत्व– टीम तैयार करना एवं टीम में कार्य करना। पेडॉगॉज़िकल लीडरशिप (विषयगत क्षेत्र में नेतृत्व)। शालेय शिक्षा में परिवर्तन लाने हेतु नेतृत्व। शालेय संस्कृति में परिवर्तन प्रबंधन।

**UNIT- IV** **Marks:7**

शैक्षिक परिदृश्य में बदलाव हेतु पहल**(Initiatives for Educational Change)-**
शैक्षिक परिवर्तन के विशिष्ट प्रयास : होशंगाबाद विज्ञान शिक्षण कार्यक्रम; ऑपरेशन ब्लैकबोर्ड; शिक्षक समाख्या; डी.पी.ई.पी. एवं सर्व शिक्षा अभियान। शिक्षा में समता की अवधारणा। बालिका शिक्षा हेतु प्रोत्साहन एवं योजनाएँ। शिक्षा एवं शाला विकास से संबंधित मुद्दे।

**UNIT- V** **Marks:7**

शाला विकास में शिक्षकों एवं समुदाय का योगदान**(Contribution of Teachers and Community in School Development)-** शाला विकास में शिक्षक एवं समुदाय के बीच समन्वय की आवश्यकता एवं महत्त्व शाला विकास योजना– क्या, क्यों और कैसे ? शाला विकास योजना– शिक्षक की भूमिका, समुदाय की भूमिका। शासकीय एवं अशासकीय संस्थाओं से सहयोग एवं संवादशीलता।

## पाठ्यक्रम की अंतरण की विधियाँ (**Mode of Transaction)**

1. कक्षागत शिक्षण में संप्रेषण की आधुनिक तकनीकों का उपयोग।
2. द्विपक्षीय संप्रेषण।
3. विषयवस्तु अनरूप समूह कार्य।
4. शाला संचालन प्रक्रिया का अवलोकन और अभिलेखीकरण करना।
5. विषयवस्तु के अनुरूप विभिन्न प्रकार की शालाओं का भ्रमण एवं सूक्ष्म अध्ययन।
6. विशिष्ट पाठ्यवस्तु का गहन अध्ययन।

## सत्रगत कार्य (**Assignments)**

सत्र में एक प्रोजेक्ट कार्य अनिवार्यतः करना होगा। यह प्रोजेक्ट छात्राध्यापकों के अवलोकन कक्षागत विचार–विमर्श, सहभागिता एवं क्षेत्र परीक्षण को प्रदर्शित करने वाला होगा।

सुझावात्मक क्षेत्र :

1. कक्षा व्यवस्थापन
2. संस्था प्रमुख की भूमिका
3. सहयोगी संगठन से अंतःक्रिया
4. शाला विकास की योजना बनाना
5. शाला सुविधाओं की सुलभता सुनिश्चित करने हेतु शालाओं में किए गये नवाचारों का अध्ययन।
6. शाला प्रबंधन में लोकतांत्रिक प्रक्रियाएँ– बाल पंचायत/बाल संसद इत्यादि।
7. विभिन्न विद्यालयों की शालेय संस्कृति का तुलनात्मक अध्ययन।
8. शालेय संस्कृति और शिक्षा की गुणवत्ता में अंतर्संबंधों का अध्ययन।
9. शाला से समुदाय की अपेक्षाएँ एवं अपेक्षानुसार शाला में किए जा रहे प्रयासों का अध्ययन ।

## संदर्भ ग्रंथों की सूची (**Bibliography)**


1. Sood Neelam - Management of School Education in India, Delhi: APH Publishing House, 2003 (NIEPA - 2003)
2. Earley Peter and Dick Weindling – Understanding School Leadership, Sage Publication India Pvt. Ltd., 2004
3.Michael Fullan Educational Leadership, Jossey Bass Publisher, 2006
4. एस.मजूमदार –अधो संरचना एवं शिक्षा प्रशासन।
5. बत्रा, एस. (2003) – शालेय सहयोग के लिये शाला निरीक्षण।
6. आचार्य महेन्द्र देव – विद्यालय प्रबंध, नई दिल्ली राष्ट्रवाणी प्रकाशन, (2005)
7. अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय प्रकाशन – लर्निंग कर्व (सितम्बर 2012) हिंदी अंक 4 –स्कूल नेतृत्व
8-Webliography:http://azimpremjifoundation.org/pdf/LCSchool_LshipHINDI.pdf

# Swami Vivekanand University, Sagar(M.P.)

## संस्कृत भाषा शिक्षण
## (D.EL.ED.-204(I))

| Course code | Title of the Paper | Distribution of Marks | | | | | | | | Grand Total (i= d+h) | Duration of Exam |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Theory | | MST (c) | Total (d = a+c) | Practical | | TW (g) | Total (h= e+g ) | | |
| | | Max (a) | Min (b) | | | Max (e) | Min (f) | | | | |
| D.EL.ED-204(I) | संस्कृत भाषा शिक्षण | 35 | 12 | 15 | 50 | - | - | - | - | 50 | 3 Hours |

### UNIT- I — Marks:9

संस्कृत भाषा एवं साहित्य का सामान्य परिचय– संस्कृत भाषा की आवश्यकता तथा महत्व। संस्कृत भाषा की प्रारंभिक जानकारी वर्ण, स्वर, व्यंजन आदि का ज्ञान। संस्कृत की विभिन्न विधाओं यथा–काव्य, कथा, नाटक, निबंध, पत्र, संस्मरण, प्रहेलिका आदि का परिचय। संस्कृत के गद्य, पद्य एवं चंपू काव्य का परिचय। संस्कृत के प्राचीन साहित्यकारों एवं उनकी रचनाओं का संक्षिप्त परिचय। संस्कृत के आधुनिक रचनाकारों तथा उनकी रचनाओं का संक्षिप्त परिचय। (म.प्र. के संदर्भ में)

### UNIT- II — Marks:9

व्याकरणिक तत्व एवं रचना– संस्कृत भाषा की वर्णमाला, माहेश्वर सूत्र, ध्वनि, उच्चारण, शब्द एवं वाक्य रचना। अनुस्वार, हलंत, विसर्ग का प्रयोग। संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, वचन, कारक, विभक्ति, लिंग, शब्द रूप, धातु रूप, संधि, समास, उपसर्ग, प्रत्यय एवं अव्यय का सामान्य ज्ञान। पर्यायवाची एवं विलोम शब्द, प्रचलित सूक्तियाँ। सामान्य प्रचलित विषयों पर सरल संस्कृत में छोटे निबंध, गीत, कहानियां, प्रहेलिका, विनोद कणिका लिखना। संस्कृत गिनती 1 से 20 तक लिखना।

### UNIT- III — Marks:9

संस्कृत भाषा की शिक्षण विधियाँ– भाषा अनुवाद विधि, दण्डान्वय–खण्डान्वय विधि, आगमन–निगमन विधि, संभाषण विधि, अनुकरण विधि, चित्र वर्णन विधि, कहानी कथन विधि, सक्रिय अधिगम प्रविधि (एएलएम) इत्यादि।

### UNIT- IV — Marks:8

संस्कृत शिक्षण में नवाचार एवं मूल्यांकन– सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन । मूल्यांकन के प्रकार, विशेष शिक्षण। प्रश्न रचना– वस्तुनिष्ठ, लघुत्तरीय, निबंधात्मक। ब्लू–प्रिंट के आधार पर प्रश्न पत्र रचना एवं परिणामों का विश्लेषण, आदर्श उत्तरों की रचना। सहायक शिक्षण सामग्री। दृश्य, श्रव्य एवं दृश्य–श्रव्य माध्यमों का प्रयोग।

### सत्रगत कार्य ( Assignments)

टीप–निम्नलिखित में से कोई दो प्रायोजना कार्य कीजिए– संस्कृत पुस्तकों की सूची बनाइए और उनमें से किसी एक पुस्तक के बारे में अपने विचार लिखिए। किसी कहानी/लोककथा/गीत का संस्कृत में अनुवाद कीजिए। संस्कृत वेबसाइट पर सरल संस्कृत गीत, कहानिया, प्रहसन आदि उपलब्ध है, उनमें से कुछ को संकलित कीजिए। सुभाषितानि के किन्हीं दो श्लोकों पर कहानियाँ लिखें। दैनिक जीवन में प्रचलित शब्दों के संस्कृत नाम खोजकर लिखें। व्याकरण पर आधारित चार्ट निर्माण कीजिए।

# संदर्भ ग्रंथ (**Bibliography)**

संस्कृत व्याकरण प्रवेशिका—लेखक डॉ. बाबूराम सक्सेना,इलाहबाद।
संस्कृत भाषा शिक्षण— रामशकल पाण्डेय, इलाहबाद।
वृहद अनुवाद चंद्रिका—चक्रधर नौटियाल'हंस', मोतीलाल बनारसीदास।
रचना अनुवाद कौमुदी—डॉ. कपिल देव द्विवेदी।
संस्कृत साहित्य का इतिहास—डॉ. बलदेव उपाध्याय, चौखंबा प्रकाशन वाराणसी।
संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास—डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी।
संस्कृत हिन्दी कोश—वामन शिवराम आप्टे, मोतीलाल बनारसीदास।

# Swami Vivekanand University, Sagar(M.P.)

## मराठी भाषा शिक्षण
## (D.EL.ED.-204(II))

| Course code | Title of the Paper | Distribution of Marks | | | | | | | | Grand Total (i= d+h) | Duration of Exam |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Theory | | MST (c) | Total (d = a+c) | Practical | | TW (g) | Total (h= e+g ) | | |
| | | Max (a) | Min (b) | | | Max (e) | Min (f) | | | | |
| D.EL.ED-204(II) | मराठी भाषा शिक्षण | 35 | 12 | 15 | 50 | - | - | - | - | 50 | 3 Hours |

**UNIT- I** **Marks:9**

भाषेची प्रकृति– भाषा म्हणजे काय, भाषेच वैशिष्ट्य, भाषेचे कार्य, भाषा– विचार आणि संप्रेषणाच्या माध्यमाच्या रूपात।

**UNIT- II** **Marks:9**

भाषाविषयक कौशलांचा विकास– ऐका आणि बोला – वर्गात संभाषणाचा महत्व, वर्गात संभाषणानिमित्त गतिविधि,विविध सूचना समजून घेणे। वाचन – वाचन म्हणजे काय, प्राथमिक इयत्तेत वाचन शिकणे, वेगवेगळया प्रकार चे मजकूर (पाठ्य) वाचणे। लेखन– लेखन म्हणजे काय, वाचन आणि लेखनातील संबंध, भाषा एवं विचाराच्या स्तरावर सुसंबध्द लेखन। विविध लेखन अभ्यास– पत्र, कहाणी, लेख, बातमी, नोंद पुस्तिका वगैरे।

**UNIT- III** **Marks:9**

भाषा शिक्षणाच्या पद्धति/व्याकरण अध्ययन– मराठी भाषा शिक्षणाच्या विविध पद्धतींचे तुलनात्मक अध्ययन। व्यावहारिक व्याकरण शिक्षण अभ्यास इयत्ता (1–5 च्या पुस्तकातील व्याकरण)।

**UNIT- IV** **Marks:8**

भाषेचे मूल्यमापन व नवाचार– मूल्यमापन – मराठी भाषेच्या संदर्भात। सतत व समग्र मूल्यमापन। ब्लूप्रिंट व प्रश्नपत्र निर्माण। समस्यांची जाण व विशेष शिक्षण। दृश्य–श्रव्य माध्यमांचा प्रयोग।

## सत्रगत कार्य (Assignments)

टीप– खालील पैकी कोणते ही दोन उपक्रम (प्रयोजना) करावे। प्रत्येकी 5 अंक निर्धारित आहेत.

1. स्थानिक भाषेतील कहाणीला मराठी भाषेत लिहावे।
2. उपक्रम आधारित शिक्षणातील एक एक पाठयोजना (गघ व पद्य वेगवेगळे) तयारकरावी।
3. शाळेतील पुस्तकालयात उपलब्ध मराठी बाल साहित्यातील पुस्तकें व लेखाकांच्या नावांची यादी तयार करावी। आपल्या आवडीच्या एका पुस्तकाबद्दल आपले विचार लिहावे।
4. तुमच्या शाळेतील पुस्तकालयचा प्रभावी उपयोग व्हावा महणून कार्य योजना तयार करावी।
5. कोणत्याही एक घटकातल्या (यूनिट) कठीण बिंदुच्या निवारणा साठी विशेष शिक्षणाची योजना तयार करणे।
6. स्थानिक –स्थानीय समाजात प्रचलित म्हणी एकत्रित कराव्या।
6. शिक्षण सहज, रुचिकर व प्रभावी बनविण्या साठी वर्ग 1 व 2 साठी अधिगम सामग्रीचा निर्माण करणे। 8. बाल साहित्यातील 10 कविता/ 5 कहाण्यांचा संग्रह तयार करावा।

## संदर्भ ग्रंथ (Bibliography)


1. मराठी व्याकरण – मोरेश्वर सखाराम मोरे,
2. सुलभ व्याकरण – श्री शनिवारे,
3. बोबड़ गीते
4. पंचतंत्र मराठी भाषांतर
5. इसप नीती मराठी भाषांत

# Diploma in Elementary Education

2nd Year - 7th Paper

## Pedagogy of Language Urdu

| | |
|---|---|
| جملہ نمبرات | 50 |
| خارجی نمبرات | 35 |
| داخلی نمبرات | 15 |
| جملہ گھنٹے | 70 |

## تعارف: Introduction

تفہیم کے ساتھ سنا، پڑھنا، تصور، غور وفکر، اظہار یعنی گفتگو اور لکھنا، زبان کی خاص مہارتیں ہیں۔ابتدائی سطح کی تعلیم مکمل کرنے والے طلباء سے ان مہارتوں کے حصول کی توقع کی جاتی ہے۔طلباء میں مطلوبہ لسانی صلاحیتوں کے فروغ کی ذمہ داری خاص طور سے اساتذہ کی ہوتی ہے، دیگر زبان کے اساتذہ کی طرح، اردو کے اساتذہ کو، اردو زبان کا علم ہونے کے علاوہ اُسے طلباء میں منتقل کرنے کی صلاحیت کا ہونا لازمی ہے۔اس نقطۂ نظر سے زبان کے زیر تربیت اساتذہ کی ذمہ داری دگنی ہوجاتی ہے۔ایک جانب اسے زبان کے علم میں عبور حاصل کرنا ہوتا ہے، اور دوسری جانب تدریسی اکتسابی عمل میں طلباء کے اکتساب میں اس کا اطلاق کرنا ہوتا ہے۔

استاذ کا خاص کام طلباء کی عمر، جماعت اور ذہنی سطح کے مطابق موادِ مضمون کی پیش کش کرنا ہوتا ہے، اس کام میں معلمین کو مختلف کردار جیسے: دوست، معاون، محرک اور مواقع فراہم کرنے والا وغیرہ وغیرہ ادا کرنا ہوتے ہیں۔کامیاب معلم وہ ہے جو خود کو علم کا ایک منبع تصور کرنے کے بجائے طلباء کو علم کی تخلیق کرنے کے مواقع فراہم کرے۔اردو زبان کے اس نصاب کے ذریعہ معلم طالب علم کے کردار میں درج ذیل تبدیلیوں کی توقع کی جاتی ہے۔

## مقاصدِ خصوصی: Specific Objectives

اس نصاب کے ذریعہ معلم طالب علم (زیر تربیت اساتذہ) میں:

- ☆ تنقیدی مطالعہ کی صلاحیت کو فروغ دینا۔
- ☆ مختصر اور سلیس اردو لکھنے کی صلاحیت کو فروغ دینا۔
- ☆ اردو زبان کے لئے جذبۂ استحسان پیدا کرنا۔
- ☆ درسی کتب کے علاوہ اکتساب کے متنوع ذرائع کا استعمال کرنا سکھانا۔
- ☆ تدریس کے مختلف طریقے سکھانا اور ضرورت و مناسبت کے مطابق ان کا اطلاق کرنا۔
- ☆ مسلسل اور جامع جانچ کے فروغ کے لئے مختلف ریکارڈ تیار کرنا۔
- ☆ اردو زبان کی بنیادی مہارتوں میں عبور حاصل کرنا اور اردو قواعد کی فہم کو فروغ دینا۔

☆ دیگرزبانوں اوراقلیتوں کی زبانوں کی جانب احترام کا جذبہ پیدا کرنا۔
☆ مقامی، علاقائی اورقومی زبانوں کی جانب رغبت پیدا کرنا۔
☆ غیردرسی کتب اوراد ب کا مطالعہ کرنے کی عادت پیدا کرنا۔

## اکائی وار نمبرات اور گھنٹے

| نمبرشمار | اکائی کا نام | نمبرات | گھنٹے |
|---|---|---|---|
| 1 | زبان کی نوعیت | 5 | 12 |
| 2 | اردو زبان کی بنیادی مہارتیں | 5 | 12 |
| 3 | تدریسِ اردو کے مقاصد | 5 | 12 |
| 4 | اردو زبان کے تدریسی طریقے اور تدریسی اکتسابی وسائل (TLR) | 12 | 20 |
| 5 | تعینِ قدر: آلات وتکنیک | 8 | 14 |
| | کل | 35 | 70 |

### اکائی (ا): زبان کی نوعیت گھنٹے: 12 نمبرات: 5

☆ زبان کا مفہوم، تعریف، نوعیت اور روزمرہ زندگی میں زبان کی اہمیت۔
☆ بولی اورزبان میں فرق، مدھیہ پردیش کی بولیاں، مقامی بولی، علاقائی بولی، قومی زبان، بین الاقوامی زبان کا تصور۔
☆ اردوزبان کی ابتدااورارتقاء۔
☆ اردوزبان کی تدریس کی اہمیت۔
☆ اردوزبان کا مقام۔ دستورِ ہند اور موجودہ تعلیمی نظام کے تناظر میں۔

### اکائی (۲): اردوزبان کی بنیادی مہارتیں گھنٹے: 12 نمبرات: 5

☆ سنا: تدریسی طریقے، مہارت کوفروغ دینے کی مختلف سرگرمیاں۔
☆ بولنا: تدریسی طریقے، مہارت کوفروغ دینے کی مختلف سرگرمیاں۔
☆ پڑھنا: تدریسی طریقے، مہارت کوفروغ دینے کی مختلف سرگرمیاں۔
☆ لکھنا: تدریسی طریقے، مہارت کوفروغ دینے کی مختلف سرگرمیاں۔

### اکائی (۳): تدریسِ اردو کے مقاصد گھنٹے: 12 نمبرات: 5

☆ ابتدائی سطح پراردوزبان کی تدریس کے مقاصد۔
☆ تدریس اردو کے عمومی مقاصد۔
☆ بلوم کی تعلیمی مقاصد کی درجہ بندی۔

☆ تدریس اردو کے خصوصی مقاصد۔

☆ خصوصی مقاصد کو عملی افعال کی شکل میں لکھنا۔

**اکائی (۴): اردو زبان کے تدریسی طریقے اور تدریسی اکتسابی وسائل** گھنٹے: 20 نمبرات: 12

☆ اردو اصنافِ نثر کے تدریسی طریقے۔

☆ اردو اصنافِ نظم کے تدریسی طریقے۔

☆ اردو قواعد کے تدریسی طریقے۔

☆ اردو معلم کے اوصاف۔

☆ ایک اچھی درسی کتاب کی خصوصیات۔

☆ تدریسی اکتسابی وسائل کی تشکیل اور استعمال۔

**اکائی (۵): تعینِ قدر: آلات وتکنیک** گھنٹے: 14 نمبرات: 8

☆ پیمائش (Measurement)، اندازۂ قدر (Assessment) اور تعینِ قدر (Evaluation) میں فرق۔

☆ مسلسل جامع تعینِ قدر Continuous Comprehensive Evaluation اور اس کے طریقے۔ جیسے: پورٹ فولیو، پروفائل وغیرہ۔

☆ تشخیصی اور معالجی تعینِ قدر۔

☆ سوالات کی اقسام۔

☆ ایک اچھے سوال نامے کی خصوصیات۔

☆ بلو پرنٹ، اسکولی تحصیلی آزمائش کی تشکیل۔

☆ ایکشن ریسرچ (عملی تحقیق) Action Research

## منتقلی کا طریقہ: Mode of Transaction

طلباء کی فعال شمولیت کے ذریعہ مواد مضمون کی منتقلی درج ذیل طریقوں سے کی جائے گی:

☆ چھوٹے گروہوں میں منتخب متن کے تحت مباحثہ اور تنقیدی مطالعہ۔

☆ طلباء کو لسانی سرگرمیوں کے مواقع فراہم کرنا، جیسے: خطابت، مضمون نویسی، افسانہ نگاری، تلخیص، فی البدیہ تقریر، بیت بازی، ڈرامہ میں اداکاری وغیرہ۔

☆ معلم کے ذریعہ مثالی منصوبۂ سبق کی پیش کش Demostration

☆ بلو پرنٹ اور اسکولی تحصیلی آزمائش کی تشکیل۔

## تفویضات: Assignments

☆ تدریس اردو میں پیش آنے والے مسائل۔

☆ کسی لوک کہانی کا اردو میں ترجمہ اور پیش کش۔

☆ اردو زبان کی مہارتوں کے فروغ کے لئے معاون اشیاء کی تشکیل۔
☆ لسانی وثقافتی صلاحیتوں کے فروغ کے لئے درج ذیل میں سے کسی ایک سرگرمی کا خاکہ بنائیں، جیسے: خطابت، مضمون نگاری، افسانہ نگاری، تلخیص، فی البدیہ تقریر، بیت بازی، ڈرامہ میں اداکاری وغیرہ۔
☆ ادبِ اطفال کی کتابوں اور مصنفوں کے ناموں کی فہرست سازی۔
☆ اردو زبان کو سیکھنے میں پیش آنے والے کسی ایک مسئلہ پر ایکشن ریسرچ کا خاکہ بنانا۔
☆ اردو کی درسی کتاب کا تنقیدی تجزیہ۔
☆ مثالی سوال نامے کی تشکیل CCE کے تناظر میں۔

## مجوزہ مطالعہ جات: Suggested Readings


☆ راجیہ شکشا کیندر کے مختلف اردو ٹریننگ ماڈیولس۔
☆ دوسالہ ڈی ایڈ اردو کے ماڈیولس۔
☆ NCF 2005
☆ بھارتیہ بھاشاؤں کا شکشن۔ راشٹریہ فوکس گروپ کا آدھار پتر۔ NCF 2005
☆ آر ٹی ای (2009)
☆ سلامت اللہ: اردو کیسے پڑھائیں۔
☆ کرشن کمار: بچے کی بھاشا اور ادھیاپک۔
☆ گیجو بھائی: دواسوپن۔
☆ ساجدہ پروین: تدریس زبان اردو۔
☆ معین الدین: اردو زبان کی تدریس۔
☆ بیگ ایم کے (1995): آیئے! اردو سیکھیں، ایجوکیشنل بک ہاؤس، علی گڑھ۔
☆ بُچھا ایم (1998) اور سراج ایم: اردو اصناف نظم ونثر کی تدریس۔ این، سی، پی، یو، ایل، نئی دہلی۔
☆ نارنگ جی سی (2003): اردو کیسے لکھیں؟ این، سی، پی، یو، ایل، نئی دہلی۔
☆ جامعہ ملیہ اسلامیہ (2004): اردو اسکرپٹ تھرو انگلش۔ مکتبہ جامعہ لمیٹیڈ۔
☆ خان آر ایچ (1975): اردو کیسے لکھیں؟ (صحیح املا)۔ مکتبہ جامعہ لمیٹیڈ، نئی دہلی۔
☆ سبزواری ایس (2003): اردو لسانیات، ایجوکیشنل بک ہاؤس، علی گڑھ۔
☆ منظر او (2009): ٹیچنگ آف اردو لینگویج، شپرا پبلی کیشن، نئی دہلی۔
☆ معین الدین 2004: ہم اردو کیسے پڑھائیں؟ مکتبہ جامعہ لمیٹیڈ۔
☆ خان آر ایچ (2001): زبان اور قواعد۔ این، سی، پی، یو، ایل، نئی دہلی۔
☆ نجم السحر اور سعید ایس (2007) تدریسِ اردو۔ پریمیئر پبلیشنگ ہاؤس، حیدرآباد۔

# Swami Vivekanand University, Sagar(M.P.)

## Pedagogy of English
## (D.EL.ED.-205)

| Course code | Title of the Paper | Distribution of Marks | | | | | | | | Grand Total (i= d+h) | Duration of Exam |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Theory | | MST (c) | Total (d = a+c) | Practical | | TW (g) | Total (h= e+g ) | | |
| | | Max (a) | Min (b) | | | Max (e) | Min (f) | | | | |
| D.EL.ED-205 | Padagogy of English | 50 | 18 | 25 | 75 | - | - | - | - | 75 | 3 Hours |

**UNIT- I** **Marks:10**

**Teaching of English at the Elementary Level-** Perspectives of beginning of teaching English at the elementary level(including perspectives on 'appropriate age' for beginning the teaching of English). Learning English in a multi-lingual, multi-cultural Indian context. Mother tongue and second language acquisition and learning; teaching English as a second language.

**UNIT- II** **Marks:10**

**Approaches and Methods of teaching English-** A historical view of English as a second language. Different approaches to teaching of ESL: behaviouristic ( direct method, audio lingual, structural, grammar-translation method); cognitive and constructive approaches ( nature and role of learner, different kinds of learners-young learners, beginners; teaching large classes; sociopsychological factors). Activity Based Learning (ABL), Active Learning Methodology (ALM). Communicative language teaching: focusing on meaning, role of text books and other resources, role of teacher, classroom management .

**UNIT- III** **Marks:10**

**Strategies of teaching English-** Development of listening and speaking skills, role of talk in the classroom( reducing teacher talk time);Total physical response : simple instructions and story telling;Using pair work, group work to encourage speaking;Some activities for the classroom: poems, songs, story telling, role play, situational conversation. Development of vocabulary through pictures, flow charts, language games etc. Development of reading skills; beginning reading, alphabet method, phonetic method; using the word wall, pre-reading, while-reading and post-reading activities; reading aloud and silent reading; practice of skimming, scanning, intensive and extensive reading; comprehension skills-guessing meaning from context. Development of writing skills; providing triggers for writing: brainstorming discussion, mind-mapping; drafting and sequencing, controlled, guided and free writing.

**UNIT- IV** **Marks:10**

**Process and planning-** Unit planning for a learner-centred classroom for teaching different genres/topics: teaching prose:reading aloud, silent reading; comprehension – mind-mapping, summarization, presentation, consolidation; enrichment) ; teaching poetry: recitation; comprehension; appreciation; teaching grammar; presentation, practice, production( making grammar meaningful and fun); teaching composition(controlled, guided, free composition; different forms of composition– paragraph, notice, message, poster, advertisement, diary entry, résumé). Preparation of TLM; low-cost/no-cost, using the classroom as a resource, using ICT. Creating constructivist situations using formats like 5E's (Engage, Explore, Explain, Elaborate, Evaluate) etc.

**UNIT- V** **Marks:10**

**Assessment-**CCE – concept and procedure : assessment for learning in place of assessment of learning; maintaining teacher's diary, anecdotal record; informal feedback from the teacher; measuring progress; using portfolio for subjective assessment.Assessing speaking and listening, reading and writing abilities through CCE. Attitude towards errors and mistakes in second language learning.

## संदर्भ ग्रंथ (**Bibliography)**


1. The Primary English Teacher's Guide Penguin (New edition) : Brewster, E, Girard D, & Ellis G (2004)
2. Tell it again! The new story telling Handbook for Teachers- Penguin: Ellis G Brewster J (2004)
3. National Curriculum Framework, New Delhi, NCERT (2005)
4. Position paper National focus group on "Teaching of English", New Delhi NCERT (2006)
5. Teaching English to Children, London – Longman, Scott, W.A. and Ytreberg, L.H. (1990)

## पर्यावरण अध्ययन शिक्षण
## (D.EL.ED.-206)

| Course code | Title of the Paper | Distribution of Marks | | | | | | | | Grand Total (i= d+h) | Duration of Exam |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Theory | | MST (c) | Total (d = a+c) | Practical | | TW (g) | Total (h= e+g ) | | |
| | | Max (a) | Min (b) | | | Max (e) | Min (f) | | | | |
| D.EL.ED-206 | पर्यावरण अध्ययन शिक्षण | 70 | 24 | 30 | 100 | - | - | - | - | 100 | 3 Hours |

**UNIT- I** **Marks:14**

पर्यावरण अध्ययन की अवधारणा– पर्यावरण शिक्षा का अर्थ, क्षेत्र एवं कौशल। प्रकृति का महत्व, पर्यावरण पाठ्यक्रम की अधोसंरचना, पाठ्यपुस्तक विश्लेषण(प्रमुख बिंदु एवं प्रारूप)। पर्यावरण अध्ययन–पर्यावरण शिक्षा–विज्ञान और सामाजिक विज्ञान की समझ के लिये समग्र क्षेत्र के रूप में।

**UNIT- II** **Marks:14**

विषयवस्तु का कक्षा कक्ष में संपादन (शिक्षण प्रविधियाँ)– कहानी, रोलप्ले, परिचर्चा, एकांकी, अभिनय, फिल्म डॉक्यूमेंटरी, खेल अवलोकन, भ्रमण, सर्वे प्रोजेक्ट, असाइनमेंट, प्रयोग प्रदर्शन एवं समूह, असाइनमेंट प्रयोग प्रदर्शन एवं समूह चर्चा, समस्या– समाधान , आगमन। नोट :–(इन विधियों को निम्नांकित विषयवस्तु के साथ जोडते हुए स्थानीय सामग्री के प्रयोग से उदाहरणार्थ बताया जाए, जिससे कक्षा की पैडागॉगी स्थानीय संस्कृति और परिवेश में समझी जा सके)।

पर्यावरण अध्ययन–पर्यावरण शिक्षा के रूप में–:पर्यावरण शिक्षा की अवधारणा एवं आवश्यकता। पर्यावरण के विभिन्न प्रकार–प्राकृतिक, भौतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक पर्यावरण। पर्यावरणीय मूल्य एवं उनके प्रति बच्चों की जागरूकता, समाज में पर्यावरणीय जागरूकता। पर्यावरणीय प्रदूषण एवं संरक्षण, वर्षा जल संग्रहण। आर्थिक स्थायित्वता (Economic Sustainability) के लिए ऊर्जा के नवीनीकृत और अनवीनीकृत स्रोतों का उपयोग। अपशिष्ट पदार्थों के स्रोत एवं उनका प्रबंधन। पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में योगदान– सुन्दरलाल बहुगुणा, चिपको आंदोलन, मेधा पाटकर, नर्मदा आंदोलन, मोगली उत्सव आदि।

पर्यावरण अध्ययन– विज्ञान के रूप में – भोजन एवं उसके तत्व, शरीर के लिये भोज्य पदार्थों का स्वाथ्यवर्धक संयोजन । हमारी फसलें–उद्योग, कृषि के लिए अनुकूल एवं प्रतिकूल पर्यावरणीय स्थितियाँ। पर्यावरणीय परिवर्तन–ओजोन परत का अपक्षय, अम्ल वर्षा ,ग्लोबल वार्मिंग, ग्रीन हाउस प्रभाव। प्राकृतिक आपदाएँ एवं संरक्षण के उपाय।

पर्यावरण अध्ययन–सामाजिक विज्ञान के रूप में – हमारा ब्रह्माण्ड– सूर्य, चंद्रमा, पृथ्वी की गतियाँ, तारे, ग्रह, उपग्रह, इत्यादि की सामान्य जानकारी । प्राकृतिक परिवर्तन, दिन एवं रात का होना मौसम परिवर्तन, बिजली का चमकना, इन्द्रधनुष का बनना इत्यादि। डेम, खदान (खनिज दोहन) खोदने में समाज के विभिन्न संदर्भों पर पड़ने वाले प्रभावों/दुष्प्रभावों को समझना। (Critical Pedogogy) मध्यप्रदेश का भूगोल एवं धरातली संरचना– पर्वत, पठार, मैदान, नदियाँ, जैव विविधता, खनिज संपदा, यातायात के साधन एवं यातायात सुरक्षा के नियम। हमारी शासन व्यवस्था (पंचायती राज)। नक्शा– कोई जगह कैसे ढूंढें।

**UNIT- III** **Marks:14**

पर्यावरण के संदर्भ में बच्चों की समझ– पियाजे, वायगाट्स्की, ब्रूनर और आसुबेल के परिप्रेक्ष्य में अधिगम। बच्चों के विचार : पूर्वाग्रह एवं परिवर्ती अवधारणाएँ। बच्चों के विचारों की विशेषताएँ , बच्चों के विचारों पर शोध, केस स्टडी। कक्षा शिक्षण के दौरान बच्चों के विचारों की समझ के लिये विभिन्न गतिविधियों का आयोजन।

**UNIT- IV** **Marks:14**

पर्यावरण शिक्षा में आकलन– छात्राध्यापकों द्वारा शाला में बच्चों के आकलन हेतु अपनाई जाने वाली आकलन पद्धतियाँ– फोटोग्राफ, ड्राइंग, वृत्तान्त, बच्चों की परिचिर्चा, समूहकार्य, प्रोजेक्ट, सर्वे प्रश्नोत्तरी में भागीदारी, प्रश्नों के उत्तर खोजना, लिखना और कोलाज बनाना। अभिव्यक्ति, अभिरूचि, लीडरशिप, न्यायप्रियता, समानता, इत्यादि सूचकों पर आधारित बच्चों का प्रगति पत्रक और पोर्टफोलियो तैयार करना।

**UNIT- V** **Marks:14**

पर्यावरण शिक्षण की योजना/पूर्व तैयारी– पाठ्यपुस्तक वाचन एवं विश्लेषण– प्रक्रिया एवं महत्व। विषय प्रकरण से संबंधित Concept map की तैयारी एवं इकाई पाठ योजना का निर्माण। सेमीनार आयोजन के लिए inter disciplinary, Multidisciplinary approach पर आधारित पाठयोजनाओं का निर्माण। स्रोत सामग्री का निर्माण, संग्रह एवं उपयोग, स्थानीय स्रोतों से प्राप्त सामग्री, समाचार पत्र पत्रिकाओं से एकत्रित सामग्री। फिल्म एवं उनकी क्लिपिंग का अधिगम में प्रयोग। आइकॉनिक मैप की तैयारी। इंटर्नशिप के दौरान भुगतान प्रक्रियाओं, अनुभवों पर पुर्नविचार और पत्रिका/जर्नल के रूप मे उनका संधारण। प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु विभिन्न गतिविधियाँ।

प्रयोगिक– (कोई दो) 1. पाठ्य्योजना निर्माण–पर्यावरण की विषयवस्तु पर आधारित पाठयोजनाएँ निर्मित होगी। Inter disciplinary, Multi disciplinary approach पर आधारित पाठयोजनाएँ। ए.एल.एम. आधारित–पाठयोजनाएँ। समस्या समाधान आधारित पाठयोजनाएँ। इन पाठयोजनाओं में अभ्यास के दौरान सूक्ष्म शिक्षण की व्यवस्था करना। 2.प्रोजेक्ट निर्माण – इकोक्लब की स्थापना एवं उसके क्रियाकलापों का निर्धारण जैसे वृक्षारोपण, वृक्षों का रखरखाव आदि। पर्यावरणीय भ्रमण पर रिपोर्ट तैयार करना– ऐतिहासिक, धार्मिक स्थल पर। आसपास की खोज प्रायोजना निर्माण– जलस्त्रोत एवं उनका संरक्षण, फसलें, मिट्टी के प्रकार आदि। अध्यापन अभ्यास के दौरान केस स्टडी– सामाजिक, पर्यावरण के सुधार के संदर्भ में कुपोषित बालक, उग्र/उद्दंड बालक । पाठ्यपुस्तक विश्लेषण– किसी एक पुस्तक का पाठवार विश्लेषण। स्थानीय स्रोतों के संरक्षण हेतु गतिविधियाँ (वादविवाद, प्रहसन नाटिका आदि) तैयार करना।

## पाठ्यक्रम की अंतरण की विधियाँ (**Mode of transaction)**

गतिविधिपूर्ण वातावरण का निर्माण करते हुए आसपास के परिवेश के उदाहरण एवं समस्याओं पर
कक्षाओं में चर्चा एवं स्थानीय क्षेत्रों का भ्रमण कराया जाना। संस्थान में वर्कशॉप, सेमीनार आयोजित करके छोटे–छोटे समूह कार्य कराए जा सकते हैं जैसे पाठ्यपुस्तकों का विश्लेषण, समाचार पत्रिका का लेखन, क्षेत्र भ्रमण की रिपोर्ट का निर्माण आदि। छात्राध्यापकों के साथ शिक्षकों के निरंतर संवाद एवं क्षमता संर्वधन के लिए वाद–विवाद, परिचिर्चा, ड्रॅाइंग, पेंटिंग, फिल्म, डाक्यूमेंट्री, आसपास का भ्रमण, गतिविधियाँ, प्रोजेक्ट कार्य, सर्वेक्षण, प्रयोग, प्रदर्शन करना, चर्चा, प्रश्नोत्तरी सामूहिक एवं व्यैक्तिक रूप से आयोजित कराया जाना जैसे – पर्यावरणीय मूल्यों के प्रति जागरुकता हेतु– वादविवाद। अपशिष्ट के प्रकार एवं प्रबंधन– प्रोजेक्ट कार्य। प्राकृतिक संसाधनों के प्रदूषण एवं नियंत्रण– सर्वे। भोज्य पदार्थो का स्वास्थ्यवर्धक संयोजन– चार्ट निर्माण, प्रश्नोत्तरी। कुपोषित बालक एवं सीखने की गति– केसस्टडी। फसलें/कृषि हेतु मिट्टी–पानी आदि अनुकूल–प्रतिकूल परिस्थितियाँ– भ्रमण, सर्वे । प्राकृतिक आपदाएँ एवं जागरूकता– फिल्म, विडियो क्लिपिंग। अम्लीय वर्षा ग्लोबल वार्मिंग, ग्रीन हाउस प्रभाव– निबंध, वाद विवाद। सांस्कृतिक पर्यावरण– एकांकी, नृत्यनाटिका। पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में शिक्षाविदों/समाजशास्त्रियों, पर्यावरणविदों के योगदान– तात्कालिक भाषण, चर्चा। बच्चे किस तरह समझते हैं, यह जानने के लिये सरल गतिविधियों का आयोजन जैसे–सरल प्रयोग–तैरने वाली वस्तुएँ, आसपास के अस्पताल, तालाब, बाजार, बगीचा, पत्ती, बीजों का संग्रहण, सामाचार पत्रों की सूचनाओं का विश्लेषण इत्यादि। इन गतिविधियों के माध्यम से छात्राध्यापक जानेंगे कि बच्चे किस प्रकार विचार करते हैं, बच्चों के अनुभवों को प्रस्तुत करने के अवसर देना और वे अपने विचारों को किस प्रकार से जोड़ते, वर्गीकृत, विश्लेषित करते हैं एवं किस प्रकार से स्वयं को अभिव्यक्त करते हैं, जानना एवं उन अनुभवों एवं विचारों की अभिव्यक्ति के समन्वय से परिष्कृत समझ बनाना। विचारों के प्रस्तुतीकरण के लिये– चित्रात्मक प्रदर्शन–तात्कालिक समसामायिक विषयों जैसे चुनाव, पॉलीथीन का प्रयोग पर मौखिक एवं लिखित चर्चा, परिचर्चा आयोजित करने के लिए प्रशिक्षण देना। प्रत्येक इकाई पर क्षेत्र आधारित, क्रियात्मक अनुसंधान अथवा समस्या विशेष पर आधारित प्रायोगिक कार्य/सत्रगत् क्रियाकलाप

दिये जा सकते हैं। केस स्टडी के रूप में बच्चे का पोर्टफोलियो तैयार करना एवं विविध पाठ्य सहगामी क्रियाओं का आयोजन किया जाने के लिए छात्राध्यापकों को प्रशिक्षित किया जाना चाहिए।

## संदर्भ ग्रंथों की सूची (**Bibliography**)

पर्यावरणीय पाठ्य पुस्तकें (प्राथमिक स्तर),दिगन्तर जयपुर का साहित्य,एकलव्य मध्यप्रदेश का साहित्य,संगति, एवेही एबेकस मुंबई, एनसीईआरटी (2007) एन्वायारमेंटल स्टडीज–लुकिंग एराउन्ड ब्सें.प्प्.ट नई दिल्ली, एनसीएफ (2005) एवं एनसीटीई (2009) दिल्ली, पर्यावरणीय अध्ययन–ए.बी. सक्सेना (रीजनल कॉलेज, भोपाल), विज्ञान शिक्षण का आयोजन–ए.बी. सक्सेना (रीजनल कॉलेज, भोपाल),

विद्यार्थी–शिक्षकों को पर्यावरण संबंधी अवधारणाओं के बारे में बच्चों से अनुभव एवं उनके परिवेश पूर्वज्ञान उपयोग करना तथा उनके एवं कक्षा मे सीखने के संसाधन के रूप में प्रयोग करने योग्य बनाना।

# Swami Vivekanand University, Sagar(M.P.)

## सामाजिक विज्ञान शिक्षण
## (D.EL.ED.-207)

| Course code | Title of the Paper | Distribution of Marks | | | | | | | | Grand Total (i= d+h) | Duration of Exam |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Theory | | MST (c) | Total (d = a+c) | Practical | | TW (g) | Total (h= e+g ) | | |
| | | Max (a) | Min (b) | | | Max (e) | Min (f) | | | | |
| D.EL.ED-207 | समाजिक विज्ञान शिक्षण | 35 | 12 | 15 | 50 | - | - | - | - | 50 | 3 Hours |

**UNIT- I** **Marks:12**

सामाजिक विज्ञान की प्रकृति– सामाजिक विज्ञान से आशय व प्रकृति एवं क्षेत्र। सामाजिक विज्ञान अध्ययन के कौशल। सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र : इतिहास, राजनीति शास्त्र, भूगोल, अर्थशास्त्र शिक्षण के उद्देश्य व सामाजिक विज्ञान को समझने के विभिन्न परिप्रेक्ष्यों को जानना।

**UNIT- II** **Marks:12**

सामाजिक विज्ञान की प्रमुख अवधारणाएँ– इतिहास जानने के स्त्रोत। भारत के ऐतिहासिक कालक्रम एवं मुख्य शासन और घटनाएँ। सभ्यता का विकास : नदी घाटी सभ्यता विशेष रूप से सिंधु घाटी सभ्यता। समाज : सामाजिक संरचना, सामाजिक स्तरीकरण (असमानताएँ), समुदाय व समूह। शासन प्रशासन : संविधान, लोकतंत्र, स्थानीय स्वशासन, राज्य व केन्द्र शासन। मानचित्र : मानचित्र के कारक, अक्षांश व देशान्तर रेखाएं, नक्शा बनाना, ग्लोब व प्रदेश, देश एवं विश्व के मानचित्र का पठन। विश्व के क्षेत्र : विभिन्न क्षेत्रों में मानव जीवन व ससांधन (मरूस्थल, ध्रुवीय क्षेत्र, वनाच्छादित क्षेत्र)।

**UNIT- III** **Marks:11**

सामाजिक विज्ञान की शिक्षण विधियाँ, आकलन एवं मूल्यांकन– 1. शिक्षण विधियाँ,
संवाद एवं चर्चा विधि, व्याख्यान विधि, प्रोजेक्ट विधि, तुलनात्मक विधि, संकलन विधि, अभिनय विधि,
ए.एल.एम./सक्रिय अधिगम प्रविधि, 2. आकलन एवं मूल्यांकन– सतत एवं व्यापक मूल्यांकन। ओपन बुक (व्चमद ठववाद्ध द्वारा मूल्यांकन। गतिविधि द्वारा– प्रश्न मंच, रोल प्ले, खेल,वाद विवाद,परिचर्चा, रीडिंग्स आदि।

l=xr dk;Z&vkrfjd eY;kdu ¼dkbZ nk½ UkkV% iFke fcUnq vfuok;Z gSA

1. किसी एक पिछड़ी बस्ती का सामाजिक व आर्थिक तथ्यों की जानकारी लेते हुए आज के संदर्भ में उनकी समस्याओं का अध्ययन (केस स्टडी) एवं सुझावात्मक समाधान। 2. अपनी संस्था से किसी बस्ती का नक्शा तैयार करना। प्रमुख सुझावात्मक बिन्दु–स्थिति, स्थान, बैंक, बाजार, संस्था, मंदिर/मस्जिद/चर्च/गुरूद्वारा इत्यादि। 3. सामाजिक विज्ञान के किसी विषयांश को लेकर तिथि एवं घटनाओं के आधार पर प्रोजेक्ट तैयार करना। अन्य स्त्रोतों से इन तथ्यों की विश्वसनीयता एवं प्रमाणिकता। 4. सामाजिक विज्ञान के शिक्षण में डाक टिकट, मुद्रा, समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, डाक्यूमेंट्री (छोटी फिल्म), नाटक, नक्शे, ग्लोब, ऐतिहासिक फिल्में, सीरियल किस प्रकार उपयोगी है, खोजकर स्पष्ट करना।(कोई एक) 5. पाठ्य पुस्तक समीक्षा– भौतिक स्वरूप, वर्तनी, चित्र एवं मानचित्र, अवधारणात्मक बिन्दु आदि। 6. प्रश्न पत्र का विश्लेषण।

## संदर्भ पुस्तकें/सामग्री

सामाजिक विज्ञान एवं उसका शिक्षण, माध्यमिक शिक्षा मंडल म.प्र. भोपाल।
सामाजिक विज्ञान (विषय–वस्तु एवं शिक्षण विधियाँ) आपरेशन क्वालिटी–एस.सी.ई.आर.टी.।
एन.सी.ई.आर.टी. की कक्षा 6 से 8 तक की पाठ्यपुस्तकें।
राष्ट्रीय फोकस समूह (एन.सी.एफ.) सामाजिक विज्ञान शिक्षण आधार पत्र।
Batra, P. (ed.) (2010). *Social Science Learning in Schools: Perspective and Challenges*, New Delhi: Sage. George, A. and Madan, A. (2009).
*Teaching Social Science in Schools: NCERT's New Textbook Initiative*.New Delhi: Sage.

## चर्चा हेतु सुझावात्मक पाठ–

Eklavya, (1994), *Samajik Adhyayan Shikshan: Ek Prayog*, Hoshangabad: Eklavya.
*Social science Textbooks for classes VI – VIII*, Madhya Pradesh: Eklavya.

# Swami Vivekanand University, Sagar(M.P.)

## विज्ञान शिक्षण
## (D.EL.ED.-208)

| Course code | Title of the Paper | Distribution of Marks | | | | | | | | Grand Total (i= d+h) | Duration of Exam |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Theory | | MST (c) | Total (d = a+c) | Practical | | TW (g) | Total (h= e+g ) | | |
| | | Max (a) | Min (b) | | | Max (e) | Min (f) | | | | |
| D.EL.ED-208 | विज्ञान शिक्षण | 60 | 20 | 15 | 75 | - | - | - | - | 75 | 3 Hours |

**UNIT- I** **Marks:20**

¼v½ विज्ञान की प्रकृति उसकी अवधारणाएँ— विज्ञान के ज्ञान की प्रकृति जैसे परिवर्तनशील, परीक्षण योग्य, तथा उत्पाद के रूप में। विज्ञान एक प्रक्रियाओं के रूप में: अवलोकन, मापन, परिकल्पनाएँ बनाना, प्रयोग, वर्गीकरण, वि ालेषण, सामान्यीकरण से पैटर्न खोजना तथा इससे नियम तक पहुँचना। वैज्ञानिक खोज एवं अन्वेषण की अवधारणा एवं प्रक्रिया। प्राकृतिक घटनाओं, प्रक्रियाओं आदि में कार्य—कारण संबंध। विज्ञान एक उत्पाद के रूप में: विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी में अंतर्संबंध, एक दूसरे पर परस्पर प्रभाव। ¼c½ विज्ञान और समाज— दैनिक जीवन में विज्ञान का प्रभाव। विभिन्न सामाजिक अंधविश्वास और कुरीतियों से निपटने में विज्ञान की भूमिका। समस्याओं के तार्किक वि ालेषण में विज्ञान का प्रयोग। बदलता हुआ समाज और विज्ञान। विज्ञान और लैंगिकता विज्ञान शिक्षण और सामाजिक अंधविश्वास और कुरीतियों से निपटने में विज्ञान की भूमिका। समस्याओं के तार्किक विश्लेषण और उनको हल करने में विज्ञान का उपयोग। प्रमुख भारतीय वैज्ञानिकों की सामाजिक परिस्थितियाँ और उनकी उपलब्धियों का संक्षिप्त परिचय। (ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, होमी जहांगीर भाभा, जगदीश चन्द्र बसु, पंचानन माहेश्वरी, सी. वी. रमन) द्वारा विभिन्न परिस्थतियों में काम करना।

**UNIT- II** **Marks:20**

विज्ञान पाठ्यचर्चा, पाठ्यक्रम एवं शिक्षण के उद्देश्य— पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रम एवं पाठ्य पुस्तक की अवधारणा। पाठ्यचर्या निर्माण में शिक्षक की भूमिका, स्थानीय स्रोतों का उपयोग। विज्ञान शिक्षण के उद्देश्य। भारतीय संदर्भ में विज्ञान शिक्षण। व्यवहारवाद एवं निर्माणवाद का विज्ञान शिक्षण में उपयोग।

हमारे चारों ओर के परिवर्तन: भौतिक एवं रासायनिक परिवर्तन। उष्मा, वातावरण को प्रभावित करने वाले कारक, 'अम्ल, क्षार एवं लवण', जन्तुओं का पोषण, श्वसन, जनन, गति, प्रकाश, विद्युत धारा, धातु—अधातु, बल एवं दाब, ध्वनि, चुम्बक, सौर मण्डल, स्थानीय वनस्पतियाँ, मानव में किशोरावस्था, प्रजनन एवं लिंग निर्धारण तथा संबंधित भ्रांतियाँ।

**UNIT- III** **Marks:20**

विज्ञान की कक्षा कक्ष प्रक्रिया और बच्चों का आकलन— विज्ञान शिक्षण की विभिन्न विधियाँ : सक्रिय अधिगम प्रविधि (ALM) एवं उसके विभिन्न चरण, प्रदर्शन विधि, प्रयोग विधि,विज्ञान संबंधी शैक्षिक भ्रमण, विज्ञान प्रदर्शनी, प्रोजेक्ट आदि। प्रभावी कक्षा कक्ष निर्देशन, कक्षा में सीखने हेतु उपुयक्त वातावरण निर्माण की प्रस्तावित रणनीतियाँ। वैज्ञानिक कौशल निम्न आधारों पर आकलन— अवलोकन, मापन, ग्राफ बनाना, वर्गीकरण, पृथक्करण, सामान्यीकरण, निष्कर्ष आदि । तार्किकता, सीसीई के संदर्भ में विज्ञान की अवधारणाओं के अवबोधन का आकलन।

प्रायोगिक कार्य– 15 प्रयोग करके रिपोर्ट बनाना (कक्षा 6,7,8,की पाठ्यपुस्तको पर आधारित ) समालोचना एवं परिणामों की विवेचना करना। सत्रगत कार्य–3 प्रयोगो पर आधारित प्रोजेक्ट रिपोर्ट बनना उनकी

## पाठ्यक्रम अंतरण की विधियाँ **(Mode Of Transaction)**

इकाईवार अध्ययन के लिए साहित्य उपलब्ध करवाना। सरल गतिविधियाँ, प्रयोग करवाना, अभिलेखों का अवलोकन, शिक्षक और साथी के साथ चर्चा करना यह देखना कि, प्रश्न कैसे पूछे जाते है? बनाते है? जिज्ञासाओं का जवाब कैसे दिया जाता है आदि। यहाँ शिक्षक सुविधादाता के रुप में होगा। पाठयोजना का प्रस्तुतीकरण (TLM सामग्री एवं मल्टी मीडिया उपयोग करते हुए) एवं अभिलेखीकरण उसकी विवेचना करना। उसका विश्लेषण तथा बच्चों के विचार को विज्ञान की अवधारणा प्रोजेक्ट कार्य एवं प्रायोगिक कार्य जोड़ना। म.प्र. में प्रचलित कक्षा 6, 7 एवं 8 की पुस्तकों का शिक्षण में उपयोग किया जाए। विज्ञान विषय शिक्षण अंतर्गत कार्य–कारण प्रभाव एवं विषय वस्तु की अवधारणाएँ स्पष्ट करने हेतु परिवेश में उपलब्ध संसाधनों, सामान्य गतिविधियों एवं प्रयोग का उपयोग किया जाये। आवश्यक गतिविधियाँ/प्रयोग कर प्रस्तुतीकरण के अवसर भी सुनिश्चित किया जाना आवश्यक है। विज्ञान के समसामयिक मुद्दों पर संदर्भ सामग्री एकत्रित करना, विज्ञान के साहित्य पर चर्चा करना पोस्टर के माध्यम से प्रचार करना, जनता को सुनना, संदर्भित क्षेत्रों के विशषज्ञों जैसे किसान आदि से बातचीत करना। जैसे– पानी एक प्राकृतिक संसाधन है क्या सभी लोगों को उनकी घरेलू और कृषि की जरूरत के हिसाब से पानी मिल पाता है ? हरित क्रांति क्या वाकई टिकाऊ है और खुशहाली का आगाज देती है ? हमारे परांपरागत ज्ञान को बचाने और संर्वधन करने से क्या नए ज्ञान को कोई खतरा है ? बदलता समाज और जीवन की परिभाषा और अलग–अलग सभ्यताओं के बचाव का सवाल ? इस तरह के कई और भी मुद्दे और सवाल हो सकते हैं। जिन्हें उपर्युक्त प्रक्रियाओं का आधार बनाया जा सकता है।

## संदर्भ ग्रंथों की सूची (**Bibliography**)


1. पाठ्यपुस्तकें– म.प्र. में संचालित कक्षा 6, 7, एवं 8 की विज्ञान विषय की पुस्तकें। विज्ञान कक्षा 6, 7, एवं 8 की विषय की पाठ्यपुस्तकें वर्ष 2006, NCERT, NCERT नई दिल्ली। बालवैज्ञानिक, कक्षा 6, 7, एवं 8 विज्ञान कार्य पुस्तकें, 2000, पाठ्यपुस्तक निगम भोपाल। स्माल साइंस, विज्ञान कक्षा 6, 7, एवं 8 पाठ्यपुस्तकें वर्ष 2003, होमी भाभा साइंस सेन्टर मुंबई।
2. प्राथमिक स्तर की पर्यावरण विषय की पुस्तकें। सी ई ई की किताबें।
3. सक्सेना ए. बी (2008) विज्ञान शिक्षण का आयोजन, आगरा एच पी भार्गव बुक हाउस।
4. सक्सेना ए बी 2011 निर्माणवाद विज्ञान शिक्षा।
5. ALM . शिक्षक संदर्शिका राज्य शिक्षा केन्द्र भोपाल विज्ञान क्या है केरेन हेडाक।
6. विज्ञान में ज्ञान क्षेत्र, एन सी एफ (2005),NCERT, NCERT नई दिल्ली।

7- विज्ञान शिक्षण, एन सी एफ पोजी शान पेपर (2005), NCERT, NCERT नई दिल्ली।

8- classroom interaction that works, McRELL (2014), www.mcrell.com

# Swami Vivekanand University, Sagar(M.P.)

## xf.kr f'k{k.k izkjfHkd Lrj&2
## (D.EL.ED.-209)

| Course code | Title of the Paper | Distribution of Marks | | | | | | | | Grand Total (i= d+h) | Duration of Exam |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Theory | | MST (c) | Total (d = a+c) | Practical | | TW (g) | Total (h= e+g ) | | |
| | | Max (a) | Min (b) | | | Max (e) | Min (f) | | | | |
| D.EL.ED-209 | गणित शिक्षण प्रारंभिक स्तर–2 | 35 | 12 | 15 | 50 | - | - | - | - | 50 | 3 Hours |

**UNIT- I** **Marks:7**

व्यावहारिक अंकगणित एवं सांख्यिकी– अनुपात एवं समानुपात, प्रतिशत एवं उसके अनुप्रयोग, बट्टा, साधारण ब्याज, चक्रवृद्धि ब्याज, सांख्यिकी : आंकड़े, परिसर, आरोही एवं अवरोही क्रम, बारंबारता, बंटन आंकड़ों का वर्गीकरण, वर्ग अंतराल, औसत, माध्य, माध्यिका, आलेख (दण्ड आलेख, आयत चित्र, चित्र आलेख)।

**UNIT- II** **Marks:7**

बीजगणित एवं बीजगणितीय चिंतन– चर, अचर, चर का उपयोग– कब और क्यों? एक चरीय रेखिक समीकरण का निर्माण एवं हल। बीजगणित सीखने की प्रक्रिया में बच्चों को आने वाली कठिनाइयाँ एवं उनका निराकरण। गणितीय पहेलियां एवं उनके तार्किक/बीजगणितीय हल।

**UNIT- III** **Marks:7**

ज्यामिति– वेन हाइलिख (Van Hieles) द्वारा प्रस्तुत ज्यामितीय चिंतन के स्तर। द्वि–विमीय एवं त्रिविमीय ज्यामितीय आकृतियां। सममिति, समरूपता एवं सर्वांगसमता। ज्यामितीय उपकरणों की सहायता से ज्यामितीय रचनाएँ। त्रिविमीय आकृतियों की स्थानिक समझ एवं प्रत्यक्षीकरण।

**UNIT- IV** **Marks:7**

गणितीय तार्किकता– सामान्यीकरण की प्रक्रिया एवं पैटर्न पहचान। परिकल्पना निर्माण में आगमनात्मक तार्किक प्रक्रिया। गणितीय संरचना के संदर्भ में स्वयं सिद्धियाँ, परिभाषा एवं प्रमेय। गणितीय कथनों के सत्यापन की प्रक्रिया : उपपत्ति, प्रतिउदाहरण और गणितीय निष्कर्ष। गणित में सृजनात्मक सोच। गणित के प्रति भय और असफलताओं से जूझना। गणित में समस्या समाधान प्रक्रिया।

**UNIT- V** **Marks:7**

गणित में अधिगम सामग्री एवं मूल्यांकन– गणित शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में पाठ्यपुस्तक की भूमिका। पाठ्यचर्या एवं कक्षागत प्रक्रियाएँ। अवधारणागत समझ के लिए मूल्यांकन। संप्रेषण एवं तार्किक कौशलों के विकास के लिए मूल्यांकन। खुले प्रश्न एवं समस्याएँ(Open ended questions and problems).

सत्रगत कार्य भाग **II** (कोई एक)

1. कम्पास यंत्र (ज्यमिति बॉक्स) का निर्माण एवं ज्यामिति के शिक्षण में इसका प्रयोग। 2. गोला, शंकु, बेलन के मॉडल का निर्माण तथा इनका आयतन व क्षेत्रफल ज्ञात करना। 3. किसी एक कक्षा में विद्यार्थियों की आयु, ऊँचाई तथा भार संबंधी आंकड़ों का संग्रह करना एवं उनका आलेख बनाना तथा मध्यमान ज्ञान करना। 4. गणित के पैटर्न। 5. कागज मोड़कर त्रिविमीय आकृतियों का निर्माण एवं उनका शिक्षण में उपयोग। 6. बीजीय सर्वसमिकाओं के ज्यामितीय प्रमाण हेतु मॉडल तैयार करना।

a. $(a+b)^2 = a^2+2ab+b^2$, b. $(a-b)^2 = a^2-2ab+b^2$, c. $a^2-b^2 = (a+b)(a-b)$,

7. के सत्यापन हेतु मॉडल तैयार करना। 8. वृत्त के क्षेत्रफल के सत्यापन हेतु मॉडल का निर्माण एवं उसका शिक्षण में उपयोग। 9. अनियमित आकृति के क्षेत्रफल की गणना हेतु मॉडल निर्माण एवं उसका कक्षा शिक्षण में उपयोग। 10. संख्या रेखा पर परिमेय संख्याओं के प्रदर्शन हेतु मॉडल का निर्माण एवं उसका शिक्षण में उपयोग। 11. किसी बैंक में जाकर तीन जमा/ऋण योजनाओं का विवरण पताकर लाभकारी स्थिति का विश्लेषण करना। 12. ज्यमिति अवधारणाओं के सत्यापन हेतु मॉडल निर्माण एवं शिक्षण में उपयोग।

## ikB;Øe dh vUrj.k dh fof/k;k¡ (**Mode of transaction)**

बच्चे कैसे सीखते हैं ? कैसे प्रत्युत्त्तर देते हैं ? का अवलोकन कर समूह में चर्चा। तार्किक प्रश्न बनाने एवं प्रश्न पूछने की परिस्थितियाँ निर्मित करना। गणितीय अवधारणाओं की समझ बनाने के लिए समूह कार्य एवं व्यावहारिक उपयोग के अवसर देना। गणितीय मॉडल तैयार करना। गणित की सहायक सामग्री को तैयार करना,उसका परीक्षण कर कक्षा शिक्षण में उपयोग करना। समूह चर्चा एवं प्रस्तुतीकरण। स्व–अध्ययन एवं पुस्तकालय अध्ययन द्वारा विभिन्न प्रकरणों पर तैयार किए गये आलेखों का प्रस्तुतीकरण। गणितीय किट, गणित लैब व गणित संसाधन कक्ष का उपयोग करना।

## lanHkZ xzUFkksa dh lwph (**Bibliography)**

1. म.प्र. पाठ्य पुस्तक निगम द्वारा प्रकाशित कक्षा 1 से 8 तक की गणित विषय की प्रचलित पाठ्य पुस्तकें। 2. गणित शिक्षण – एम.एस. रावत व एस.बी. लाल 3. गणित अध्ययन सत्संगी एवं दयाल 4- NCF 2005] NCERT द्वारा प्रकाशित 5- Position paper National focus Group on teaching of mathematics 6- NCERT द्वारा तैयार गणित किट प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर 7. निःशुल्क और अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 8. वैदिक गणित स्वामी भारती कृष्ण तीर्थ। 9. वैदिक गणित भाग 1,2,3 – डॉ. कैलाश विश्वकर्मा 10.मापन एवं मूल्यांकन – आर.ए. शर्मा 11.राज्य शिक्षा केन्द्र द्वारा प्रकाशित विद्यार्थी मूल्यांकन निर्देश पुस्तिका

# Swami Vivekanand University, Sagar(M.P.)

## fofo/krk] lekosf'kr f'k{kk vkj tsMj
## (D.EL.ED.-210)

| Course code | Title of the Paper | Distribution of Marks | | | | | | | | Grand Total (i= d+h) | Duration of Exam |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Theory | | MST (c) | Total (d = a+c) | Practical | | TW (g) | Total (h= e+g ) | | |
| | | Max (a) | Min (b) | | | Max (e) | Min (f) | | | | |
| D.EL.ED-210 | विविधता, समावेशित शिक्षा और जेण्डर | 35 | 12 | 15 | 50 | - | - | - | - | 50 | 3 Hours |

**UNIT- I** **Marks:12**

समावेशी शिक्षा **(Inclusive Education) -** भारतीय शैक्षिक व्यवस्था में समावेशन एवं बहिष्करण (समाज के सीमांत (हाशिये पर) वर्ग, जेण्डर एवं विशेष आवश्यकता वाले बच्चे)। समावेशी शिक्षा : अर्थ, आवश्यकता और महत्व तथा म.प्र. में समावेशी शिक्षा की स्थिति। शिक्षाशास्त्र एवं पाठ्यचर्या के सरोकारों के संदर्भ में भारतीय कक्षाओं में असमानता एवं विविधता : कारण एवं निवारण। समावेशी शिक्षा के लिए मूल्यांकन।

**UNIT- II** **Marks:12**

विशेष आवश्यकता वाले बच्चे **(Childern With Special Needs) (CWSN)-** (CWSN) बच्चों की समावेशी शिक्षा के लिए विभिन्न प्रयास।विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की पहचान, आकलन एवं अंतःक्रिया। अधिगम निःशक्तता– अवधारणा, प्रकार एवं समाधान।विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (CWSN) बच्चों के सीखने में आने वाली कठिनाइयों के लिये शिक्षण उपागम एवं कौशल।

.प्रम की शालाओं में CWSN बच्चों के लिये शिक्षण व्यवस्था, संसाधन एवं प्रोत्साहन योजनाएँ।

**UNIT- III** **Marks:11**

जेण्डर, शाला और समाज **(Gender, School and Society) -** सामाजिक संरचना में पुरुषत्व (masculinity) एवं स्त्रीत्व (feminity) की अवधारणा एवं प्रक्रिया। पुरुष एवं महिला प्रधान समाज की अन्तःक्रिया एवं पहचान। शालाओं में जेण्डर का प्रतिबिंबन (Reflection) – पाठ्यचर्या, पाठ्यवस्तु, कक्षागत प्रक्रिया एवं शिक्षक छात्र अन्तःक्रिया में। कक्षा में जेण्डर समानता के लिये किए जाने वाले प्रयास। CWSN बच्चों के लिये भारतीय पुनर्वास परिषद Rehabilitation Council of India.
(RCI) की भूमिका एवं निःशक्तता अधिनियम (PWD Act)1995 के प्रावधान।

## l=xr dk;l (Assignments)

1. अपने ग्राम/वार्ड के विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की निःशक्ततावार जानकारी एकत्रित कीजिए एवं उनकी कक्षा में समावेशन की स्थिति पर रिपोर्ट तैयार कीजिए। 2. अपने विद्यालय में अध्ययनरत विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की शैक्षिक कठिनाइयों को सूची बद्ध कीजिए एवं किसी एक विषय पर इन बच्चों के लिए दो शिक्षण सहायक सामग्री विकसित कीजिए। 3. अपने क्षेत्र/जिले में निःशक्तजनों के क्षेत्र में कार्यरत प्रमुख संस्थाओं की सूची बनाइए तथा किसी एक के कार्य, प्रक्रिया एवं उपदेयता पर रिपोर्ट तैयार कीजिए।

4. अपने क्षेत्र में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की निःशक्तता के प्रकार, प्रकृति, कारण तथा रोकथाम के प्रयास पर आलेख तैयार कीजिए। 5. अपने विद्यालय/कक्षा के विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की शिक्षण की आवश्यकताओं की सूची बनाइए एवं इनके बेहतर शिक्षण हेतु किए जा रहे प्रयास लिखिए।

6. अपने विद्यालय में श्रवणबाधित एवं दृष्टिबाधित बच्चों की सामान्य पहचान कैसे करेंगे इसके लिए
चेकलिस्ट तैयार करें। 7. कक्षा शिक्षण के दौरान ँछ बच्चों से परस्पर संवादके विभिन्न अवसरों को लक्षित कीजिए तथा सामान्य शिक्षण में उसकी सार्थकता लिखिए। 8. आपकी कक्षा के विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की शैक्षिक कठिनाइयों की पहचान करते हुए उनके निराकरण के लिए किए जाने वाले प्रयासों को सूचीबद्ध कीजिए। (किन्हीं दो छात्रों की केस स्टडी) 9. अपनी कक्षा के दस बच्चों की गृहकार्य की कॉपी का मूल्यांकन कर इन बच्चों की विषयवार अधिगम कठिनाइयों की सूची बनाइए एवं इनके निराकरण लिखिए।

संदर्भ संदर्भ ग्रंथों की सूची

मध्य प्रदेश राज्य शैक्षिक अनुसन्धान एवं प्रशिक्षण परिषद (2001) विकलांग बच्चों हेतु समेकित शिक्षा
शिक्षक मार्गदर्शिका। राज्य शिक्षा केन्द्र (2010) आधार, भोपाल,राज्यशिक्षा केन्द्र। राज्य शिक्षा केन्द्र (2005) भारतीय समाज में शिक्षा भाग–2 (प्रथम वर्ष) राज्य शिक्षा केन्द्र। अग्रवाल गीता (1981) किवलांगता समस्या और समाधान,निधि प्रकाशन, दिल्ली। भार्गव ,महेश (2004) पब्लिकेशन चिल्ड्रेनः देयर एजूकेशन एण्ड रिहबिलेटशन, एच. पी.भार्गव बुक हाउस,कचहरी घाट,आगरा। भार्गव,महेश(2004) विशिष्ट बालक, एच.पी.भार्गव बुक हाउस,कचहरी घाट,आगरा। मिश्र,विनोद कुमार (2003) विकलागो के अधिकार कल्याणी शिक्षा परिषद,जटवाड़ा दरियागंज, नई दिल्ली। जोसेक, आर.ए.(2003) विकलागंता के क्षेत्र में अधिनियम पुनर्वास के आयाम समाकलन पब्लिकेशन, वाराणसी। जोसेक, आर.ए. (2004) विकलांगों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि विशेष शिक्षा एवं पुनर्वास, समाकलन पब्लिकेशन, वाराणसी। शर्मा,आर.ए. (2008) विशिष्ट शिक्षा का प्रारूप, आर.लाल बुक डिपो, मेरठ।

# Swami Vivekanand University, Sagar(M.P.)

## dEI;Vj f'k{kk Hkkx&2
## (D.EL.ED.-211)

| Course code | Title of the Paper | Distribution of Marks | | | | | | | | Grand Total (i= d+h) | Duration of Exam |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Theory | | MST (c) | Total (d = a+c) | Practical | | TW (g) | Total (h= e+g ) | | |
| | | Max (a) | Min (b) | | | Max (e) | Min (f) | | | | |
| D.EL.ED-211 | कम्प्यूटर शिक्षा भाग–2 | - | - | - | - | 25 | - | 25 | 50 | 50 | 3 Hours |

**UNIT- I** **Marks:9**

कम्प्यूटर समर्थित शिक्षा– कक्षा शिक्षण में कम्प्यूटर का प्रयोग, मल्टीमीडिया पाठसाउंड रिकार्डर एवं हेडफोन का प्रयोग, सी.डी. / वी.सी.डी. / डी.वी.डी. / पेन ड्राईव का उपयोग, सी.डी. / वी.सी.डी. / डी.वी.डी. राइट करना।

**UNIT- II** **Marks:8**

इलेक्ट्रानिक स्प्रेडशीट एवं प्रेजेन्टेशन– केल्क / एक्सेल–: वर्कशीट रो, कॉलम तथा सेल के साथ कार्य करना, वर्कशीट पर विभिन्न फंक्शन की सहायता से गणना करना, आंकड़ों के आधार पर ग्राफ तैयार करना, इम्प्रेस / पॉवरप्वाइंट–: स्लाइड तैयार करना, मल्टीमीडिया का उपयोग (साउंड, वीडियो, इमेज, टेक्स्ट, एनीमेशन इत्यादि), स्लाइड शो]

**UNIT- III** **Marks:8**

इंटरनेट– इंटरनेट का परिचय एवं उपयोग। वेब ब्राउजर, वेबसाइट एवं वेब पेज। ई–मेल अकाउण्ट बनाना तथा ई–मेल भेजना एवं प्राप्त करना। डाउनलोड तथा अपलोड (अटैचमेंट) करना। सर्च इंजन की सहायता से आवश्यक जानकारी प्राप्त करना। एजुकेशन पोर्टल एवं अन्य शैक्षणिक पोर्टलों का उपयोग।

सत्रगत कार्य **(Assignments)**

सभी प्रायोगिक कार्य आवश्यक हैं। दिए गए कार्यो में से कोई पांच कार्य सत्रगत कार्य के रूप में जमा कराये जाएंगे। उपस्थिति पत्रक तैयार करना। 1. पाँच मित्रों की अंकसूची जनरेट करना। 2. गणितीय इबारती सवालो के लिए शीट का निर्माण। 3. अपना वेतन विवरण तैयार करना। 4. एक विषय की स्वनिर्मित पाठ योजना का प्रेजेंटेशन तैयार करना। (।नजवब्वससंहमए चेवजव`जवतलए‟वदहेउपजी का उपयोग करते हुए।) 5. इंटरनेट की मदद से कम्प्यूटर के विभिन्न भागों का प्रेजेंटेशन तैयार करना। 6. स्वयं की ई–मेल आई.डी. तैयार कर संदेश भेजना एवं प्राप्त करना। 7. ई–मेल के द्वारा फाइल ट्रांसफर करना। 8. सर्च इंजन की मदद से विज्ञान अथवा भाषा शिक्षण की आधुनिक विधियों को खोजना। 9. एजुकेशन पोर्टल से अपना यूनिक आई.डी. एवं वेतन विवरण प्राप्त करना।

संदर्भ ग्रंथों की सूची **(Bibliography)**

1-Head start Training Manual 2011(Hindi) 2-Microsoft Teacher Training Module (Hindi) 3-Intel Teacher Module (Hindi) 4-Linux Pustak 2011 (Hindi) **Website:-**
1-www.computerseekho.com 2-www.dsaksharta.in 3-www.educationportal.mp.gov.in 4-www.teindia.nic.in 5-www.ncte-in.org 6-www.teachersofindia.org

# Swami Vivekanand University, Sagar(M.P.)

LokLF;] LoPNrk] HkkoukRed fodkl ,oa 'kkjhfjd f'k{kk
**(D.EL.ED.-212)**

| Course code | Title of the Paper | Distribution of Marks | | | | | | | | Grand Total (i= d+h) | Duration of Exam |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Theory | | MST (c) | Total (d = a+c) | Practical | | TW (g) | Total (h= e+g ) | | |
| | | Max (a) | Min (b) | | | Max (e) | Min (f) | | | | |
| D.EL.ED-212 | स्वास्थ्य, स्वच्छता, भावनात्मक विकास एवं शारीरिक शिक्षा | - | - | - | - | 20 | - | 20 | 40 | 40 | 3 Hours |

**UNIT- I** **Marks:7**

विद्यालयीन स्वास्थ्य एवं खेल गतिविधियाँ— विद्यालयीन स्वास्थ्य का अर्थ एवं विद्यालय के अच्छे स्वास्थ्य की विशेषताएँ। मध्यान्ह भोजन कार्यक्रम की आवश्यकता, उद्देश्य, क्रियान्वयन एवं शिक्षक की भूमिका। विद्यालय में पेयजल, सीवेज, शौचालयों एवं खेल मैदानों की साफ–सफाई। सामूहिक प्रार्थना का महत्व, योग की प्रारंभिक क्रियाओं की जानकारी, व्यायाम एवं एथलेटिक्स। खेलों के प्रति जागरूकता, प्रोत्साहन, विभिन्न राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय खेलों की जानकारी। प्राथमिक उपचार पेटी की व्यवस्थाएँ, एवं उसका उपयोग।

**UNIT- II** **Marks:6**

परिवेशीय स्वास्थ्य एवं शिक्षा— मौसम परिवर्तन का स्वास्थ्य पर प्रभाव। प्राकृतिक आपदाओं के बारे में ज्ञान एवं सुरक्षा के उपाय । कृषि एवं पशुपालन का महत्व। अपशिष्ट पदार्थों का स्वास्थ्य पर प्रभाव एवं उचित निस्तारण। पेयजल संरक्षण, सीवेज, ड्रेनेज के लिए निकायों की भूमिका एवं हमारे उत्तरदायित्व।

**UNIT- III** **Marks:6**

उपभोक्ता एवं सामुदायिक स्वास्थ्य— जंक फूड, कोल्ड ड्रिंक्स एवं स्वाद के लिए तत्काल निर्मित खाद्य सामग्री, मादक एवं दूषित पदार्थों के सेवन के दुष्परिणाम। दवाओं एवं सौंदर्य प्रसाधनों के भ्रामक विज्ञापनों के प्रचार के प्रति जागरूकता एवं सावधानियाँ। स्थानीय कार्यकर्ता, किसान, श्रमिक, सफाई कार्यकर्ताओं तथा सामाजिक कार्यकर्ता के प्रति आदर एवं समाज में उनका महत्व । हमारा सांस्कृतिक जीवन एवं स्वास्थ्य। हमारे स्वास्थ्य के लिए उत्तरदायी शासकीय स्वास्थ्य सेवाएँ ।

प्रोजेक्ट कार्य–इकाई 1, 2 एवं 3 पर आधारित ही होगा :– प्रत्येक छात्राध्यापक को समूह मे कुल 03 प्रोजेक्ट कार्य करने होगें। यह कार्य स्कूल इंटर्नशिप के साथ–साथ शिक्षकों से कराना होगा। स्कूल इंटर्नशिप के 10 दिवसों में कुल 3 घंटे इस कार्य के लिए नियत किए जाएँ। स्थानीय कार्यकर्ता (श्रमिक, किसान, सफाई कार्यकर्ता, समाजिक कार्यकर्ता) का समाज में महत्व। प्रोजेक्ट निर्माण के लिए छात्राध्यापकों से उपकरण निर्माण, आवश्यक सामग्री की आवश्यकता, महत्व एवं शोध कार्य पर डाईट फेकेल्टी द्वारा चर्चा की जावे। प्रोजेक्ट कार्य को छात्राध्यापकों का समूहवार वितरित किया जाए, एवं प्रत्येक छात्राध्यापक की इसमें सहभागिता सुनिश्चित हो सके। स्कूल इन्टर्नशिप के दौरान ही अधिकतम 6 सहभागी छात्राध्यापकों के प्रोजेक्ट कार्य को कार्यशाला आयोजित कर के बड़े समूह के समक्ष प्रस्तुत किया जाए। प्राथमिक उपचार करना। योगा के आसन् तथा प्राणायाम की मुद्राओं को छात्राध्यापकों को सिखाने के लिए प्रशिक्षण संस्थान में ही व्यवस्थाएँ की जाएँ। योग मुद्रा एवं आसनों का व्यावहारिक परीक्षण बाह्य पर्यवेक्षक द्वारा कराये जाने की व्यवस्था की जाए। नशे, खान–पान की गलत आदतों का स्वास्थ्य पर प्रभाव जानना।

सुझावात्मक प्रोजेक्ट के विषय / थीम (रिपोर्ट लेखन के साथ प्रस्तुतीकरण)

बच्चों के स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले सामाजिक एवं पारिवारिक कारकों का अध्ययन। बच्चों की अनुपस्थिति के कारणों का अध्ययन । शालेय स्वास्थ्य का अध्ययन– पेयजल, शौचालय, कक्षा में प्रकाश, खेल मैदान एवं स्वास्थ्य परीक्षण की व्यवस्थाओं को आधार बनाया जाए । मध्यान्ह भोजन योजना की बृहद् समीक्षा। सांस्कृrd ,oa साहित्यिक गतिविधियों का विद्यालयीन स्वास्थ्य पर प्रभाव। श्रमदान, खेलकूद योग का शैक्षणिक उपलब्धियों पर प्रभाव। प्राथमिक उपचार पेटी तैयार करते हुए सामग्री की उपयोगिता।

## ikB;Øe dh vrj.k dh fof/k;k (**Mode of transaction)**

छात्राध्यापकों का पुलिस, आर्मी, अग्निशमन सेवा संस्थापकों तथा डॉक्टर्स के साथ परिचर्चाएँ रखी जा सकेंगी। मध्यान्ह भोजन योजना को प्रायोगिक रूप में छात्राध्यापक अपनी पाठयोजनाओं के दौरान स्वयं करके समझेंगे। सीवेज, ड्रेनेज प्रणाली के बारे में पर्याप्त जानकारी विभिन्न निकायों से छात्राध्यापक द्वारा संकलित की जावेगी। योगासन, खेल एवं एथलेटिक्स की सामान्य क्रियाएँ छात्राध्यापकों से प्रशिक्षण के दौरान कराई जाएँ। प्राथमिक चिकित्सा में घावों की सफाई, पट्टी बाँधना, जलने पर उपचार इत्यादि का प्रशिक्षण छात्राध्यापकों को दिया जाए।

## lnHk xFkk dh lph ( **Bibliography)**

योग – वी.के एस आयंगार पुस्तक 'योग दीपिका', खेल – योगराज थाली– खेलो के सामान्य नियम रेडक्रास – संस्था प्रकाशन, स्वास्थ्य शिक्षा – के. के. वर्मा, आहार एवं पोषण– गूपिन्दर कौर बख्श, योग – सम्पूर्ण योग विद्या – राजीव जैन त्रिलोक, योग शिक्षा एवी सुपर – डॉ0 रमेश चंद्र, प्राण विद्या – स्वामी सत्यानंद सरस्वति जी, पातंजल योग प्रदीप – स्वामी सियाराम गोरखपुर, खेल – खेल जगत में एथलेटिक – वी.एस. चौहान,

# Swami Vivekanand University, Sagar(M.P.)

## dyk vkSj f'k{kk Hkkx&2
## (D.EL.ED.-213)

| Course code | Title of the Paper | Distribution of Marks | | | | | | | | Grand Total (i= d+h) | Duration of Exam |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Theory | | MST (c) | Total (d = a+c) | Practical | | TW (g) | Total (h= e+g ) | | |
| | | Max (a) | Min (b) | | | Max (e) | Min (f) | | | | |
| D.EL.ED-213 | कला और शिक्षा भाग–2 | - | - | - | - | 30 | - | 30 | 60 | 60 | 3 Hours |

**UNIT- I** **Marks:10**

दृश्य कलाएँ (क)चित्रकला/मूर्तिकला (द्विआयामी)– रेखांकन, रंगांकन, कोलाज, क्ले माडलिंग, पॉट मेकिंग, (ख) (त्रिआयामी)– पेपरमेशी, ऑरीगेमी, अनुपयोगी सामग्री से सृजनात्मक रचना निर्माण, मुखौटा निर्माण, कठपुतली निर्माण,

**UNIT- II** **Marks:10**

प्रदर्शनकारी कलाएँ– संगीत एवं नृत्य : लयात्मक गायन का अभ्यास, सामान्यतः प्रयोग में आनेवाले तालों (दादरा, त्रिताल, कहरवा) की जानकारी, प्रार्थनाएँ, बालगीत, प्रेरणा गीत , राष्ट्रगीत, लोकगीत व अन्य भाषाओं ( गुजराती, मराठी, पंजाबी आदि) के गीतों को गाने का अभ्यास, लोकनृत्यों का अभ्यास (एकल व सामूहिक)।

**UNIT- III** **Marks:10**

रंगमंच ( नाट्य कला )– नुक्कड़ नाटक, एकल अभिनय, मूक अभिनय। किसी कहानी की स्क्रिप्ट लिखकर उसे नाटक के रूप में मंचित करना। रंगमंचीय व्यवस्था–वेशभूषा, मेकअप, प्रकाश एवं ध्वनि की व्यवस्था आदि की जानकारी। नोट : तीनों इकाइयों में वाचन अभ्यास तथा प्रायोगिक कार्य सम्मिलित होंगे। गतिविधियाँ :– 9 संग्रहालय, आर्ट गैलरी, प्रदर्शनी आदि का भ्रमण करवाना। 10 स्थानीय प्रादेशिक लोक कलाकारों द्वारा लोकगीत, लोकनृत्य, सुगम संगीत आदि का प्रदर्शन। 11 कला की दृष्टि से उत्कृष्ट फिल्मों का प्रदर्शन व उनपर चर्चा। 12 बाल फिल्मों तथा कार्टून फिल्मों का प्रदर्शन आरै उनपर चर्चा। 13 किसी चित्रकार अथवा मूर्तिकार के साथ एक या दो दिवसीय कार्यशाला का आयोजन। 14 किसी बाहरी समूह द्वारा नाटक का मंचन व उसके निर्देशक तथा कलाकारों से बातचीत।

### l=xr dk;l ¼dkbl 2½

चित्रों के कोलाज द्वारा किसी घटना या कहानी का प्रदर्शन कीजिए। स्थानीय कलाकारों का साक्षात्कार लीजिए व आधुनिकता के इस युग में कला को बनाए रखने में उनके सामने आ रही चुनौतियों के बारे में बातचीत करके उसका अभिलेखीकरण कीजिए। किसी कहानी या कविता पर आधारित कठपुतली या मुखौटों का निर्माण करके उनका प्रदर्शन कीजिए। पावर पाईंट पर किसी पाठ के लिए संगीत के साथ ग्रफिक्स एनीमेशन व चि़त्र बनाइए। किसी फिल्म के अभिनय, संगीत व नृत्य पक्ष को ध्यान में रखते हुए समीक्षा लिखिए। अनुपयोगी सामग्री से किसी तरह की उपयोगी वस्तुएँ बनाइए। मेहंदी, अल्पना या मांडने की कोई कलाकृति तैयार कीजिए।

### lnHkl xzFkks dh lwph

एनसीएफ़ का फोकस पेपर कला शिक्षा। मध्यप्रदेश का लोक संगीत– प्रो.शरीफ़ मोहम्मद, डॉ. खरे– म.प्र.हिंदी ग्रंथ अकादमी। कबाड़ से जुगाड़–अरविंद गुप्ता एकलव्य प्रकाशन। जॉय ऑफ मेकिंग इन्डियन टॉयज़–खन्ना एन.बी.टी

प्रकाशन। क्रिएटिव ड्रामा इन प्रायमरी ग्रेड– नील मेक केसलिन–लंदन लॉगमेन। कबीर, टैगोर, निराला, गालिब, नजीर, तुलसीदास, सूरदास, रहीम, रसखान आदि की रचनांओं के कैसेट/सीडी,स्थानीय लोकगीतों के कैसेट/सीडी। थियेटर इन एजुकेशन– बेरी प्रसाद। लोक संस्कृति – बसंत निरगुणे, म.प्र.हिंदी ग्रंथ अकादमी। भारतीय सांस्कृतिक धरोहर– डॉ. उमराव सिंह चौधरी म.प्र.हिंदी ग्रंथ अकादमी। भारत के लोकनृत्य– प्रो.शरीफ़ मोहम्मद –म.प्र.हिंदी ग्रंथ अकादमी। मुखौटों का सांस्कृतिक अध्ययन– डॉ़. तुराज वशिष्ठ, म.प्र.हिंदी ग्रंथ अकादमी।

# Swami Vivekanand University, Sagar(M.P.)

## 'kkyk bUVuf'ki
## (D.EL.ED.-214)

| Course code | Title of the Paper | Distribution of Marks | | | | | | | | Grand Total (i= d+h) | Duration of Exam |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | Theory | | MST (c) | Total (d = a+c) | Practical | | TW (g) | Total (h= e+g ) | | |
| | | Max (a) | Min (b) | | | Max (e) | Min (f) | | | | |
| D.EL.ED-214 | शाला इंटर्नशिप | - | - | - | - | 100 | - | 100 | 200 | 200 | 3 Hours |

विशिष्ट उद्देश्य :— 1. विद्यालय को एक संपूर्ण इकाई के रूप में अनुभव करना। 2. कक्षा शिक्षण के साथ शालेय गतिविधि, अभिभावकों के साथ अंर्तक्रिया के लिये अवसर प्रदानकरना। 3. एक नियमित शिक्षक के रूप में अपने आप को देखना। 4. छात्रों की विविधता को जानना। 5. छात्रों की आवश्यकताओं के संदर्भ में सीखने—सिखाने की प्रक्रिया की प्रभावी योजना बनाना। 6. उपलब्ध संसाधनों, सीमाओं को पहचान कर नवाचार करने की क्षमता विकसित करना। 7. कक्षा में अर्थपूर्ण गतिविधियाँ कराने के लिये उचित गतिविधियों का चयन करना तथा चयनित गतिविधि का क्रियान्वयन कराना। 8. विद्यालय में प्राप्त किये गए स्वयं के अनुभवों का समीक्षात्मक अभिलेख तैयार करना।

उपरोक्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिये कार्यक्रम में निम्नलिखित घटक शामिल किये जा रहे हैं— योजना बनाना, अध्यापन, अभिलेखों को तैयार करना।

शाला में इंटर्नशिप कार्यक्रम—70 दिवस

| चरण | कार्यक्रम एवं गतिविधियाँ | दिवस |
|---|---|---|
| प्रथम | इंटर्नशिप की पूर्व गतिविधियाँ (तैयारी) | 30 |
| द्वितीय | इंटर्नशिप दौरान गतिविधियाँ (शाला का वास्तविक अनुभव ) | 40 |
| तृतीय | इंटर्नशिप के पश्चात की गतिविधियॉ (समालोचनात्मक चिंतन) | — |

## i.Fke pj.k ¼lLFkku Lrj ij½

| क्रमांक | गतिविधि का नाम | दिवस |
|---|---|---|
| | इंटर्नशिप की पूर्व (तैयारी) | |
| 1. | संपूर्ण इंटर्नशिप कार्यक्रम पर उन्मुखीकरण एवं अभ्यास हेतु विद्यालयों का चयन–सस्थान द्वारा | 01 |
| 2. | सस्थान के द्वारा माइक्रो टीचिंग के कौशलों पर उन्मुखीकरण | 10 |
| 3. | पाठ्य पुस्तकों (अंग्रेजी / तृतीय भाषा, विज्ञान / सा.विज्ञान / पर्यावरण विज्ञान) तथा स्रोत सामग्री के समालोचनात्मक विश्लेषण पर कार्यशाला | 03 |
| 4. | केस स्टडी करने के संबंध में कार्यशाला | 02 |
| 5. | कक्षा में समावेशिता तथा विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को समझने की आवश्यकता पर उन्मुखीकरण | 01 |
| 6. | सर्वे कार्य कराने की योजना पर कार्यशाला (ग्राम शिक्षा रजिस्टर) | 02 |
| 7. | इकाई योजना एवं पाठ योजना निर्माण (अंग्रेजी / तृतीय भाषा एवं विज्ञान एवं सा.विज्ञान तथा पर्यावरण अध्ययन )पर कार्यशाला (निर्माणवाद पर आधारित पाठ प्रदर्शन सहित) | 05 |
| 8. | सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन पर उन्मुखीकरण | 01 |
| 9. | चयनित विद्यालय के संस्था प्रमुखों का उन्मुखीकरण (इंटर्नशिप गतिविधियों से परिचय,मूल्यांकन प्रपत्र, संस्था प्रमुख की भूमिका पर चर्चा) | 01 |
| 10. | छात्राअध्यापक,मेंटर (आवंटित कक्षा का शिक्षक / विषय शिक्षक एवं संस्थान सुपरवाइजर (विषय विशेषज्ञ) का उन्मुखीकरण (प्रत्येक की भूमिका पर चर्चा)। को टीचिंग अवधारणा (नवाचारी पद्धति),मूल्यांकन अवधारणा (रूब्रिक पर आधारित) पर प्रस्तुतिकरण । | 03 |
| 11. | 'दैनंदिनी एवं रिफ्लेक्टिव जर्नल पर चर्चा | 01 |
| | योग | 30 |

* ''इंटर्नशिप की पूर्व गतिविधियाँ'' कार्यक्रम पर छात्राध्यापकों के द्वारा दैनैनंदिनी एवं रिफ्लेक्टिव जर्नल पर लेखन कार्य करवाया जा सकता है, जिस पर चर्चा कर छात्राध्यापकों को फीड बैक दिया जा सकता है इसकी उपयोगिता इंटर्नशिप के दौरान परिलक्षित होना चाहिए ।

## f}rh; pj.k ¼'kkyk Lrj ij½

| इंटर्नशिप दौरान गतिविधियाँ (शाला का वास्तविक अनुभव ) | | |
|---|---|---|
| क्रमांक | गतिविधि का नाम | 'कुल कार्य दिवस 40 |
| 1. | चयनित शाला का संपूर्ण अवलोकन, कक्षा अवलोकन एवं सीखने–सिखाने के अनुभव पर प्रतिवेदन | |
| 2. | विद्यालयों की गतिविधियों में भाग लेना (प्रार्थना सभा, खेलकूद, स्काउटिंग, विज्ञान क्लब, एवं मेले पर्यावरण क्लब, पुस्तकालय सांस्कृतिक, सामाजिक गति विधियाँ एवं पी.टी.एम. एवं. एस .एम. सी.में सहभागिता) | |
| 3. | शाला के अन्तर्गत एक केस स्टडी का चयन एवं समय सीमा में पूर्ण करना | |
| 4. | पाठ्य पुस्तकों (अंग्रेजी / तृतीय भाषा तथा विज्ञान / सा.विज्ञान / पर्यावरण अध्ययन) एवं स्रोत सामग्री का विश्लेषण करना तथा स्रोत सामग्री का विकास करना | |
| 5. | कक्षा में समावेशिता तथा एवं विशेष आवश्यकता वाले बच्चों पर आधारित शाला अवलोकन पर रिपोर्ट | |
| 6. | इकाई योजना निर्माण करना | |
| 7. | ''''पाठ योजनाओं का निर्माण एवं प्रस्तुतिकरण । ( अंग्रेजी एवं तृतीय भाषा की 10 व 5 पाठ योजना शिक्षण अधिगम सामग्री सहित तथा 5 –5 कक्षा अवलोकन) तथा विज्ञान, सा. विज्ञान, पर्यावरण अध्ययन की 10–5–5 पाठ योजना शिक्षण अधिगम सामग्री सहित तथा 5– 3–2 कक्षा अवलोकन) | |
| 8. | VER सर्वे व समुदाय से संपर्क | |
| 9. | सी.सी.ई. आधारित छात्रों का मूल्यांकन तथा पोर्टफोलियो का निर्माण करना | |
| 10. | संस्थान पर्यवेक्षक (सुपरवाईजर) द्वारा इंटर्नशिप कार्यक्रम का पर्यवेक्षण करना (कम से कम अंग्रेजी एवं तृतीय भाषा के 5–5 एवं विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, पर्यावरण विज्ञान के क्रमशः 5–3–2 पाठ योजना का पर्यवेक्षण) | |
| 11. | 'दैनंदिनी एवं रिफ्लेक्टिव जर्नल पर चर्चा | |

* छात्राध्यापक प्रत्येक सप्ताह 4 दिवस शाला में इंटर्नशिप के पश्चात डाइट में अपने शिक्षक प्रशिक्षक से चर्चा कर प्राप्त अनुभव पर फीड बैक प्राप्त करेगा, जिसे अगले सप्ताह अपनी पाठ योजना के प्रदर्शन के दौरान रिफलेक्ट कर सकेगा। शाला में अनुभव के कुल 40 कार्यदिवस होना अनिवार्य है।

** पेरेन्ट टीचर मीटिंग *** स्कूल मेनेजमेंट कमेटी **** छात्राध्यापक एक कार्यदिवस में अधिकतम दो पाठों का अध्यापन अभ्यास एवं एक पाठ का कक्षा अवलोकन कर सकते हैं। **** दैनंदिनी प्रतिदिन जबकि रिफलेक्टिव जर्नल के अंतर्गत साप्ताहिक अधिगम समीक्षा लिखना है।

## r'rh; pj.k¼lkLFkku Lrj ij½

| क्रमांक | गतिविधि का नाम |
|---|---|
| 1. | संस्थान में इंटर्नशिप के अनुभवों पर परिचर्चा (समझ का विकास व चुनौतियां) |
| 2. | सहायक सामग्री की प्रदर्शनी एवं मूल्यांकन |
| 3. | रिफलेक्टिव जर्नल व पाठ्य पुस्तक/स्रोत सामग्री के विश्लेषण से प्राप्त परिणामों को छात्र अध्यापकों के पीयर ग्रुप में साझा (शेयरिंग) करना |

## 'kkyk bVuf'ki dk;Øe&f}rh; o"k
## eY;kdu ;kstuk

| क्र. | गतिविधि का नाम | आंतरिक मूल्यांकन | | बाह्य मूल्यांकन | | योग |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | | शाला प्रमुख द्वारा | संस्थान के विषय विशेषज्ञ के द्वारा | मौखिक (वायबा) | प्रत्यक्ष अवलोकन एवं अभिलेख आधारित | |
| 1. | शाला अवलोकन अनुभव पर प्रतिवेदन | 05 | – | – | – | 05 |
| 2. | विद्यालय की गतिविधियों में सहभागिता पर आधारित मूल्यांकन | 05 | – | – | – | 05 |
| 3. | केस स्टडी प्रतिवेदन | – | 05 | – | – | 05 |
| 4. | पाठ्यपुस्तक विश्लेषण( अंग्रेजी/तृतीय भाषा तथा विज्ञान/सा. विज्ञान/पर्यावरण विज्ञान) | – | 05 | – | – | 05 |
| 5. | इकाई योजना निर्माण करना | – | 05 | – | – | 05 |
| 6. | पोर्टफोलियो का मूल्यांकन | 05 | – | – | – | 05 |
| 7. | कक्षा में समावेशिता पर रिपोर्ट | – | 05 | – | – | 05 |
| 8. | दैनंदिनी एवं रिफ्लेक्टिव जर्नल | – | 05 | – | – | 05 |
| 9. | समालोचना पाठ | – | – | – | – | – |
| | अंग्रेजी/तृतीय भाषा–1<br>विज्ञान/सा.विज्ञान/पर्यावरण अध्ययन–1 | | 05<br>05 | | | 10 |
| 10. | अध्यापन अभ्यास अवलोकन(संस्थान सुपरवाइजर द्वारा)<br>1. अंग्रेजी एवं तृतीय भाषा–(04–04)<br>2. विज्ञान एवं सा.विज्ञान–(04– 04)<br>3. पर्यावरण अ.ध्ययन–2 | –<br>04<br>04<br>02 | | – | – | 10 |
| 11. | पाठयोजना का निर्माण<br>प्रथम समूह<br>1.अंग्रेजी–10 पाठ योजना | 05 | – | – | – | 05<br>40 |

| | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| | 5 शिक्षण अधिगम सामग्री<br>5 कक्षा अवलोकन सहित<br>2.तृतीय भाषा–5 पाठ योजना शिक्षण अधिगम सामग्रीसहित<br>5 कक्षा अवलोकन सहित<br>द्वितीय समूह<br>1. विज्ञान–10 पाठ योजना<br>5 शिक्षण अधिगम सामग्री<br>5 कक्षा अवलोकन सहित<br>2. सा.विज्ञान–10 पाठ योजना<br>5 शिक्षण अधिगम सामग्री<br>5 कक्षा अवलोकन सहित<br>3. पर्यावरण अध्ययन –5 पाठ योजना शिक्षण अधिगम सामग्रीसहित<br>5 कक्षा अवलोकन सहित | | 10<br>05<br>10<br>10<br>05 | | | |
| 12. | फाइनल पाठ–योजना<br>1. अंग्रेजी / तृतीय भाषा–1<br>2. विज्ञान / सा.विज्ञान / पर्यावरण अध्ययन–1 | – | – | 10<br>10 | 40<br>40 | 50<br>50 |
| | योग | 15 | 85 | 20 | 80 | 200 |

इंटर्नशिप कार्यक्रम में नवाचारी शिक्षण पद्धतियाँ और अधिगम वाली संस्थाओं का भ्रमण भी शामिल है।

इंटनशिप कार्यक्रम के दौरान कक्षा आधारित प्रक्रियाओं पर शोध कार्य छात्राध्यापक द्वारा किया जाना है। छात्राध्यापक पाठ्य योजनाओं के साथ–साथ शाला की विभिन्न अकादमिक एवं प्रशासनिक गतिविधियों में सहभागिता कर अभिलेख संधारित करेंगें। इंटर्नशिप की कुल अवधि 70 दिवस है। छात्राध्यापक प्रत्येक सप्ताह में लगातार 4 दिन शिक्षण कार्य करेंगें एवं इसके पश्चात् संस्थान में जाकर शिक्षक प्रशिक्षक से चर्चा कर प्राप्त अनुभव पर फीड बैक प्राप्त करेंगें तद्नुसार शिक्षण विधियों में परिवर्तन और अधिगम दृष्टि प्राप्त करेंगें। प्रत्येक विषय की न्यूनतम 4 इकाई योजनाओं को अध्यापन अभ्यास में शामिल किया जाएगा प्रत्येक इकाई योजना में पाठ की विषय वस्तु के प्रस्तुतिकरण के साथ–साथ प्रश्नों की तैयारी विशेषकर ज्ञानात्मक, समझ आधारित ज्ञान का सृजन करना, कक्षा में सिखाई गई विषयवस्तु से अर्थ निकालना, बच्चों के अधिगम का आंकलन करना एवं बच्चों को सिखने के लिये प्रोत्साहित करना शामिल है।

शिक्षक प्रशिक्षकों द्वारा छात्राध्यापकों की इंटर्नशिप के दौरान पर्यवेक्षण कार्य किया जाएगा साथ ही साथ शाला को प्रबंधनीय मुद्दों पर सहयोग प्रदान किया जाएगा। छात्राध्यापक को उपयुक्त गतिविधियों का चयन करना आना चाहिए। पाठ योजनाओं का अभिलेख संधारित करना चाहिए। छात्राध्यपकों को अपनी दैनंदिनी में शिक्षण के व्यावहारिक अनुभव तथा सैद्धांतिक शिक्षण पद्धतियों के बीच संबंध के आधार पर चिंतन कर अपने अनुभव को रिफ्लेक्टिव जर्नल के रूप में लिपिबद्ध करना चाहिए।